बस्तर चो हल्बा आदिवासी

लेखक - शिव कुमार पाण्डेय

प्रकाशक - 18 गढ़ हल्बा समाज, गढ़ नारायणपुर

बस्तर चो हल्बा आदिवासी

लेखक - शिव कुमार पाण्डेय

प्रकाशक - 18 गढ़ हल्बा समाज, गढ़ नारायणपुर

किताब	बस्तर चो हल्बा आदिवासी
लिखतो बिता	शिव कुमार पाण्डेय मेनरोड नारायणपुर जिला नारायणपुर (छ.ग.) मो. नं. ९४२५२६०९९७
किताब छापतो चो सपाय हक	लिखतो बिता आरू छपातो लोग चो
पहलीदांय कितरो किताब छपली	सन् २०१८ ई. ने १००० प्रति
किताब चो मोल	१०० रू.(सव रूपीया)
छपातो लोग	१८ गढ़ हल्बा समाज गढ़ नरायणपुर
पहली पाना चो छापा	खेम वैष्णव, सरगीपाल पारा, कोण्डागांव
आखरी पाना चो छापा	राकेश आर.सिंह, नारायणपुर, छ.ग.
सजातो लोग आरू छापतो लोग	नोबल कम्प्युटर नरायणपुर (छ.ग.) मो. ९४२५५१८३८५

किताब ने लिखलो गोठ लिखतो बिता चो आपलो विचार आय, ऐचो काजे हुनी जिमेवार आय। किताब चो गोठ के कांहाय बले पूछलो नाहलो छपातो ने डांड होयदे।

चांउर पूरलो मरनहार आजा राम शंकर पाण्डेय, मरनहार बड़े बाबा फरसराम पाण्डेय, मरनहार बाबा सत्य नारायण पाण्डेय, मरनहार काका माता प्रसाद पाण्डेय, मरनहार भाई अश्वनी कुमार पाण्डेय, मरनहार बहिन कुमारी हेमलता पाण्डेय, मरनहार आया यशोदा देवी पाण्डेय, मरनहार मामा गया प्रसाद तिवारी, सपाय चो पांय ने सोंपेसें...........

मचो बाटले दुय टपी

कितरोयदांय असन लागली के ये जीवना बिरथा होते जायेसे काहीं नाजुन करले, तेबेय गोटोक अचरित होली। नरायनपुर ने अठारागढ़ हल्बा समाज चो महा सभा बनाला। गांव चो लोगमन के बले हांक दिला, मके बले नेवताला। इतरो बड़े समाज चो मंजगत खुबे मान दिला, सपाय चो पूरे बलुक बले बलला आरू गोटोक सुरता चिनहा देउन मान करला। घरे ऐउन विचार करले, बस्तर चो इतरो बड़े समाज, खूट--खूट ले जुहलो हल्बा समाज लोग, आधा लोग मके चिंहत बले नाजुन फेर बले इतरो मान दिला के मचो जीवना तरली, मांतर समाज काजे मय काहीं नी करलेसे आरू मान दिला। असन विचार करते रहें के गोटोक किताब समाज बाटले छपालो मिरली "समाज गंगा" हुन किताब काजे लिखतो चो विचार करले। मचो लिखलो के गोटोक साहितकार के दखाले, हुन बलला लिखसीत जाले गोटोक किताब लिख पाछे चो लोग काजे चिनहा होयदे। असन विचार करून किताब लिखले, जे तुमचो हात ने आसे।

इतिहास सकत बितामन चो होयसे आरू बस्तर चो इतिहास राजामन चो काजे लिखलो आसे, रयत काजे काहीं बले लिखलो नीहाय। बस्तर ने हल्बा समाज बले खुबे बड़े समाज आय आरू हुनचो जीवना चो गड़न के दखलेक बले लागेसे के ये लोग चो जीवना आरू दूसर आदिवासी मन चो जीवना ने फरक आसे। आदिवासी होतो ने बले गुनी लोग आत, ये लोग राजा संगे बले रहोत, समाज संगे बले रहोत, गांयता, सिरहा, बइद, पंजियार सपाय गुन ऐ लोगमन चो समाज ने आसे। गरब करतो लाइक सपाय गोठ हल्बा समाज ने आसे मांतर इतिहास नीहाय। इतिहास खोजुक निकरले ते सांगतो लोग नी रहोत, किताब ने खोजले मांतर असन कोनी किताब नी मिरली, जेमे हल्बा समाज काजे लिखलो रहे। तेबे इथा--उथा ले कोरजुक मुरियाले आरू सपाय के जुहाउन तुमचो हात ने किताब रूप ने दिलेसे।

ए किताब हल्बा समाज काजे लिखतो होली, तेचोय काजे हल्बी ने लिखले से, कायकाजे के हल्बी भासा जीवत रहो । हल्बी ने आधा टपी नी होय, मांतर मंय हल्बा ने आरू बस्तर ने आधा टपी लिखले, कायकाजे के मचो ले पूरे चो साहितकार मन हल्बी के हलबा आरू बस्तर बसतर नी लिखलासोत। मचोय नाहीं हल्बा समाज चो सपाय लोगमन चो बले विचार रहे के असन गोटोक किताब होतो आय जेमे समाज चो गोठ लिखलो रहो, नाहलेक पाछे चो पीढ़ी आपलो लोग चो करनी के कसन सुरता राखेदे। आपलो पीढ़ी के सांगतो काजे काहीं तो लिखलो होतो आय, असन विचारून समाज चो लोगमन बले मचो साहा होला। हीरासिंह देहारी, आरू घनश्याम पात्र मके समाज बाटले छपालो किताब मन पढ़ुकलाय दिला। समाज चो मुखिया भोला राम बघेल, शंभुनाथ देहारी, अमरसिंह पवार, इंद्रजीत बघेल, कन्हैया मांझी, बले खुबे साहा होला आरू अठारागढ़ हल्बा समाज चो गढ़ नरायनपुर किताब के उजागरी करला। मके बाट देखाउ बस्तर चो गुनी साहितकार हरिहर वैष्णव आरू रूद्र नारायण पानीग्राही के बले सरन लागेसे। ऐ लोग संगे सपाय समाज के सरन लागेसे, सपाय चो जात के टेंडलेसे तेबले बले तेमन रीस नी होला, मचो जीवना के सुफल करला। सपाय के सरन–सरन.........

शिव कुमार पाण्डेय

विषय वस्तु

1. बस्तर चो हल्बा आदिवासी
2. हल्बा जात चो उपजन
3. बस्तर ने हल्बा जात चो इतिहास
4. बस्तर ने हल्बा राजामन चो राज
5. बस्तर इतिहास ने हल्बा आदिवासी
6. हल्बा जात चो बाना आरू चिनहा
7. हल्बा आदिवासीमन चो बरग
8. हल्बा जात चो लोग
9. हल्बा समाज चो जीवना
10. हल्बा लोग चो जनम रूसुम
11. माहला (सगाई)
12. हल्बा समाज ने बिहा
13. हल्बा समाज ने मरलो पाछे रूसुम
14. हल्बा समाज चो तीज–तिहार
15. हल्बा समाज चो हल्बी भासा आरू साहित

बस्तर चो हल्बा आदिवासी

छत्तीसगढ़ राज चो बुड़ती भाग के बस्तर राज बलसोत। एके कंयकर आरू बस्तर राज के मिसाउन बनालो रहे। आमचो बस्तर गोटोकदांय केरल राज ले बले बड़े जिला रहे, ऐबे एचो सात ठन जिला बनावलो आसे आरू सपाय जिला के बस्तर संभाग बलसोत। रान, नंदी, डोंगरी आरू आदिवासी जीवना काजे एचो नाव संवसार भर ने आसे। एके दखुकलाय संवसार भर ले मनुखमन ऐसोत। ऐचो इतिहास खुबे जुना आय। बालमिकी चो संसकिरीत रामायण ने त्रेता जुग ले ऐचो गोठ लिखलो आसें राम भगवान चो जुग ने ऐके दंडकारन बलते रहोत। बस्तर राज पूरे ले खुबे समरथ रली। ऐचो राजा इक्ष्वांकु रघुबंस चो राजा रहोत, हुन इथा चो खुबे गुनी महातमा सुकराचार ले मित बांधुन राज करतो काजे ऐ राज के आपलो बेटा दंड के दिला। राजा दंड नगंत राज करते रहोत। गोटोक दिन हुन मुनि महातमा ले भेट करूक हुनचो आसरम गेला। मुनि आसरम ने नी रहोत, उथा हुनचो भेट मुनि चो बेटी अरजा संग होली। राजा हुनचो रूप के दखुन मोहालो आरू बिहा करतो काजे बललो मुनि चो बेटी नाहीं बलली, तेबे राजा हुनचो संगे जबरबानी करलो। मुनि इलोके बेटी, बाप के राजा चो करनी के सांगली। मुनि खुबे रीस होला आरू राजा के सराप दिला, " हे राजा दंड जितरो तुचो राज चो संद आसे सपाय रान होवो" हुन दिन ले बस्तर राज रान उलटली आरू ऐचो नाव होली दंडकारन। महाभारत जुग ने ऐचो नाव कांतार, गुप्तकाल ने महाकानतार नल आरू नाग काल ने एके चकरकोट आरू चालुक्यबस काल ने बस्तर नाव होली। आजी बले बस्तर नाव धरसोत।

बस्तर संभाग ने आदिवासी जात चो लोग आगर आसोत, कितरोय बरन चो आदिवासी इथा रसोत। गोंड जात चो मुरिया, माड़िया, दंडामी माड़िया, अबूझमाड़िया, राजा मुरिया, घोटुल मुरिया, दोरला, परजा, धुरवा, गदबा, मुंडा, हल्बा आरू भतरा। बस्तर ने पुरखोती दांय ले जीवना जीवसोत। बस्तर चो आदिवासी समाज के नाव काजे फरक करलासोत मांतर ऐ सपा चो जीवना जीवतो गढ़न गोटकी आय। खावतो–पीवतो,

रीत–रूसुम, देव–धामी बले गोटकी आसे। इतरी फरक ले बोली–भासा बले गोटकी असन बलसोत। सपाय आपलो जात चो बोली बलसोत मांतर गोटोक जात चो बोली बललो ने दूसर जात चो लोग समझुन जासोत। गोठियातो गढ़न ने फरक होयसे मांतर सपाय समझसोत। बस्तर चो आदिवासी मन ने खावतो–पीवतो होयसे मांतर बेटी लेतो–देतो नी होये, सपाय आपलो–आपलो बरग ने बेटी लेतो–देतो करसोत। बस्तर चो आदिवासी लोगमन ने कितरोय फरक हो मांतर इथाय सपाय मिसुन आपलो–आपलो रीत–रूसुम के मानुन हरिक उदिम जीवना जीवसोत। एई गोठ बस्तर के सुंदर बनायेसे।

बस्तर चो चारो खुट ने हल्बा आरू मुरिया आदिवासीमन बसलासोत। ऐ लोग चो जीवना आरू रीत–रूसुम सपाय गोटकी होयसे, दुनो जात चो आदिवासी मन आपलो–आपलो जात ने रोटी–बेटी चो नाता बनावसोत। असन लोगमन चो लागुन गुलाय बस्तर गोटकी सोर सुतुर ने आसे। बस्तर चो आदिवासी मन चो मंजगत रोटी–बेटी चो नाता नी होये मांतर हुनमन चो जीवना जीवतो गोटकी गढ़न होयसे। बस्तर ने मुरिया आदिवासी गनती ने हल्बा मन ले आगर आसोत। हल्बा आदिवासी जे ठान ने बले आसोत कुढ़ा–कुढ़ा आसोत, ऐचोय काजे लागेसे के ऐमन चो गनती आगर आसे। बस्तर चो आदिवासी समाज ने हल्बा जात चो लोग के गुनी लोग मानसोत, ऐ मन चो जीवना के दखुन बले लागेसे के दूसर आदिवासी समाज आरू ऐमन चो जात ने फरक आसे, मांतर ये लोगमन बले इथा चो आदिवासी असने तिहार मानसोत, देव–धामी मानसोत, आरू सकल करम करसोत, रान चो उपज सकलुन, बिकुन आरू खेती–बाड़ी करून आपलो जीवना के दूसर आदिवासी समाज असन जीवसोत। हल्बा आदिवासी समाज बस्तर ने दूसर आदिवासी समाज संग पुरखतीदांय ले मिसुन आपलो जीवना जीवसोत आरू हरिक उदिम ले रसोत।

आदिवासी हल्बा समाज बले दूसर आदिवासी समाज चो लोगमन असन बस्तर चो मूर ने आपन के मानेसे। आदिवासी मन के बिदवान लोगमन माटी चो बेटा आत बलसोत, हुसने हल्बा जात चो लोग बले बस्तर माटी चो मूर ले आसू असन मानसोत। हल्बा जात चो बले बस्तर माटी चिंहारी आय। हल्बा जात चो लोग बले आपन के बस्तर चो "जड़काटी, जड़माटी" मानसोत। ऐचा माने आय के जसन ये माटी चो मूर ने जड़ बसली से हुसने आमी

हल्बा जात चो लोग बले ये माटी चो मूर ने आसू। सांगतो चो माने आय के हल्बा लोग बले बस्तर ने उड़ी–पीढ़ी ले बसलासोत। बस्तर माटी चो पुजारी आत, माटी चो पूजा करतो चो हक पुरखती दांय ले ये लोगमन के मिरलीसे। हल्बा बललो ने बस्तर चो लोग आत असन मानसोत मांतर हल्बा आदिवासी समाज चो लोग बस्तर ले बाहिर बले बसलासोत। छत्तीसगढ़ चा रायपुर आरू दुर्ग जिला ने, मध्यप्रदेश चो बालाघाट ने महाराष्ट्र चो गढ़चिरोली जिला ने ओडिसा चो जयपुर, कालाहांडी आरू कोरापुट जिला ने हल्बा जात चो लोग बसलासोत। बस्तर ने बले गढ़ बांसला, पखांजुर, मरोड़ा, अंतागढ़, परलकोट, परतापुर, कोयलीबेड़ा, आमाबेडा, धनोरा, कोलर, नरायनपुर, छोटेडोंगर, बड़ेडोंगर, केसकाल, कांकेर, कोंडागाँव, मरदापाल, लोहंडीगुड़ा, बारसूर, बंड़ाजी, भयरमगढ़, बीजापुर, जयतगिरी, छिंदगढ़,माड़पाल, आरू सिहावा, विरंदानवागढ़ ने बसलासोत। हल्बा जात चो लोग बस्तर चो खुट–खुट ने आपलो जीवना जीवसोत।

हल्बा समाज चो लोगमन छत्तीसगढ़ चो रतनपुर राज ने बले आसोत, सांगतो गोठ आय के हल्बामन चो गुन के सुनुन रतनपुर चो राजा बस्तर चो राजा ले ये लोग मन के मांगुन निलो, हुदलदांय ले हल्बा समाज चो लोग रतनपुर ने बले बसलासोत। रतनपुर चो राजा बले ये लोगमन के बड़े–बड़े ओहदा ने राखलो। असने गोटोक सांगतो गोठ आय के कोनतो राजा चो बायसा (बिरोध) ने अबूझमाड़ चो लोगमन थाड़े होला। कितरोय जतन करून राजा थाकलो, फेर बले हुन अबूझमाड़िया मन के मनाउक नी सकलो, थाकलो पाछे हुन ओड़ियान चो समबलपुरिया राजा ले, राज ने इलो विपति काजे गुहार करलो। ओड़ियान चो राजा आपलो भरोस चो लोगमन चो फउद के पठावलो। ये फउद ने हल्बा जात चो लोगमन रहोत, ये गोठ के सुनलेक लागेसे के ओड़ियान चो राजा बले हल्बा समाज चो लोगमन उपरे खुबे भरोसा करते रहे। हल्बा फउद एउन अबूझमाड़ चो लोग मन संग लड़ला मांतर जितुक नी सकला, फेर हुनमन विचार करून कपट करला आरू अबूझमाड़िया मन चो बायसा (बिरोध) के नसाला। ऐ गोठ के सागतो चो माने आय के हल्बा जात चो लोग खुबे गुनी लोग आत, जे बेरा दखुन आपलो उवाट ले बुता करसोत आरू काहीं बले विपति एवो हुनचो काट करसोत।

हल्बा जात चो लोग के बुलतो लोग माना जायसे, ये लोग के आपलो लाइक ठान नी मिरलेक एमन गोटोक ठान ने नी थेबत। ठान मिरली बलले आपलो सपाय लोग–लगवार के बलाउन हुन ठाने बसावसोत। एचोय काजे जे ठाने बले हल्बा जात चो लोग अबगो एई लोग बसलासोत। असने गुन काजे राजा बले हल्बा लोग चो उपरे भरोसा करून कोनी बाट बले पठावते रलो, ये लोगमन बले जावोत आरू आपलो नाता–गोता चो लोगमन के बलाउन बसावोत। एचोय काजे हल्बा जात चो लोग बस्तर आरू दूसर राज ने बसलासोत। ए लोग मसागती लोग मन आत मसागत करतो ने पाछे नी गुचत, एई काजे ये लोग बस्तर चो अंतेकोनाड़ी ने बले बसलासोत। जे बाट पांयडगर बले नीहाय हुन गांव ने बले हल्बा जात चो लोग मन चो गांव बसलीसे। नंदी धड़ी, उपज देतो भुंई लग हल्बा लोगमन चो बसतो ठान आय, कोनी बले हल्बा गांव असने ठान ने आसे। गांवमन के बले दखले लोगेसे के इथा चो गांवकारी लोग दूसर लोग ले निको आसत। घर–दुआर छुकछुका लीपलो–बरनलो रहेसे।

—00—

हल्बा जात चो उपजन

बस्तर ने हल्बा आदिवासी समाज ले दूसर आदिवासी समाज चो लोग आपलो उपजन के माटी संग मानसोत, कोयतोर आदिवासी मन मानसोत के जेब जलारंग पानी रहे जेके "बुम बूड़ता" बलुआत, तेब तुमा भीतरे भाई–बहिन बोहते जावोत। आपलो बाबा के गोहारत ते तुमा ने लेहरा भरी होउन हुंकारू पाड़े, भाई–बहिन विचार करत बाहिर हुनमन चो बुबा आसे। असने बोहते तुमा लदलदा (गोलगोला) माटी ने ठेची होउन टूटली, बाहिर निकरून दुनोंझन दखला बुबा नी रहे मांतर नदी, डोंगरी, रान रहे, हुनमन एई मन के आपलो सपाय मानला। असन आदिवासी जात चो उपजन होली। असने कोया आदिवासी जात चो पुरखामन तुमा ने रहोत आरू तेमन चो दसझन पीला चो पीलामन ले आदिवासी समाज चो उपजन होली। हल्बा जात चो उपजन चो बिदवानमन कितरोय कहनी सांगसोत। सपाय चो कहनी ने फरक होयसे मांतर हल्बा जात चो उपजन कसन होली, ये सांगतो ने जानुक होयसे। बस्तर चो खुबे गुनी लोग लाला जगदलपुरी हल्बा जात चो उपजन चो गोटोक कहनी सांगलासोत। कहनी असन आय......

गोटोक ओडिया राजा रलो, पूरे चो राजा मन आपलो रयत के पोसतो काजे खेती बाड़ी करून खावतो पूरती उपजावत। राजा चो बेड़ा ने चिड़ई–चिरगुंन आरू जियाद चो राखा काजे मंजगत बेड़ामन ने पुतरा बनालो रहे। पुतरामन के बांवस में ओरालो रहे। लोगमन चो बेड़ा ने राखा नी रलोने बले असन लागे के राखा करतो लोगमन आसत। लेहरा बोहले ते पुतरामन हालूआत, देखले काय सुदंर लागु आय। ओड़िया राजा चो बेड़ा बाट ले संवसार के बुलतो काजे महादेव–पारबती निकरला। पारबती हुन पुतरामन के दखुन खुबे हरिक होली, पुतरामन बले लेहरा बोहलेक हालूआत, असन लागुआय की पुतरामन ने जीव आसे आरू हालसत।

पारबती, महादेव के हुन पुतरामन के दखाउन बलली "दखा भगवान हुन पुतरामन कितरो निको लागसत, ऐमन ने जीव रती जाले कितरो निको लागती" महादेव बले पुतरामन के दखुन हांसला आरू बलला "तुमी बलासित जाले ऐ पुतरामन ने जीव पाडुन दंयसे" पारबती चो जीव पाडुन देहास बलतो के हुनमन ने जीव पाडुन दिला। पुतरामन दुय झन मनुख आरू दुय ठन बायले बनला। राजा चो बेड़ा ने रहोत तेचो काजे हुनमन राजा लग गेला। नवा लोगमन के दखुन राजा पूछलो "तुमी कोन लोग आहास"? हुनमन राजा के सपाय कहनी के सांगला के कसन हुनमन के महादेव भगवान पुतरा ने जीव डारून मनुख बनावला, राजा अचरित होलो आरू मने विचार करला काय भगवान मचो बेड़ा मन चो पूतरा ने सते जीव पाड़ला, तेबे सत जानुकलाय राजा फेर पूछलो "तुमी काय जात चो लोग आहास"?तेमन सांगुकलाय नी सकला। कायकाज के जात काय होयसे तेमन नी जानते रला। राजा बललो "जाहा आरू महादेव भगवान के पूछुन ऐहा"। राजा चो विचार रहे, भगवान बनालो होले ये लोग के जात सांगदे नाहलेक ठगतो बिता होदे। हुनमन पराउन बेड़ा ने गेला आरू महादेव--पारबती के पांय--पट्टा पड़ला आरू पूछला "भगवान आमचो काय जात आय"? महादेव भगवान तेमन के सांगला तुमी सपाय राजा चो बेड़ा ने पुतरा बनु रलास, लेहरा संग--संग हालते रलास, तुमके दखुन पारबती हरिक होली आरू जीव पाडुक बलली, मचो जीव पाड़लो ने तुमी मनुख होलास, जाहा आजी ले तुमचो जात हलिबा टा होयदे"। भतरी बोली ने हालतो के हलिबा टा बलुआत। हलिबा, पाछे हल्बा बनली। असन होली हल्बा जात चो उपजन। ऐ कहनी ने हल्बा जात चो उपजन ओड़िया राज ने होलीसे असन जान पडेसे मांतर ये कहनी आय। कायकाजे के हलिबा टा भतरी चो टपी आय आरू भतरी हल्बी ओड़िया संगे मिसुन बनली से। हल्बी पहिली इली आरू भतरी पाछे तेबे कसन हल्बा जात भतरी चा टपी ने बनली। ऐचा काजे ए कहनी आय।

गोटोक आरू कहनी ने हल्बा जात चो उपजन महाभारत दांय ले जोड़ी होयसे। महाभारत ने गोटोक कहनी ने किरिसना भगवान रूकमनी के चोरून नेसत। रूकमनी चो भाई आपलो फउद संग तेमन के छेकुक पाछे जायसे। किरिसना भगवान चो भाई बलराम रसोत ते खुबे सकत बिता आत, हुन रूकमनी चो भाई चो फउद संग लड़सोत, बलराम चो लड़तो बिती औजार हल आरू मूसर आय, रूकमनी चो भाई चो फउद दखुन अचरित होसत, सपाय फउद हल--मूसर के अपलो बाना बनावसोत, ते मन चो गोठ हल--बाहना पाछे नानी होउन हल्बा बनली। हल्बीन बायलेमन बले बाहना मूसर के आपलो चिनहारी बनादला आरू बाहना मूसर

ने चिवड़ा कुटुन बिकतो बुता बले करला। जितरो कहनी हल्बा जात चो उपजन काजे सांगसोत सपाय कहनी ने भरोस होयसे। सपाय कहनी हल्बा जात चो गुन ले मिसुन जायसे। ऐचोय संग गोटोक कहनी आरू बलसत, सांगतो गोठ आय के बलराम हल के किंजरावलो, हल चो खाले लोग उपजला आरू फउद संग लड़ला। हल ले उपजलो लोग के हल्बा बलला। ये सपाय कहनी हल्बा जात चो उपजन संग जोड़ी होयसे। गोटोक गियानी मनुख रेवरेंड जी. के गिल्डर बलसोत के हल्बा टपी कन्नड़ भासा चो "हल्बारू" ले इलिसे, ऐचो मायने होयसे प्राचीन माने पुरखतीदांय ले, ये गोठ बले नंगत लागेसे। असने हल्बा जात चो उपजन काजे पंडा बैजनाथ, डा. हीरालाल शुक्ल आरू अंग्रेज विदवान रसेल हलवाहक के हल्बा बलला असन बलसत। हल्बा जात चो लोग खेती करूआत, नांगर फांदुन खेती करतोके हिंदी ने हल चलातो बिता बलसोत आरू नांगर जोतती लोग के हलवाहक बलला, जे पाछे नानी रूप होउन हल्बा होली

हल्बा जात चो कितरोय कहनी इतिहास लिखतो लोग, साहित लिखतो लोग, आरू विद्वान लोग सांगसोत मांतर कहनी, कहनी होयसे, तेमे भरोस करूक नी होये, कायकाज के ये सपाय सुनलो गोठमन आत जे पूरे चो विद्वानमन लिखलासोत, तेके पाछे चो लोगमन हुसने लिखसोत आरू पढ़सोत। लाला जगदलपुरी कहांय चो सुनलो गोठ के लिखलासोत ये गोटोक कहनी आय। पुरान ने बले बलराम चो हल, मूसर ले कोनी जात उपजला असन लिखलो नीहाय। सृष्टि पुराण ने बले हल्बा जात चो उपजन होलो चो लिखा नीहाय। पुरान ने आदिवासीमन चो उपजन नी लिखलो आसे। असन बले हल के हल्बी ने नांगर बलसोत, तेब हल ले हल्बा होली असन गोठ ने भरोस निहोये। भगवान चो किरता ले हल्बा जात उपजला होथे जाले हुनमन चो बरग आदिवासीमन असन नी होती, हिंदू असन रिसी मुनिमन चो नाव बिती बरग होती, ऐचोय काजे असन गोठमन कहनीचे आय। बस्तर इतिहास लिखतो विद्वान पं. सुंदरलाल त्रिपाठी, डा. हीरालाल शुक्ल आपलो विचार ने सांगला के राजादांय लड़तो लोग लड़ई करत मांतर आधा लोगमन खेती—बाड़ी करते रहोत, हल फांदतो लोग के हल्बा बलला। असन गोठ ने बले भरोस करूक नी होये।

हल्बा जात चो लोगमन आपलो उपजन कसन होली, ये बारे ने हुनमन चो काय विचार आय जानुकलाय नरायनपुर चो समाज चो मुखिया हीरासिंह देहारी ले गोठियातो होली हुन सांगला, उपजन चो कहनी के पतियातो चो कोनी चिनहा–बुंदा नीहांय, कहांय कांहीं सुनलो बले निहांय मांतर आमचो उपजन बस्तर माटी आय, इथा चो आमी पुरखती लोग आंव। ये सपाय गोठ ऐचो काजे होयसे के आमी बस्तर चो दूसर आदिवासीमन असन जीवना नी जींउ मांतर आमचो पूरे चो पुरखामन आदिवासीमन असन जीवना जीवते रहोत। पींदतो–ओड़तो, खावतो–पीवतो, रतो–ठोवतो सपाय गोठ आदिवासी मन असन करोत। अन्नमदेव इलो चो पूरे आमचो हल्बा राजामन इथा कितरोय राज ने राज करोत, हुनमन चो सेवा ने रतो लोगमन बले हल्बा जात चो रहोत। असन कितरोय राज बले रहे जेमे छतरी राजा रहोत, हुनमन के दखुन–सुनुन आमचो जीवतो गढ़न आदिवासी मन ले फरक होली होयदे। आमचो जात नाव राजा चो दिलो ओहदा आत, हल्बी गोठियाउ लोग दूसर चो नाव नी धरोत, असन लोग राजा चो ओहदा नाव संग धरला, असन करते नाव संग जात नाव राजा चो दिलो ओहदा नाव होली। आमचो लोग चो बरग सांप आय, बलसोत के पांच कोड़ी हल्बा ने चार कोड़ी दस लोग चो बरग सांप होयसे। बरग चिनहा आदिवासी मन असन रूख–राई, जियाद, चिड़ई आमचो बले आय।

परधान पाठक अमरसिंह नाग चो बले विचार आय के आमचो उपजन बस्तर माटी आय। पुरखतीदांय ले आमी इथाय आंसु, इथाय ले आमचो पुरखामन ऐबाट, हुनबाट गेला आरू बसला। कितरोयदांय असन बेरा इली के आमचो पुरखा ओड़ियान आरू महारा ट्र बाट गेला आरू फेर बेरा दखुन बस्तर राज ने ऐउन बसला। असने बुलतो पुरखामन चो जीवना ने दूसर लोग चो जीवतो गढ़न मिसली आरू बस्तर चो आदिवासी जीवना ले आमचो जीवना ने फरक होली। खावतो–पीवतो आरू बोली–भासा ने बले ओड़िया आरू मराठी चो टपी मिसली। असने छत्तीसगढ़ चो सिहावा नगरी बाट बले आमचो लोग गेला आरू बेरा दखुन फेर फिरून इला। आमचो लोग बस्तर ले बाहिर चो लोग रता जाले इथा रलो बस्तर चो आदिवासी आमके आपलो मानता?केबेय नी मानता। बस्तर चो मुरिया आदिवासी आमके आपलो मानसोत। जसन आमचो बरग सांप आय आरू बरग चिंहा पुवांर चिड़ई आय, ऐचोय काजे आमचो खुबे लोग जात नाव पवार लिखसोत मांतर मुरिया आदिवासी आमके कोर्राम आत बलसोत आरू आमी पुरखतीदायं ले ताड़ोनार चो माटी गांयता आंव। आमचो गेलो बिन

ताड़ोनार चो काहीं देव बुता आरू माटी चो बुता नी होये। बस्तर चो सपाय देव–धामी चो पूजा करतो हक आमचो हल्बा मन लगे आसे आरू बस्तर चो सपाय लोग मान बले देसोत। आमचो लोग देव चो सिरहा बले आत आरू पुजारी बले आत। देव आपलो सिरहा आपने बनायेसे आरू पुजारी गांवकारी लोग बनावसोत। आमचो उपजन बस्तर ले बाहिर होउ रती जाले इथा चो लोग आरू देव–धामी आमके सिरहा, पुजारी बनावता?ऐके विचार करलो ने सपाय कहनी के पतियाउक नी होये ।

पं. केदारनाथ ठाकुर आपलो किताब ने हल्बा जात चो लोग के बले मुरिया, माड़िया आदिवासी मन असन "आदि निवासी" आत बलसोत। ऐचो माने होयसे के जसन बस्तर ने मुरिया, माड़िया पुरखतीदांय ले बसलासोत, हुसने इथा हल्बा जात चो लोग के पुरखतीदांय ले बसलासोत असन मानसोत। फेर लिखसोत के ऐ लोग चो जीवतो गढ़न दूसर जात चो लोग ले फरक होयसे। लिपलो–पोतलो धर ने रसोत आरू पींदा–ओड़ा बले छुकछुका रहेसे। दूसर जात चो लोगसंगे नगत गोठियासोत–बतियावसोत। नाता–गोता बले नगत मानसोत, ऐचोय काजे हल्बा लोग के बस्तर ने बड़े भाई बलसोत। ए गोठ के मुरिया, माड़िया बले मानसोत आरू हल्बा लोग के बड़े भाई असन मान देसोत। हल्बा सियान आरू आज चो पढ़लो लोग चो मानतो आय के आमचो आरू मुरियामन चो पुरखा गोटकी आत, देव जातरा ने पूजा देतो ने अलगला। आधा लोग देव ने असन–असन जीव के पूजा देउक मुरियाला, जेके पूरेदांय हल्बा जात चो आदिवासी नी खावोत। एई गोठ आधा भाईमन के नी भावली, हुनमन जातरा ले अलग होला, तेबले गोटके पुरखामन चो पीलामन अलग होला आरू जात बले अलगली। ये गोठ ने लागेसे के हल्बा जात चो लोग आरू गोंड जात चो लोग पुरखतीदांय गोटोक बाप चो पीला आत मांतर ऐबेय अलगलासोत। तीज–तिहार, देव–धामी, के मानतो के दखुन असन गोठ के पतीयाउक होयसे।

ऐबे चो हल्बा लोग के पूछलेक कोनी–कोनी बलसोत के आमचो पुरखामन राजा संग बारंगाल ले ऐउ रहोत मांतर गोटोक हल्बी चो साहितकार सांगसोत के गोटोक–गोटोक परिवार राजा संगे इला होयदे मांतर सपाय नी इलासोत। बस्तर ने हल्बा जात चो लोग पुरखतीदांय ले बसलासोत। राजा संग इलो हल्बा मन के इथा बसलो हल्बामन तेलंगी हल्बा बलला, कायकाज के बारंगल तेलगान ने होयसे उथा ले इलो लोग

के तेलंगी हल्बा बलला। बस्तर चो बीजापुर ने ऐबे बले कितरोय हल्बा परिवार आसे हुनमन आपलो जात तेलगा हल्बा लिखसोत। ये लोग संगे इथा चो हल्बा जात चो लोग रोटी–बेटी, लेतो–देतो नी करोत। ये लोग बले हल्बा जात चो रीति–रूसुम के नी मानोत। तेलगी हल्बामन के आंध्र प्रदेश ने आदिवासी मानसोत मांतर बस्तर ने बसलो तेलगी हल्बामन के आदिवासी नी मानोत। ये लोग के सरकार बाट ले मिरतो छूट नी मिरे। राजा संगे हल्बा जात चो लोग इला होयदे कोनी के हल्बा मन आपलो संग मिसाला होयदे मांतर कोनी–कोनी के तेलगी हल्बा बलला। ये गोठ सांगतो ने जानुक होयसे।

हल्बा जात चो उपजन चो कितरोय बले कहनी गढ़लो आसे मांतर बस्तर चो हल्बा जात आपलो चिनहारी बनालो से। हल्बा मन के बुलतो लोग माना जायसे, ए लोग जे बाट बले गेला उथा आपलो सपाय लोग–लगवार के नेउन बसावला। ए लोग मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िसा, महारा ट्र ने बसलासोत। जे बाटे बले गेला हुन बाट चो रीत–रूसुम, खावतो–पीवतो, पींदतो–ओड़तो सपाय के धरला। मध्यप्रदेश चो बालाघाट चो हलबामन ने महाराष्ट्र आरू बुंदेलखंड चो छापा दखा देयसे, महाराष्ट्र बितामन मराठी जीवना के आपलो जीवना बनाला। छत्तीसगढ़ ने रायपुर, दुर्ग, सिहावा, बिंदरानवागढ़ चो हल्बा चो बोली–भासा सपाय छत्तीसगढ़ चो असन होयसे, ओड़ियान चो लोग उथा चो संसकिरती के धरला मांतर हल्बा जे ठान ने बले बसलासोत हुनमन चो हल्बा चिनहारी परछट दखा देयसे। ऐचाय काजे आदिवासी समाज ने दूसर आदिवासी आरू हल्बा जात चो आदिवासी मन ने फरक दखा देयसे। रतो–जीवतो, खावतो–पीवतो, पींदतो–ओड़तो, बोली–भासा, सिंगार, गीत, बाजा ने फरक होलो ने बले समाज चो रीत–रूसुम गोटकी सुतुर ने दखा देयसे। हल्बा जात चो लोग कहांय चो रहोत दखले जानुक होयसे के ये लोग बस्तर हल्बा जात चो आदिवासी मन आत।

आदिवासी हल्बा समाज बस्तर आदिवासी असन देव संसकिरती के आरू हिंदूमन असन हुनमन चो संसकिरती के मानतो लोग आत। एई काजे बस्तर ने दूसर जात चो लोग कोष्टा, मरार, कुमहार, कलार असन हल्बा समाज चो लोग बले जीवना जीवसोत। असन बलतो आय के छत्तीसगढ़ चो हल्बा मन मास–मंद के नी खावोत। ए लोग दुरगा माय के मानसत, आपलो सकल जीवना के माता दंतेसरी के सोपुन दिलासत। बस्तर चो हल्बा समाज

माता दंतेसरी के आपलो कुलदेवी मानसोत। असन मानतो काजे सपाय लोग मावली माता के मानतो लोग आत मांतर राजा मावली माता के दंतेवाड़ा ने दंतेसरी बलुन मंडावलो तेब ले सपाय मावली माता के दंतेसरी बलुन पूजा करसोत। हल्बा जात चो लोग आपलो–आपलो घर ने देवनी डोकरी, साडेकरीन, पीकड़ीबुंदीन, कोकोड़ी करीन (राजटेका) के कुलदेवी मानसोत मांतर दूसर लोग के सांगतो काजे आपलो कुल देवी दंतेसरी के सांगसोत। हल्बा लोग चो कुलदेवी मन मावली माय चो सात बेटी आत, जेमन के ऐ लोग आपलो कुल चो राखा करतो देवी मानसत है।

हल्बा जात चो लोग बस्तर ने इथा चो लोग माने गोंड जात चो लोग असन जीवसोत। गोंड जात चो मुरिया आदिवासी असन तीज–तिहार के मानसोत आरू हिंदूमन असन पुरान ने बखानलो तिहार के बले मानसोत। बस्तर ने जे ठाने अबगो हल्बा समाज चो लोग बसलासोत हुन ठाने मुरिया आदिवासी नी बसला आरू जे ठाने अबगो मुरिया आदिवासी बसलासत, हुन ठाने हल्बा आदिवासी मन नी बसला, ऐचोय काजे ऐमन चो रीत–रूसुम ने ए फरक दखा दयसे। मुरिया आदिवासी मन बस्तर चो देव–धामी के मानसत, असन नोहाय के हल्बा आदिवासी बस्तर चो देव–धामी के नी मानत, सपाय के मानसत बले आरू पूजा बले करसोत। ऐचोय काजे बस्तर चो गांवमन ने गोटोक बाटे गोंड जात चो आरू दूसर गांव ने हल्बा आदिवासी मन बसलासोत। बस्तर ने असन गांवमन बले आसोत जे ठान आदिवासी संग दूसर जात चो लोगमन बले बसलासोत। गांवमन ने कितरोय फरक होवो मांतर इथा चो लोगमन बस्तर चो रीत–रूसुम मानसोत। मुरिया जात संग हल्बा आरू दूसर जात चो लोग पुरखतीदांय ले बसलासोत आरू आदिवासी समाज संग हुनमन असन जीवना जीवसोत। आदिवासी हल्बा समाज इथा केब ले बसलासोत, ऐचो नगत गोठ सांगुक नी होये, पूरे चो विदवान गुनी लोगमन जितरो सांगलासत उतरो ने जानुक नी होये।

—00—

बस्तार ने हल्बा समाज चो इतिहास

आजी काली चो लोग के पूछलेक हुनमन आपलो पुरखा ले सुनलो गोठ के सांगसोत के आमचो पुरखामन राजा संग ऐउ रहोत। सपाय लोग असने बलसोत मांतर कोनी सते नी सांगत। राजा ओरंगाल आजी चो वारंगल ले इलो आय तेब काय हल्बा लोग चो पुरखामन ओरंगाल ले ऐउ रहोत? असन होती ते हुनमन चो नाता गोता चो लोगमन ओरंगाल ने आजे बले रता मांतर उथा हल्बा जात चो सगा लोग नी रहोत, तेचोय काजे लागेसे के हल्बा समाज चो पुरखामन राजा संग ऐउ रहोत मांतर हुनमन ओरंगाल ले नी इलासोत। मोटोक विदवान राय बहादुर पंडा बैजनाथ बले लिखलासोत के हल्बा लोगमन राजा संग ओरंगाल ले नी इला। राजा अन्नमदेव ओरंगाल ले इला मांतर हल्बा जात चो लोग हुनचो फउद ने केबे आरु कोन लगे मिसला ऐचो बारे ने काहीं लिखलो नीहाय। लाला जगदलपुरी बस्तर इतिहास ने लिखलो के सांगसोत के अन्नमदेव चो पुरखामन पाडववंशी रहोत आरु सपाय जानुसे के हुनमन हस्तीनापुर ऐबचो दिल्ली ने राज करते रहोत। इथा ले हुनमन मथुरा के जितला आरु राज करला। मथुरा ने राज करु-करु ओड़ियान चो जयपुर राज के जितला आरु उथा राज करला, फेर ओरंगाल ऐब चो वारंगल ने जाउन सपाय बसला। बलसोत के हल्बा मन जयपुर ले राजा चो फउद ने इला। ये गोठ के इतरी पतीआउक होयसे कामकाज के हल्बा लोग बस्तर ले ओड़यान बाटे गेलो आत उथा ले राजा चो फउद ने मिसला होयदे।

हल्बा समाज चो मोटोक गियान गरनहार जयराम पात्र आपलो किताब 'देव ओक्त बड़े डोंगर' ने लिखलासोत के हल्बा ओड़िसा ले इला। हुनमन लिखला के हल्बामन चो बस्तर ऐतो सात-आठ पीढ़ी होलिसे। ऐके पढलेक लागेसे के दादा जयराम पात्र आपलो पुरखा चो ऐतो के सांगसोत। पूरे सांगसोत के हल्बामन ओड़ियान चो राजा संग ऐसन इथा चो हल्बा राजा मन के लड़ई ने हराला आरु इथा आपलो राज बसाला। ऐचो माने आय के हल्बा बस्तर पूरे चक्रकोट ने पूरे ले रहोत आरु राज बले करते रहोत। जयराम पात्र लिखसोत बस्तर राजा प्रतापदेव के आमचो पुरखामन मदद करला। राजा हरिक होउन माड़ चो 190 गांव के आमचो जिमीदारी ने मिसाउन दिलो। राजा भैरमदेव दांय आमचो जिमीदारी के नगाला। जिमीदारी जालो ने आमचो पुरखा पांच भाई आपलो जींवना काजे ए बाट हुन बाट जाउन बसला। एईदांय गोटोक भाई झाड़ा फाफड़ा जाउन बसलो। महाराष्ट्र ले निकरलो पुस्तक

"हल्बा दरपन" ने लिखलो आसे के आमचो पुरखमन बड़ेडोंगर ले ऐउ रहोत। असन गोठ के पतियाउक भायसे, कायकाजे के सपाय विदवान आरू समाज चो सियान चो गोठ मिरेसे। आमी बलुक सकुंसे के पातर लोग चो पुरखमन ओड़ियान ले इलासोत। ये सपाय नंगत आय मांतर लोग सांगसोत के आमचो पुरखा राजा संग इला, ये गोठ बले सते होयदे कायकाज के हल्बा लोग राजा चो फउद संग इला होयदे आरू इथा ऐउन पूरे ले बसलो आपलो सगामन संगे नाता–गोता जोड़ला होयदे आरू राजा संग–संग इथाय बसला। ऐचो माने आय के हल्बा जात चो लोग बस्तर ने पूरे ले आसोत आरू जीवना जीवसोत।

हीरासिंह देहारी आरू अमरसिंह नाग संग गोठियातो दांय सांगला के पात्र मन ओड़ियान चो महापात्र बामन आत, इथा ऐउन आमचो जात चो लेकी संग बिहा करून आमचो रीति–रूसुम के आपलो बनाउन पात्र हल्बा होला। मरनहार जयराम पात्र गोटोक साहितकार के सांगु रहे के हुनमन चो पुरख ओड़ियान चो छतरी रहोत, इथा ऐउन हल्बा होला। असने बाकड़ा मन बले आपलो जात नाव कोनी–कोनी भरद्वाज लिखसोत ऐलोग बले बामन आत हल्बीन संगे बिहा करून बाकड़ा होला। हीरासिंह देहारी बडांजी चो सियान चो सागलो गोठ के सांगसोत के राजा संग हुनचो फउद ने भरद्वाज बामन ऐउ रहोत, हुनके गोटोक समरथ घरो बेटी खुबे भावली, हुन बिहा करतो काजे सियान के पूछलो, हुनबले तियार होलो बिहा करून दिला, फेर विचारला के ऐके काय बलवा, गोटोक सियान बललो के एचो जात ए बाट पड़े नाई, ऐके बाकड़ा नाव धरू, हुन दिन ले बामन बले हल्बा होलो आरू देव ने पूजा देतो बुता करेसे। असने लोग कोनी–कोनी राजा संग हुनचो फउद ने इला होयदे आरू इथा हुदलदांय नंगत जीवना जीवतो हल्बा जात संग नाता–गोता जोड़ुन जीवना जीउक धरला। गोटोक–गोटोक कुटुम राजा संग इला जाले इथा हल्बा लोगमन संगे मिसुन गेला।

बड़ेडोंगर ने पहली राजा कुमडा कोटिया नाव चो होला। कंयकर राज ने मिरलो संवत 1210 चो सीलालेख ने जानुक होयसे के हल्बा जात चो लोग कुमडा कोटिया राजा बनलो चो पाछे सिहावा बाट ले कंयकर बस्तर इला। सीलालेख राजामन चो लिखुन गाढ़लो पखना के बलसोत। मरनहार जयराम पात्र सांगसत के सीलालेख ने लिखलो आसे के हल्बा जात चो लोग खुबे हिमती आरू लड़तो बिता रहोत हुनमन बस्तर राज चो चारो खुट ने

बिगरला। अबूझमाड़ के छांडुन तेमन गुलाय राज ने आपलो गढ़ बनाला आरू हुन गढ़मन ने आपलो जात चो गढ़पति मंडला। बड़ेडोंगर के हल्बा गढ़पतिमन माथ गढ़ मानोत आरू इथाय ले आपलो गढ़ के चलाउ आत। असन गोठ ले जानुक होयसे के हल्बा जात चो लोग चालुक्यवंशी राजा अन्नमदेव चो ऐतो ले पूरे ले चकरकोट ने राज करत। मरनहार जयराम पात्र चो लिखलो "देवलोक बड़ेडोंगर" ले ये जानुक होयसे के राजा चो इलो ले पूरे चकरकोट ने हल्बा राजामन राज करते रहोत। हल्बा राजा मन चो राज नानी–नानी रहे, अन्नमदेव के हुनमन के हरातो काजे आगर मसागत करूक नी लागली होयदे। राज के जितुन भारी उथा चो राजा के आपलो जिमीदार बनाउन हुनमन चो राज के हुनीमन के देउन देवोत, तेचोय काजे कोनी बायसा बले नी करला आरू राजा चो राज बाढ़ते गेली।

हल्बा समाज चो उपजन ओड़िया राजा चो बेड़ा ने होवो के बलराम चो हल ले होवो मांतर ये लोग बस्तर ने पुरखती दाय ले इथा जीवना जीवसोत। अन्नमदेव चो इलो पूरे बस्तर ने जेके चकरकोट बलते रहोत, हुन राज ने खुबे नानी–नानी राजामन राज करते रहोत। ये राजा मन के जनपद राजा बलोत आरू ये राज मन के जनपदराज बलोत। एईदाय ऐबेय चो बस्तर आरू पूरे चो चकरकोट ने नल कालीन आरू नाग कालीन राजा राज करोत। कंयकर रियासत ने हुदलदाय सोमवंशी राजामन चो राज रहे। सपाय आपलो–आपलो राज ने हरिक उदिम राज करते रहोत। राजा मन चो लड़ई–झगड़ा चो गोठ कोनी किताब ने पढ़ुक नी मिरली, तेचोय काजे बलुक होयसे के सपाय बाटे असतिर जीवना रली होयदे। एदांय कितरोय जनपद राज ने हल्बा राजा मन राज करते रहोत। ये गोठ ले जान पड़ेसे के चकरकोट ने नलकाल आरू नागकाल ने बले हल्बा जात चो लोग रहोत। राजा हल्बा जात चो रलो होयदे तेदांय हुनचो रयतमन बले हल्बा जात चो रला होदे।

इतिहासकार मन चो गनती के मानलेक सातवीं सताबदी ले नवमी सताबदी ने नलकाल आरू नवमी सताबदी ले तेरहंवीं सताबदी ने नागकाल चो राजा मनचो राज रली। एई काल ने खुबे जनपद ने हल्बा राजामन चो राज रहे। ऐचो माने होयसे के सातवी सताबदी ले आरू हुनचो पूरे ले हल्बा लोग इथा आपलो जीवना जीवसोत। सतांबदी चो गनती हुनकाल चो मूरत के दखुन करसोत। भगवान चो छाप, हुनचो धरलो औजार, हुनचो सिंगार ले जानसोत के ये मूरत कोन काल चो आय आरू अचरित गोठ आय के ये काल चो मूरतमन हल्बा गांव लगे खनलेक निकरेसे। ऐचा माने आय के हल्बा मन चो गांव मूरत मन चो काल ने बले रली होयदे। राजा संग लड़ई ने राजा आरू फउद नसला, मरला होयदे मांतर रयत जितलो राजा संग हुनचो रयत बनुन फेर जीउक मुरियाला होयदे। असने रयतमन आपलो के पुरखती दांय चो दखातो काजे आज बले आपलो जात चो नाव नाग लिखसोत। जात चो नाव नाग हल्बा, मुरिया, कलार, मरार, राउत, धोबी सपाय लिखसोत। नाग साप बरग होयदे मांतर जेचो नाग साप बरग नी होले बले ये लोग असन जात नाव लिखसोत।

बस्तर ने हल्बा राजा मन चो राज

1. कुमडा कोटिया राजा

खुबे पुरखती दांय चो गोठ आय के हुदलदांय आजी चो बस्तर ने कोनी राजा नी रहोत। तेबे गांवकारी मन आपलो झगड़ा चो निपटातो काजे बरनबानी उवाट करते रहोत। हुदलदांय बड़ेडोंगर ने बले कोनी राजा नी रहोत, तेबे हुता चो गांवकारी लोग पंचायती बसातो काजे गोटोक उवाट करोत। बड़ेडोंगर चो उजा हात बाटे गोटोक डोंगरी आसे, तेके गादीराव बलसोत उथा गोटोक पखना गादी असन आसे, उथा सपाय लोग जुहते रहोत। जुहुन भाती हुन गादी पखना के लिपुन, चाउर पीसान ने बाना भरून, धूप, दीया दखाउन, माता के सुमरून गोटोक लिमउ के राजा मानुन मंडाउन गांव चो पंचायती करोत, एके लिमउ राजा बलसोत। गांव चो झगड़ा निपटाउन बसका सरली बलले लिमउ के चार खापा करून चारो खुंट ने फेकूंन देवोत। आजी बले हुन गादीराव चो पखना ने लिमउ असन पखना राखलो आसे। असन करते खुबे दिन नाहकली, बड़े डोंगर ने कोनी राजा नी रला, तेब गांवकारी लोग विचार करला के गोटोक राजा होतो आय, जांव सपाय मिसुन राजा खोजवां। असन विचारून गोटोक दिन सपाय लोग गांव काजे राजा खोजुक बेर उदिया बाटे 12 परगना चो मांझी, मुखिया आरू सियान लोग ओड़िसा राज बाटे निकरला।

राजा खोजुक जाउ लोगमन के कितरोय दिन होली, हुनमन के राजा होतो लाइक कोनी मनुख दखा नी दिलो। असन कोनी लोगं होवता जाले तेब मिरता, ये लोगमन राजा कसन होयदे, असन बले विचार नी करू रहोत। बुलेते-बुलते थाकुन रला आरू संग नीलो चाउंर-दार बल सरतो पहार होली, तेबे सपाय विचार करला, राजा नी मिरलो आपलो गांव फिरूं। असन विचार करून फिरूक धरला। ओड़यान राज ले निकरून आजी चो जगदलपुर लगे अमरला, इतरोय ने मंझन पहार होली, सपाय के भूक लागते रहे। गोटोक ठान के सुतराउन रांधा-बाटा चो तियारी करूक मुरीयावला। कोनी पानी आनुक गेलो, कोनी आइग बारतो तियारी करालो, दुयझन साग-भाजी खोजुक गेला। हुदलदांय ऐबे चो जगदलपुर बले नी रहे, अबगो रान रहे, खुबे लाफी ले घर नी रहे। साग खोजतो लोग खुबे लाफी गेला, तेब हुनमन के गोटोक घर दखा दिली। घर ने जाउन दखला उथा गोटोक डोकरी रली, हुनचो लगे जाउन, सपाय गोठ के सांगुन साग मांगला। हुनचो बाड़ी ने गोटोक बड़े जानी चो कुमडा फरू रहे, हुनके मांगला आरू हुनचो पयसा दिला। कुमडा के आनुन साग रांधतो चो तियारी करला।

कुमडा के लोगमन चानुक मुरियाला, तेब कुमडा भितरे ले गोहार होली "दखुन काटा मके लागेदे"। काटतो लोग आका--बाका दखला कोनी नी रहोत, फेर चानुक धरला तेब फेर गोहार होली। सपाय अचरित होला, कुमडा लगे एउन अचरित ले कुमडा के दखला, जसने चानुक धरत हुसने गोहार होये। खुबे विचारून गोटोक सियान बलले, "दखुन काटा जे बले होयदे दखवां"। कुमडा के इतरी काटुन, दुय भाग ने चिरला, दखला हुनचो भितरे गोटोक पुतरा असन मनुख पीला रहे। बाहिर ऐउन हुन पीला बाड़ते गेलो आरू मनुख बनलो, सपाय अचरित होला। कुमडा ले निकरलो मनुख बललो "जेके तुमी खोजासहास हुन मंय आय"। सपाय हरिक होला आरू राधुंन--खाउन आपलो गांव फिरला। गांव ने ऐउन सपाय गांवकारी लोग के जुहाला आरू आपलो संग होलो कहनी सपाय के सांगला, हुनमन के राजा कसन मिरलो। गांवकारी लोग विचार करून हुनके राजा बनावला आरू हुनचो नाव होली कुमडाकोटिया राजा, असन बड़ेडोंगर के राजा मिरलो।

सांगतो गोठ आय के राजा के माता दुरगा सपना ने हुकुम दिली के तुय रोजे गोटोक तरई खनावसे आरू राजा रोजे गोटोक तरई खनाउक मुरियालो, असन करते हुन सात आगर सात कोड़ी माने 147 तरई खनावलो जे बसतर ने उजागर होली। गोटोक कोड़ी चो गनती 20 होयसे। कुमडा ले राजा जे ठान ने निकरू रहे, आजी हुन ठान के कुमडा कोट बलसोत आरू दसरहा चो दूसर दिन राजा आपलो कुटुम आरू रयत संग आजी बले हुन ठान ने नवा खायसे। बस्तर दसरहा ने ये ठान खुबे मान पायेसे, बाहिर रैनी ने इथा बस्तर भर चो सपाय मांझी, मुखिया, परगनिया जुहसत आरू आपलो पुरखती दांय चो कहनी के सुरता करसोत। कुमडा कोटिया राजा चो कहनी के ऐचो काजे सांगतो होली के ये राजा के हल्बा राजा आय बलुन गुलाय बाट बिगराला तेचोय काजे सिहावा नगरी बाट ले हल्बा जात चो लोग बस्तर इला। ऐचो माने आय के बस्तर ने राजा आरू हल्बा लोग संगे--संग इला। हुदलदांय सिहाव नगरी बस्तर चो भाग नी रहे मांतर पाछे राजा अन्नमदेव हुनके जितुन आपलो राज ने मिसावलो। आजी बले सिहावा नगरी ने हल्बा आदिवासी लोग बसलासोत आरू आपलो जीवना जीवसोत। दसरहा ने आपलो देव--धामी आनसोत। सिहावा नगरी ने बस्तर असन देवी मन चो गुड़ी बनालो ऐबे बले आसे।

पखना कोटिया राजा : नारायण देव

कुमडा कोटिया राजा जसन कुमडा ले निकरून रहे, हुसने नारायनकोट चो राजा पखना फुटाउन निकरून रहे बलसोत। सांगतो गोठ आय गोटोक हारक आजी चो नारायनपुर असान नी रहे मांतर सपाय गांव ले सात पारा चो बड़े गांव रहे। हुनचो पाछे कुकुर नदी उपरे बमनी गांव बड़े गांव रहे। हुदलदाय खेती--बाड़ी चो जोर नी रहे, रान पाक आरू पारद खेलुन गांवकारी मन जीवना जीवते रहोत। रान--बन खुबे रहे लोग गोहदा--गोहदा पारद खेलुक जाओत। गोटोक हारक पारद खेलुक जाउ लोग गोटोक अचरित दखला। गोटोक मनुख करेल घाटी चो संद ने एकलोय पखना उपरे बसुन रहे आरू पखना दुय भाग ने खापी होउन रहे। दखलो ने असन लागे के हुन मनुख पखना के फुटाउन निकरलोसे आरू उथा बसलोसे। लोगमन आधा डर आरू आधा बल ने हुनचो लगे जाउन दखला, सकत बिता सुंदर जुवान मनुख रहे। जोहार भेट करून सपाय हुनके पूछला "तुमी कोन आहास"। हुन फेर धीर धरून सांगलो "मंय राजा आयं"। इतरोय के सुनुन पारदी लोग गांव ऐउन सपाय गोत के गांवकारी लोगमन के सांगला। सपाय विचार करून हुन मनुख के आनला आरू आपलो राजा बनायला। राजा के आजी चो बमनी गांव लगे चो भूंय राज काजे भावली आरू हुताय हुन आपलो राज बनावलो, राज चो नाव आपलो नाद नारायनदेव चो नाव ने संगालो नारायनकोट।

राजा नारायनदेव चो बारे ने आगर जानुक नी होलो मांतर पुरखती दांय चो सियानमन आपलो लोग के सांगुन रहोत के हुन परलकोटिया राजा चो मावसी बेटा रहे। राजा के परलकोट राज चो कुल देवी सपना ने ऐउन हुकुम देउ रहे के "तुमी परलकोट चो संद ले बाहिर जाहा, हुनी बाट तुमके पीकड़ी बुंदीन आया चो किरता ने तुमचो राज मिरेदे"। राजा माता चो हुकुम के मानुन परलकोट चो बेर उदिया बाट सोनपुर गांव के नाहकुन करेल घाट अमरलो तब हुनके गांवकारी मिरला आरू गांव ने आनुन राजा बनावला। राजा पीकड़ी बुंदीन आया चो परताप ने राज पाउ रहे हुनके आपलो आरू राज चो कुलदेवी बनाला आरू मानुक धरला। नारायनदेव परलकोट राजा घर चो लोग रहे आरू राज करूक जानते रहे। झटके हुन रयत के पोसतो काजे खेती--बाड़ी करूक मुरियावलो, ठान--ठान ने पानी काजे तरई कोड़ावलो, हुनचो राज ने रयत हरिक ले जीवना जीवात। नारायनदेव चो बारे ने लोग सांगुआत के हुन पकठा जुवान रहोत। छुकछुका धोती--कुरता पींधुआत पागा बांधुन कलगी खोचुआत। बाघ संग एकलोय लड़तो बिता आत।

इतिहास ने नारायनदेव राजा चो बारे ने काहीं गोठ नी लिखलो आसे मांतर हुदलदांय चो सियानमन चो गोठ के सुनुन ऐब चो लोग चो पुरखामन सांगते रहोत के नारायन राजा खुबे बुध बिता, रहोत काहीं बले अड़चन इलोने धीर ले विचार करून हुनचो उवाट निकाराते रहोत। लोगमन चो दुख–दंड के बुलुन–बुलुन पूछुआत आरू नगत बनाउआत। परलकोट चो राजा चो भाई बलतोने हुन बले हल्बा जात चो रहोत आरू हुनचो बले राज ने बड़े–बड़े ओहदा ने हल्बा जात चो लोग रहोत। नारायनदेव राजा के मान देउ आरू मया करू हल्बा जात चो लोग परलकोट ले ऐउन आरू नारायनकोट लकसी चो हल्बा जात चो लोग इथा राजा के संग देतो काजे इला। राजा चो राज ने नारायनकोट चो रयतमन हरिक–उदिम जीवना जीवोत। राजा चो राज नागकाल चो गोठ आय, ऐचो मायने होली के नारायनकोट ने नारायनदेव चो राज राजा अन्नमदेव चो इलो पूरे रहे, जे ये गोठ सांगेसे के राजा चो इलो चो पूरे ले इथा माने बस्तर ने हल्बा जात चो लोग रहोत आरू हरिक उदिम ले जीवना जीवोत। ये गोठ के सांगतो चो माने आय के हल्बा जात चो लोग अन्नमदेव राजा संग इला मांतर इथा हल्बा जात चो लोग पूरे ले बसु रहोत।

राजा अन्नमदेव चितरकोट चो आखरी गढ़ चकरकोट के जितुक लाय नारायनकोट बाट इलो। ऐबे चो बारसूर चितरकोट चो सबले बड़े गढ़ रहे। हुदलदांय अन्नमदेव राजा, नारायनकोट के जानते बले नी रलो, कायकाज के इतिहासकार मन हुन दांय चो गोठ के नी लिखलासोत। इतरो बले नी लिखला के राजा नारायनकोट के जितुन महिमा गवाड़ी, धवंड़ई, छोटेडोंगर, ओरछा बाट ले बारसूर माने चितरकोट बाट गेला। बस्तर इतिहास के जानतो गुनी लोग राम कुमार बेहार इतरोय लिखला के अन्नमदेव महिमागवाड़, धवड़ई, छोटेडोंगर, ओरछा बाट ले चितरकोट गेला। असन ये काजे होली होयदे के ये गुनी लोग के हुदलदांय चो गोठ इतिहास ने नी मिरली होयदे मांतर हुदलदांय चो पुरखती सियानमन सांगुआत जेबे राजा अन्नमदेव जानलो के हुनचो हिंडतो बाट ने गोटोक राजा चो राज आसे तेब हुन राजा के खबर पठावलो के मके संग देहास। नारायनदेव खुबे गुनी लोग रहोत हुन जानते रहे के संग नी दिलेक लड़इ होयदे आरू हुनचो हार होयदे, कायकाजे के राजा सपाय के जितुन इथा अमरलोसे, हुनचो लगे बड़े फउद आसे आरू मचो लगे गांवकारी लोग आसोत। असन विचारून नारायनदेव राजा के नाई बललो।

अन्नमदेव बले खुबे गुनी रहे, हुन फेर खबरिया पठालो, एदांय थारी ने सोना–चांदी संग खबरिया गेलो। राजा हुनचो गोठ के असतिर ले सुनलो आरू संग देतो

काजे नहीं बलला। खबरिया जेबे हुनके सोना—चांदी बिती थारी के दिलो तेबे राजा ये विचारून के अन्नमदेव बड़े राजा आय हुन सोना चांदी पठालो से, मचो लगे सोना—चांदी नीहांय बलुन मुठा भर माटी के थारी ने डारून दिलो। रीस होतो के छाड़ुन खबरिया बललो "काय तुमी आपलो राज के आमचो राजा के दिलास" राजा काहीं नी बललो। खबरिया चो गेलो पाछे राजा आपलो लोगमन के काय करतो आय बलुन पूछला, काचोय लगे कोहीं उवाट नी रहे। राजा तेब विचार करलो के राज—पाट छांडुन जाउक पड़ेदे। राजा आपलो कुलदेवी पीकड़ी बुंदीन आया ले गोहार करलो "मंय राज के छांडुन जायसे तुमी बले मके संग देहा"। माता नाई बलली आरू इथाय रतो विचार करली। हुनी राती राजा आपलो पीला मन संगे राज के छांडुन कोनी बाट निकरलो, कोनी नी जानला के राजा कोन बाट गेला आरू नारायनकोट राज अन्नमदेव चो होली। एई बाट ले राजा बारसूर बाट गेला, ये गोठ इतिहास ने लिखलो निहाय मांतर सियानमन सांगलासात।

राजा करनसिंह आरू रानी नारंगी

बड़ेडोंगर असन छोटे डोंगर ने बले हल्बा राजा हुदलदांय राज करते रहोत, हुनदांय, नारायनकोट ने नारायनदेव राजा आरू कुमडाकोटिया राजा बड़ेडोंगर ने राज करते रहोत। ऐबे चो सियानमन ऐ गोठ के नी जानत। बलसोत के आमचो सियानमन आमके नी सांगला के इथा कोनी राजा राज करते रहोत। बस्तर चो इतिहास ने बले असन काहीं गोठ नी लिखलो आसे। छोटेडोंगर मांझी बरग चो हलबा मन चो गढ़ आय। मांझीमन ऐके बसालासोत, असन नोहाय के दूसर बरग चो हल्बा लोग इथा नी रहोत, हुन लोगमन बले आसोत मांतर मांझी बरग चो लोग आगर आसोत। छोटेडोंगर लग आमदई डोंगरी चो खाले गोटोक ठान के ऐबे बले मांझी पदर बलसोत। पूरे चो छोटेडोंगर ने हल्बा जात चो लोग इथाय रहोत। ऐबे बले उथा गोटोक पखना के कोटेन पखना बलसोत। पखना ने बाहना असन खवल आसे, सांगतो लोग सांगसोत के राजादांय चो धान कुटतो पखना आय। गोंड जात चो लोग ऐके गोंडी ने "उसकल कल" बलसोत। मांझी पदर ने दुय ठन रूख बले आसे रूख मन के करन आरू नारंगी नाव संगालासोत। रूखमन ने संतरा असन फर फरेसे, हुनके खावत नाई। करनसिंह आरू नारंगी राजा—रानी चो नाव रहे, हुनमन चो सुरता ने रूखमन के ये नाव दिलासोत। ऐबेय बले बस्तर दसरहा ले ऐउन इथा राजा—रानी चो मान काजे जातरा करसोत।

ऐबे बले सांगतो बिता सांगसोत के छोटेडोंगर ने राजा–रानी रहोत, हुनमन चो चिंहा कोटेन पखना आरू दुय ठन रूख ऐबेय बले आसे। दूसर जानतो लोग बलसोत के राजा इथा लुकुक ऐउ रहे, खिंडीक दिन इथा आपलो रानी संग रलो आरू गेला। दुनों गोठ के विचार करलो ने लागेसे के लुकुकलाय इलो गोठ नी पड़े, कायकाजे के इथा लुकतो काजे इलो ने हुनमन चो सुरता काजे रूखमन चो नाव राजा–रानी चो नाव ने कायकाज होती। ये गोठ के पतियाउक नी होये। छोटेडोंगर ने राजा रहे आरू राज करते रहे, तेबे हुनचो नाव के अमर राखतो काजे रूखमन चो नाव राखलासोत आरू बस्तर राजा चो दसरहा ले फिरून आपलो राजा के मान देतो काजे हुनचो मान काजे जातरा बनावसोत। सपाय गोठ के विचारून बलुक होयसे के छोटेडोंगर ने बले राजा रहोत मांतर हुनचो गोठ के ऐबे जानतो बिता नीहात। छोटेडोंगर ने नलकाल आरू नाग काल चो मूरत मन आसोत, तेमे जानुक होयसे के हुदलदांय ये राज रहे। गोटोक तरई खनतोदाय मूरत मन निकरलीसे। आधा के चोरून निला, टुटलो–फूटलो के गांवकारीमन संगालासोत। आधा गढ़लो मूरतमन बले आसे, सांगतो लोग बलसोत के देवमन चो मूरत गढ़िया "बीसकरमा" मूरतमन के गढ़ते रहे बिहान होलो ने लोगमन चो ऐतो होली, तेब हुसने आधा गढुन बारसूर गेला। ये सपाय गोठ ने जानुक होयसे के नलकाल आरू नागकाल ने हल्बा जात चो लोग आरू इथा हल्बा राजा छोटेडोंगर ने रहोत।

राजादांय चो गोटोक कहनी सांगतो बितामन सांगसोत के छोटेडोंगर राजा चो दरबार ने गोटोक गुनी मनुख रहे, हुनचो नाव मांदगी नाईक रहे। राजा के काहीं बले अड़चन इलेक झट ने उवाट निकराउन देये। हांसी–हांसी ने कितरोय बड़े विपति होवो हुनचो काट करतो के सांगुन देये। राजा बले असन गुनी लोग के खुबे मान देवोत। राजा के हुनचो सपाय गोठ नगत लागते रहे मांतर हुन जेबे सपाय दरबार उझड़ू आय, जातो पहार मांदगी नाईक पाटकुदीन करून पींडा बाट ले जोहार करे। राजा के नगत नी लागे, आरू दूसर लोग के बले हुनचो एई गोठ नगत नी लागते रहे। मांदगी नाईक संगे बईर राखतो लोग हुनचो पाटकुदीन राजा लगे हुनचो चुगल करोत आरू मया करतो लोग मांदगी के बले समरावत आरू राजा लगे बले तेचो बड़ई करोत। राजा बले हुनके कितरोय दांय बलला के "मांदगी तुमी राज चो मान के राखा"। हुन हांसी–ठेली करतो बिता रहे, कितरोय बललो ने बले कान नी देये। कोन–कोन दांय राजा रीस बले होओय, असने दांय मांदगी नाईक चो बयरी मन के दांव मिरली आरू हुनके मरून माड़िन नंदी ने बोहराउन दिला, काकेय खबर नी होली।

राजा चो दरबार रोजे दिने असन होते रहे मांतर राजा दखे के मांदगी नाईक नी एये। राजा आपलो भरोस चो लोगमन ले पूछलो के "मांदगी कहांय गेलोसे, कसन नी एये, मके तपासुन सांगा" । राजा चो भरोस चो लोग हुनचो घरे जाउन पूछला, हुनचो मीत–मीतान लगे जाउन पूछला कोनी नीं सांगला के मांदगी कहां गेलो। लोग राजा के ऐउन सांगला के "महाराज मांदगी नाईक चो कोनी खबर नीहांय" राजा के बले फिकर होली आरू हुनके मया करतो लोग बले खुबे फिकर करत, विचार करत के काहीं ते होली होयदे, तेबे इतरो दिन ले मांदगी नी एये। असन करते खुबे दिन नाहकली मांदगी बिन राजा चो दरबार सुना पड़ली, हांसी–ठेली के लोग भुलकु रहोत के गोटोक दिन पाटकुदीन ले "जोहार महाराज" बलुन पींडा देखाउ मांदगी नाईक इलो। दरबार चो सपाय लोग हरिक होला। राजा आपलो बठलो ठान ले उतरून मांदगी लगे जाउन "तुमी कहां जाउ रहास" पूछला। मांदगी नाईक आपलो संगे होलो गोठ के सांगलो आरू बललो "मके बांवस मंदाग मिरली से मंय आपलो मउत ने मरेदें, कोहीं मके मारूक नी सकोत"। असन कहनी ने हल्बा जात चो लोग चो गुनी होतो आरू छोटेडोंगर ने राजा होतो के जानुक होयसे।

—00—

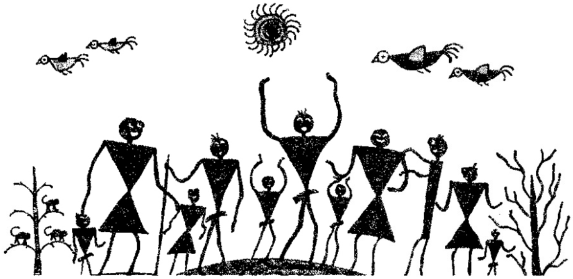

बस्तर इतिहास ने हल्बा आदिवासी

हल्बा राजा मन चो राज करतोदांय नागकाल बलसोत, हुदलदांस चो राजामन धरम--करम करतो बिता रहोत। लोगमन चो सुख काजे कुंआ--बावली खनावला, तरई बनावला। मंदिर, देवाला बनाला, आपलो रयत संगे राजामन चो नाता रहे, रयत बले आपलो राजा के खुबे मान देते रहोत। नागमन चो राज ने खेती--बाड़ी होये, किरसान के जोतलो भूंय चो मालिक बनाला, हुनचो हिसाब ने हुनमनले मासूल वसूली करते रहोत, नागराजा मन चो रानीमन बले राज चो बुता करते रहोत, नागराजा दांय इथा चो आदिवासी मन के फउद ने राखोत कांड--धनउ, फरसा, टंगिया, तलवार, कडरी ले लड़ई लड़ते रहोत। नागराजा मन हल्बा मन के खेती--बाड़ी बले देउ रहोत आरू हुनमन चो मासूल के माफी करू रहोत। हल्बा मन के ये बले हक रहे के गांव चो मासूल के सकलुन आपलो लगे राखूक सकोत।

पूरे चो बस्तर चकरकोट ने कितरोय जनपद रली, सपाय ने रजामन राज करते रहोत। ये जनपदराज ने हल्बा राजामन बले राज करोत। हुदलदाय महाराष्ट्र चो गढ़चिरोली जिला, उड़िसा चो कोरापुट आरू काला हांडी जिला, मध्यप्रदेश चो बालाघाट जिला, छत्तीसगढ़ चो सिहावा, नगरी सपाय बस्तर राज चो भाग रहे। सपाय के मिसाउन चकरकोट नाव रहे। चकरकोट चो कितरोय असन नानी--नानी राज रहोत, हुनमन ने हल्बा राजा राज करते रहोत। आगर दिन नीं होलीसे ऐबेय चो गोठ आय, नारायणपुर चो गढ़पारा ने महाराष्ट्र चो झाडा फाफड़ा ले गोटोक बरात ऐउ रहें। हुदलदांय सुनुक मिरली के "गरीब घरो बेटी राजा घरे बिहा होउन जायसे"। पूछलेक सांगला के पुरखती दांय, ये लोग राजा रहोत, ऐबेय बले ऐ कुल चो झाड़ा फाफड़ा ने खुबे मान आसे। ये बाट चो सगामन उथा आसत आरू उथा चो सगामन ऐ बाट बले आसोत आरू बिहा होयसे। असन गोठ के इथा विचार करले लागेसे के महाराष्ट्र चो झाड़ा फाफड़ा ने बले हल्बा राजा रहोत। उड़िसा चो कोरापुट आरू कालाहांडी ने हल्बा राजा रतो के परछट जानुक होयसे। ऐबे चो बीजापुर ने बले हल्बा राजा राज करते रहोत। राजा अन्नमदेव भोपालपटन के जितुन बीजापुर राजा के हरालो, तेब उथा हल्बा राजा रहे।

मरनहार जयराम पात्र बले आपलो किताब देव लोक बड़ेडोंगर ने लिखलासोत के कुमडा कोटिया राजा होलो चो पाछे सिहावा बाट ले हल्बा मन इला। हल्बा लोग हिमती आरू

लड़तो बिता रहोत, हुनमन चितरकोट राज ने नानी–नानी गढ़ बनाला आरू हुनमन ने आपलो गढ़पति बठाला। सपाय गढ़ के बड़ेडोंगर ले चलाते रहोत। असन होउक सके के हुन गढ़पतिमन के हुदलदांय राजा बलते रहोत, पाछे हुनमन के जितुन अन्नमदेव सपाय के मिसाउन गोटोक राज बस्तर बनालो आरू जनपद ने राज करतो राजामन के उथाय चो जिमिदार बनाउन दिला। ए राजामन चो राज गेली नाजुन, बड़े राज ने मिसुन मान पावला। ऐचोय काजे लड़ई–झगड़ा होतो सुनुक नी होली। इतरो बड़े राज के लिखड़ी ने जितलो रकत नी बोहली, अचरित चो गोठ आय मांतर असन होली। अन्नमदेव बले चकरकोट चो हल्बा राजामन असन राज चलाते रहोत हुसने आपलो राज के बले बड़ेडोंगर ले चलावला। गुलाय बाट राज के जितुन राजा अन्नमदेव बड़ेडोंगर इला आरू इथाय हुनचो राजा टीका होली। राजा असन ऐचो काजे करलो होयदे के इतरो चांडे नवा राजधानी बनातो बेरा नी रहे होयदे, ऐ बले होउक सके के राजा हल्बा राजामन के आपलो बाटे करतो काजे बड़ेडोंगर चो हल्बामन के मान दिलो होयदे।

राजा अन्नमदेव चो जितलो राज इतरो बड़े रहे के तेचो बाखना करूक नी होये। राज चो बाढ़ती कसन होली ऐचो गोटोक कहनी सपाय लोग ऐबे बले सांगसोत। बस्तर ने काहीं बले गोठ झटके बिगरून जायसे, फेर हुनमन सपाय लोगमन काजे कहनी बनेसे, असने गोटोक गोठ गुलाय बस्तर चो लोग सांगसोत। अन्नमदेव के हुनचो कुलदेवी बलली के "तुमी मचो पूरे–पूरे हिंडा पाटकुदीन नी दखासे, जितरो लाफी जाहासे, उतरो ने तुमचो राज होयदे"। राजा हिंडलो पाटकुदीन माता बले हिंडते जाय, हुनचो पांय चो पंयड़ी बाजे राजा के लागे के पाटकुदीन माता अयसे। राजा पूरे–पूरे जाते गेलो पाटकुदीन माता ऐते रहे, असन करते राजीम लग चो पंयरी नंदी के नाहकतो दांय कुदूर ढाब ने गड़ुन माता चो पंयड़ी चो बाजतो सुना नी दिली राजा के माता चो बललो सुरता नी रहे, हुन उलटुन दखलो, माता बलली "इथाय थेब, इथाय ले तुमचो राज होयदे"। ये गोटोक कहनी आय ये सांगतो के बस्तर राजा चो राज कोन लग ले रहे।

अन्नमदेव चो राज 45 साल रहे, हुनमे चकरकोट चो राजामन के जितुन आपलो राज ने मिसातो आरू आखिरी गढ़ बारसूर के जितलो पाछे बले हुता राज नी करून दंतेवाड़ा ने राज करलो। दंतेवाड़ा ने माई दंतेसरी चो गुड़ी बनालो आरू बारसूर चो गरूढ़ खम के उथा रोपलो। अन्नमदेव चकरकोट ने बुलते जानलो के इथा राज करतो आय ते हल्बा जात चो लोगमन के आपलो बनाउक होयदे। राजा चो विचार ने दूसर जात चो

लोगमन के राज–पाठ करतो नी ऐये, हुनमन आपलो जीवना ने मगन रतो बिता आत मांतर हल्बा लोग इतरो बरस ले राज करलासोत हुनीमन चकरकोट के बस ने करूक सकसोत। राजा हल्बामन के राज चलातो चो बोझा डारतो काजे आपलो राज के 12 जिमीदारी ने बाटलो आरू हुन राजामान के जे उथा पूरे राज करते रहोत हुनमन के जिमीदार बनालो। अई जिमीदारी चो भीतरे 48 गढ़ बनालो आरू हल्बा लोग राजा के जेचो बुता भावली हुनके गढ़पति बनालो। असने चार–पांच गढ़ ने गोटोक मुकासा बनालो, असन करते 12 मुकासा बनालो, हुनमन ने गोटोक–गोटोक अधिपति बसालो। असने 32 चालकी आरू 84 परगना बनालो, ये लोग चो बुता रहे जिमीदार, गढ़पति, अधिपति चो संग देतो।

अन्नमदेव हल्बा राजामन के जिमीदार बनालो आरू हुनमन के उतरोय मान दिलो के जसन गोटोक राजा चो रहेसे। जिमीदारमन आपलो सेवा काजे सेवाकारी राखुक सकोत। आपलो जिमीदारी भीतरे चो समाज चो बुता काजे लोगमन के बुता बाटुन देवोत। बसका करून समाज आरू गांव चो झगड़ा चो निपटारा करोत। 48 गढ़ चो गढ़पतिमन चो सकललो मासूल के आपलो लगे ठोवोत। ये सपाय बुता हल्बा जात चो लोगमन करते रहोत। जिमीदारमन पूरे चो हल्बा राजा रहोतचे, गढ़पतिमन बले हलबा आरू मुकासा चो अधिपतिमन बले हल्बा जात चो लोग रहोत। हल्बा जात चो लोग के सेवा आरू हुनमन चो बुता करतो के दखुन राजा हुनमन उपरे खुबे भरोस करूक धरलो। हल्बा लोग सत ने रहुआत आरू नियाव के बले मानतो जात चो लोग आत। ऐचोय काजे हुनमन के राजा आपलो राज ने बड़े–बड़े ओहदा ने राखलो। लाला जगदलपुरी "बस्तर अतीत से आगत" ने लिखलासोत के चालुक्यवंशी राजामन चो राज ने हल्बामन के खुबे भरोस चो लोग मानोत, हुनमन काकेय डरोत नाजुन, काहीं बले गोठ होलेक मुंह उपरे बलतो लोग आत।

हल्बा जात चो लोग भरोस चो लाइक रहोत बले, हुनमन नानी गोठ होवो के बड़े गोठ सपाय के आपलो पेट ने धरून जिराउक बले जानसोत। ऐचो माने होयसे के हल्बामन चो पेट के जानुक नीहोय, ना पाट के जानुक होये। हल्बामन आपलो गोठ के काकेय नी सांगत। असन गुन काजे बले राजा हल्बामन उपरे खुबे भरोस करे आरू असन बुता ने राखे जेमे हल्बामन राजा लगे दिन भर रहोत। राजा चो चंवर डोलातो लोग होवो के राजा चो राखा (अंगरक्षक) करतो लोग हुनमन के राजा संग दिन भर रहुक पड़े। असने बुतामन ने हल्बा जात चो लोग रहोत। राजा के दिन भर कितरोय मनुख संग गोठियाउक होयसे, सपाय चो गोठ के ये लोग सुनुन आपलो पेट ने राखोत। लाला जगदलपुरी "ग्लासफर्ड" चो रयत ले गोठियालो आरू कागदमन ने लिखलो, असन लिखलासोत के चालुक्य वंशी राजामन आपलो भीतरे बाहिर चो राखा काजे 18 गढ़ चो कुटुम उपरे खुबे भरोस करोत आरू हुनमन के आपलो भीतर

चो राखा ने राखोत। ये 18 गढ़ अंतागढ़, नारायनपुर, बड़ेडोंगर, बारसूर, बड़ांजी, भयरमगढ़, बीजापुर, जयतगिरी, छिंदगढ़, मरदापाल, माड़पाल, सिहावा आरू बिंदरानवागढ़, चो हल्बा कुटुम के आपलो राखा ने राखोत। हल्बा आपलो गुन काजे राजादांय खुबे मान पावते रहोत।

राजादांय हल्बा लोगमन भरोस चो लोग रहोत तेचोय काजे राज चो ओहदा ने नी रहु लोग के बले राजा खुबे माफी देउ रहे। हल्बा किरसानमन चो उपज भुंय के राज चो मासुल ले छूट देउ रहे आरू माफीदार किरसान बनाउ रहोत, हुनमन के गांवकारी ले सकललो मासूल के जुहाउक नी पड़े। हल्बा लोग चो गुन काजे हुनमन राज चो बड़े ओहदा ने बले रहोत। राजा चो पाछे सपाय ले बड़े ओहदा दीवान चो होय, दीवान राज चो सपाय बुता के करे, इतरो बड़े राज के चलाउक दीवान के साहा करतो लोग हल्बा जात चो लोग रहोत। दीवान के साहा देतो लोग के कामदार बलते रहोत, ये लोग राजा चो मासूल सकलतो लोग आत। कामदार के साहा होउ लोग के नेंगी बलोत, नेगी के साहा होये हिकमी, ये ओहदा बस्तर राज चो चारो खुट ने रहे ऐबे बले कहांय हिकमी पारा, हिकमी आमा आसे। हिकमीमन चो साहा होवत नाईकमन आरू नाईकमन के साहा होवत चालकीमन। लाला जगदलपुरी लिखलासोत के चालकी राजा चो चालुक्यवंश ले बनलीसे। ऐबे बले चालकी गांवमन ने आसोत। हल्बामन दीवान ओहदा के छांडून सपाय ओहदा कामदार, नेगी, हिकमी, नाइक, आरू चालकी ओहदा ने हल्बा जात चो लोग रहोत। असन बले बलसोत के राजा चो राज ने हल्बा लोग नाइक चालकी आरू भंडारी चो ओहदा ने रहोत।

स्व. बनमाली कृष्णदास चो लिखलो बडांजी चो कंहई नाईक के राजा बाट ले नाईक बनातो हुकुम ने लिखलो आसे "राजमहल जगदलपुर– "कंहई नाईक ग्राम बड़ांजी तुमको आदेश दिया जाता है कि तुम महाराज बस्तर के तरफ से नाईक का काम करोगे और हमेशा राजमहल में आते–जाते रहोगे और महाराज के तरफ से उनके आदेशानुसार काम करते रहोगे" सही– सेक्रेटरी वास्ते महाराजा बस्तर" लाला जगदलपुरी आपलो लेख ने ये गोठ के लिखलासोत। नाईकमन के राखतो गोटकी कुल चो लोग होवोत, जसन गोटोक नाइक नी रलो ने हुनी कुटुम नाहले कुल चो दूसर के नाईक बनावोत। अन्नमदेव दांय चो नाईक चो नाव नीलकंठ नाईक रहे।, असने हुनचो पाछे हमीरदेव दांय बले नाईक नीलकंठ रहोत। हमीरदेव चो बेटा राजा भयरम देव दांय नीलकंठ नाईक चो बेटा के नाइक बनाला, ऐचो नाव के लिखलो नीहाय। राजा पुरूषोतमदेव, भयरमदेव चो बेटा दांय लाल नाईक के नाईक बनाउन रहोत। पुरूषोतम देव चो बेटा जयसिंह दांय बले लाल नाईक, नाईक ओहदा ने रहे। जयसिंह देव चो बेटा नरसिंह देव दांय लालनाईक चो बेटा चूड़ामनी के नाईक बनाला। प्रतापदेव चो राज ने सोनाधर नाईक बनलो आरू राज चो सेवा करलो। ऐचो पाछे जगदीश राजदेव चो राज इली हुदलदांय सोनाधर नाईक चो बेटा बनसिंह नाईक बनलो।

बीरनारायण देव चो दांय सोनाधर नाईक चो दुयझन बेटामन के नाईक बनाउ रहोत। गोटोक चो नाव हरिदास आरू दूसर चो नाव मुरूदास रहे। राजा दृगपाल देव चो दांय सबलसिंह नाईक चो ओहदा ने रहोत। राजा राजपालदेव दांय दसरथ सिंह नाईक बनलो। राजा दलपतदेव दांय मुरहा के नाईक बनाउ रहोत। राजा दरियाव देव चो बेरा ने लछिंदर नाईक रहे। महिपाल देव चो बेरा ने कुलधर नाईक बनलो। राजा भोपाल देव दांय कुलधर नाईक चो दुयझन बेटामन के नाईक बनाला। ऐमन चो नांव अंतु नाईक आरू सुदरसन नाईक रहे। राजा भोरमदेव चो बेरा ने अंतु नाईक चो तीनझन बेटा के नाईक बनाला ऐ लोग चो नाव सोनाधर, राजधर आरू सुरत नाईक रहे। राजा रूद्रप्रतापदेव चो बेरा ने सोनाधर चो दुय ठन बेटा बनसीधर आरू सुकुलधर नाईक बनला। महारानी प्रफुल्लकुमारी चो बेरा ने सुकुल नाईक चो बेटा बलराम हल्बा के नाईक बनाउ रहोत। बलराम नाईक सियान होलो पाछे कंहई नाईक के आपलो ओहदा के सोपुन दिलो, तेके हुदलदांय चो राजा प्रवीर चन्द्र भंजदेव पगड़ी पींदाउन नाईक बनाला। असने गोठ जनायेसे के राजामन असन गोटोक राजा पाछे हुनचो बेटा राजा बनते रहोत, हुसने नाईक बनतो बेरा बले नाईक चो बेटा के नाईक बनावोत। ऐचो काजे बलुक होयसे के नाईक बले राजा दांय कितरो मान चो ओहदा रहे आरू राजादांय ऐ ओहदा ने हल्बामन नाईक बनोत, तेब हल्बामन चो मान बले राजादांय खुबे रहे।

अन्नमदेव बस्तर ने 45 बरख राज करला हुनीमन चकरकोट राज के बस्तर नांव दिला। माता दंतेसरी चो वस्त्र ले बस्तर बनली। अन्नमदेव चो पाछे राजा हमीरदेव राज करला, जसन राजा अन्नमदेव राज के हमीर देव के सोपला, हुसने राजा हमीरदेव राज करला। राजा हमीरदेव के राज मिरलोदाय हुन 33 बरख चो जुवान रहे, हुनके राज करतो आरू राज चलातो अन्नमदेव चो दीवान, मनतरीमन सीखाला। हमीरदेव 40 बरख राज करला। हमीरदेव चो पाछे राजा भयरमदेव के राज गादी मिरली, हुन हमीरदेवदाय ले राजकाज के समझु रहोत। ऐ राजा चो राज ने हल्बामन चो जिमीदारी के नगांला कायकाजे नंगाला, काय होली इतिहास ने नी लिखलो आसे मांतर ये गोठ के मरनहार जयराम पात्र आपलो किताब देव लोक बड़ेडोंगर ने लिखलासोत के जिमीदारी गेलो पाछे आमचो पुरखामन पांच भाई ऐबाट–हुनकाट कमाउक–खाउक गेला। एईदाय चो गोठ महाराष्ट्र ले निकरेसे हुन पत्रिका हल्बा दरपन ने बले लिखलो आसे के झाड़ा फाफड़ा ने बसलो हल्बामन चो पुरखामन बड़ेडोंगर ले ऐउ रहोत। असने गोठमन ने जानुक होयसे के हल्बामन ऐबे चो बस्तर चो लोग आत आरू बेरा–बेरा ने ऐबाट–हुनबाट जाउन कमाउन खाते रहोत।

अन्नमदेव आपलो राज के दंतेवाड़ा ले चलाते रहोत, हुसने हमीरदेव आरू भयरमदेव बले चलावला मांतर भयरमदेव चो बेटा पुरूषोतम देव आपलो राज के बड़ेडोंगर आनला। कायकाजे आनला, ऐ गोठ कहांय लिखलो निहाय मांतर असन लागेसे के हुनके लागली होयदे के हल्बामन चो जिमीदारी के नगालो दांय ले हलल्बामन राजा ले रीस होलासत। ऐचोय काजे राज चलातो काजे राजधानी के बड़ेडोंगर आनला। बड़ेडोंगर के 18 गढ़ चो माथ गढ़ बलसोत इथा राज के आनलो ने सपाय बाट चो हल्बामन हरिक होला आरू राज पूरेदांय असन चलुक धरली। राजा पुरूषोतम देव खुबे धरम करतो बिता राजा रहोत हुन आपलो कुलदेव जगन्नाथ भगवान के मानोत। गोटोक बेरा राजा आपलो सेउकमन संगे पुरी जगन्नथ भगवान चो दरस काजे गेला। सांगसोत के हुदलो बड़े राजा गुलाय बाट घुलडुंन--घुलडुंन गेला, भगवान हरिक होला आरू हुनके रथपति चो ओहदा दिला। एईदांय ले बस्तर ने दसरहा आरू गोंचा ने रथ निकारातो मूर होली।

पुरूषोतमदेव चो पाछे हुनचो बेटा नरसिंहदेव राजा बनलो, हुनचो रानी खुबे धरम करम बिती बायले रली, हुनचो दांय ठान--ठान ने तरई खनावला, चुआं--बावली खनावला, रान--बन रोपला। हुनचो पाछे सकत बिता प्रताप राज देव राजा राज करला। एईदांय खुबे लड़ई होली आरू राजा सपाय के जितलो। हल्बा लोगमन राजा के खुबे संग दिला। ए राजा चो पाछे हुनचो बेटा जगदीश राजदेव राजा होला ये बले खुबे सकत बिता आरू जस बिता राजा होला खुबे लड़ई लडुन जितला। राजा बीरसिंह देव चो पाछे दिकपालदेव राजा होला, हुनचो पाछे राजपाल देव राजगादी ने बठला। राजपाल देव चो दुय रानी रहोत चंदेलिन आरू बघेलिन। चंदेलिन रानी चो आपलो बेटा के राजा बनातो विचार रहे मांतर हुनचो झटके मरनी होली, तेब रानी आपलो भाई के राजा बनाउन दिली। हुन 10 बरस राज करलो। बघेलिन रानी चो दुयझन बेटा ने गोटोकं दलपत देव आपलो मामा ले आपलो राज के नंगालो। इतरो बरख ने हल्बा जात काजे इतिहास ने काहीं लिखलो नीहाय, असन होयदे के बस्तर राज ने हुदलदांय राजामन चो कुल ने खुबे झंझट होली। सपाय चो धियान लड़ई बाट रली तेचोय काजे कोनी काहीं नी लिखलो आसे।

पुरूषोतम देव बड़ेडोंगर ने खडिंक दांय आपलो राज के राखला फेर बस्तर गांव लगे मंधोता ने आनला मांतर अन्नमदेव चो पाछे जितरो बले राजा होला सपाय चो राजा टीका बड़ेडोंगर ने हुन पखना ने जे ठाने राजा अन्नमदेव चो टीका होउ रहे उथाय होली आरू ऐबेय बले उथाय होयसे, हुन पखना के गादी पखना बलसोत। दलपत देव चो राजा

होलो पाछे महाराष्ट्र चो भोसला राजामन संग कितरोय लड़इ लड़लो मांतर हारते गेलो। राजा थाकुन आपलो राज के जगदलपुर आनलो। हुदलोदाय जगदलपुर चो नाव जगतुगुड़ा रहे। माहरा जात चो लोग उथा रहोत, हुनमन चो सियान चो नाव जगतु रहे। जगतु रान चो जियाद ले आपलो लोग के बचावतो काजे राजा ले गुहार करलो राजा जगतुगुड़ा ने पारद खेलुक गेला। राजा लगे दुय ठन कुकुर रहोत, राजा दखला के हुन पारदी कुकुरमन के गोटोक लमहा डराली। राजा अचरित ने पड़लो के कुकुर के लमहा कसन डराली?देव किरता मानुन राजा आपलो राज के इथा जगतुगुड़ा ने आनतो विचार करला।

इंदरावती नंदी धड़ी चो चातर ठान ने राजमहल बनाउकलाय हुदलदायं सपाय रयत के हांक दिला। ऐके बस्तर ने राजा चो हुकुम आय बलुन खुट–खुट चो लोग बुता करूक जुहला। इथा बुता करूक सपाय जात चो लोग इला मांतर हल्बा समाज चो लोग आगर जुहला। एईदायं चो गोठ के ऐबे चो सियानमन आपलो सियानमन ले सुनुन सांगसोत। बस्तर चो चारो खुट ने लोग जुहु रहोत, हल्बा जात बले महेना भर चो चांउर–दार धरून बुता करूक गेलु। सपाय बाट चो लोग इथा ऐउ रहोत, सपाय आपलो–आपलो गांव चो लोगमन संग ठान बनाउन रहुं। दिन भर महल बनातो बुता करू आरू सांझ होलेक आपलो लोगमन चो डेरा ने जाउन हुनमन संग मिसुन गोठियावते रहुं। असन करून आपलो जात सगामन संग नाता–गोता जोड़ुन हुनमन के आपलो गांव ने आनलु आरू बसावलु। ऐबे चो लोग बले हुन गोठ के सांगसोत के छोटेडोंगर चो मांझीमन समुंद कोड़तो जागा ले आमचो पुरखामन के आनुन इथा बसावला। नारायनपुर चो नाईकमन बेलसरिया मन के आनला। कोलर चो बघेल मन देहारी मन के आनला। ये सपाय के आपलो गांव ने आनुन बेटी दिला नाता बनाला आरू कमातो–खातो काजे बेड़ा दिला। हल्बा जात चो एई गोठ हुनमन के दूसर जात ले फरक करेसे के हुन आपलो लोगमन के दुखा बेरा ने साहा होसत। राजमहल बनतो सरलग हुनचो पाटकुदिन गोटोक बड़े तरई खनावला। तरई इतरो बड़े रहे के दखुन लोग बलुक धरला के ये तरई नोहांय समुंद आय हुनचो नाव समुंद सपाय के बलतो ने होली।

राजा चो महल आरू समुंद बनुन तियार होली, राजा आपलो राज के इथा जगतुगुड़ा ने आनलो। सपाय ले आगर माहरा जात चो लोग हरिक होला, कायकाजे के हुनमन के राजा चो आसरा मिरली। राजा बले हुनमन के आगर मान देउन आपलो सहर चो नाव जगतु चो जग आरू दलपत चो दल के मिसाउन जगदलपुर राखलो, असने समुंद चो नाव हिंदी ने दलपत सागर बलला आरू गांवकारी लोग हुनके समुंद बलुक धरला। एई बेरा

राजा आपलो बेटा अजमेर सिंह के बड़ेडोंगर चो अधिपति बनाउन पठालो। अजमेरदेव नंगत मनुख रहोत हुन रयत संगे मिसुन राज करोत, बड़ेडोंगर चो हल्बामन बले हुनके खुबे मान करोत। गोटोकदांय असन बेरा इली के राज ने दुकाल पड़ली लोग–बाग काजे खावतो–पीवतो चो मरन होली। गाय–गोरू भूक–पीयास काजे कलबडाहा होला। राजा अजमेरदेव धीर ले ये बेरा रयत काजे बुता करला आरू आपलो राज चो सपाय जिनिस के रयत काजे लगाउन दिला। ये बेरा रयत काजे जितरो होउक सके उतरो साहा होला रयत बले आपलो राजा चो किरता काजे हुनके आपलो भगवान असन मानुक धरला। एई बेरा जगदलपुर ने राजा दलपतदेव सरगलोक होला, दांव दखुन अजमेर देव चो मावसी मांय चो बेटा दरियावदेव राजा गादी ने बसलो।

हल्बा विद्रोह

अजमेर देव के राजा बनतो रहे मांतर हुनचो हक के मारून दरियाव देव राजा बनलो। अजमेर देव फिरून आपलो राज बड़ेडोंगर इला आरू राज करूक धरलो। ये बाट राजा दरियाव देव चो मन ने पाप समाली, हुन विचार करलो के अजमेर देव के मारून दिले सपाय राज मचो होयदे, असन विचार करून अजमेर देव संग लड़ुक फउद पठालो। ऐ बाटे राजा संग नियाव नी होउ रहे ऐचो काजे हल्बामन चो मन ने दुखा रहे। राजा अजमेर देव चो बस्तर राजा चो पटरानी चो बेटा होवलो ने राज ने तेचो हक रहे। असन दांय लड़ई काजे फउद पठालो के सुनुन बड़ेडोंगर चो रयत मन आरू रीस होला। आपलो खुट–खुट ने बसलो सगा मन के संग देउक खबर पठाला। सगामन बले खबर सुनुन राजा चो संग देउक इला। हल्बा समाज चो लोग काजे बलसोत के हुनमन सत बिता आत आरू नियाव संग ठाड़े होसोत। दरियाव देव हुनमन चो राजा अजमेर देव चो हक के नंगाउन रहे, तेचोय काजे सपाय हल्बा आपलो राजा चो संग दिला। हुनमन चो राजा दुकाल दांय हुनमन के पोसु रहे ये बले संग देतो काजे हल्बामन के ठाड़े करली। तीसर अजमेर देव कंयकर राजा चो भांचा रहे हुनबाट ले बले भांचा चो संग दिला, कायकाज के हल्बा लोग भाचा के भगवान महा मानसोत। इतिहासकार मन ये लड़ई के हल्बा विद्रोह बलला। हल्बामन बले ये लड़ई के आपलो राजा चो आरू आपलो मान काजे लड़ला।

हल्बामन के सकत बिता, लड़तो बिता आत बलुन जानसोत, ये लड़ई ने दरियाव देव चो फउद पाछे गुचला आरू हल्बा फउद चो जीत होली। दरियावदेव कपट करलो आरू आपलो भाई अजमेरदेव के खबर पठाउन बलावला। खबर पाउन राजा गेलो, उथा राजा के तलवार ने मारला। घवल राजा उथा ले पराउन इलो। बड़ेडोंगर अमरूक नी सकलो आरू नारायनपुर लगे मालाकोट ने हुन सरगलोक होला। दरियाव देव आपलो मामा जयपुर चो राजा के पांच ठन गांव देयंदे बलला, तेब जयपुर चो राजा लड़तो काजे साहा होउ रहे। अजमेर देव के कपट करून मारला आरू लड़ई के जितला। राजा मरतो के लड़ई सरली। राजा दरियाव देव आपलो बायसा ने हल्बामन के लड़तो ने खुबे रीस होउ रहे। इदलोय दांय भोसला मन बस्तर राज ने हक करला। दरियाव देव मराठा मन संग हल्बामन के दंड देतो मुरियावलो। राजा चो फउद गांव ने ऐउन हल्बा मन के खोजुन–खोजुन मारूक धरला। गांव ने ऐउन ताड़ रूख के गोदुंक बलत आरू हल्बामन के बलत ऐके झोका, जे बले असन करतो सपाय मरून जाओत। ये दंड के "ताड़झोकनी" नांव दिला। हाथी के देउन बलोत ऐके असन लुकावा के खोजलो ने नी मिरो। हुदलो बड़े हाथी के कोन लुकातो? मांतर हल्बा जात चतुर जात आय असन विपति बेरा दांय बले विचार करला आरू हाथी के मारून कुटकी–कुटकी करून चिपटा ने भरून खोदरा ने गाडुन देवोत, अले खोजा?असन करून आपलो जीव बचाला। टी.व्ही. रसेल आपलो रिपोर्ट ने लिखलो से इतिहास ने इतरो मनुख के मारतो कहांय नी लिखलो आसे जितरो हल्बा लोग के ऐमे मारला। लिखलो आसे 2500 हल्बामन के मारला।

हल्बा आदिवासी समाज काजे ये बेरा विपति बिती रहे, गोटोक दांय असन लागे के हल्बा जात मूर ले नसेदे मांतर हल्बा लोग कसन करून जीव के बचाला ऐके हुनीमन जानसोत। सपाय ऐबाट–हुनबनट पराला। कोनी झाड़ा फाफड़ा बाट गेला कोनी सिहावा नगरी बाट गेला, जे बाट हुनमन चो सिंग सामली हुन बाट पराला। आधा लोग माड़ ने लुकुक गेला, असन करून आपलो जीव के बचाला। हुनदांय चो गोठ के सुरता करून ऐबे चो सियानमन ऐबेय बले डर ने थरथरसोत। नारायनपुर, छोटेडोंगर, बड़ेडोंगर, मरददापाल, कोलर, कोयलीबेड़ा, परतापुर चो हल्बा लोग माड़ ने गेला। आधा लोग आपलो सगामन लगे गेला। एईदांय चो गोठ सांगसोत के गोटोक हल्बीन बायले पेट ने रहे, हुनके गोटोक धाकड़ घरे छांडून गेला, हुन धाकड़ कुटुम बले पेटेहारी चो खुबे देखा–राखा करला। दुखा चो बेरा नाहकली तेबे हुन बायले आपलो लोग के खबर पठाउन बलावली, असन करून हल्बा जात चो लोग आपलो कुल के बचावला। हल्बा जात चो लोग आपलो बिपति बेरा के सुरता राखतो काजे ऐबे बले हुन खोदरामन के हाती खोदरा नांव संगालासोत।

हल्बा समाज चो जीवना इथाय ले पलटली, राज ले हुनमन चो मन टुटली। सपाय फउद ने रतो बुता के छांडून दूसर बुता बाटे बले धियान धरला। हल्बा लोग मसागती लोग आत, हुनदांय सपाय खेती बाट भिड़ला आरू आपलो जीवना जीवला। दरियाव देव चो राज करतोदांय ले बस्तर राज मराठा मन चो बस ने होउ रहे, ऐचोय काजे बले हल्बा जात चो लोगमन राज ले गुचते गेला। हलबा मन के ये गोठ काजे बले रीस लागली के आमके हरातो काजे राजा बस्तर चो पांच ठन गढ़ के जयपुर चो राजा के दिलो। मराठा लोग आरू अंगरेज मन संगे संगड़ी करून आपलो रयत के मारलो। सपाय आपलो कटाव ने जीवना जीउक धरला। ऐदांय असन लागते रहे के सपाय असतिर होली से मांतर राखड़ी ने ईगंरा सपचते रहे हुन जान नी पड़ते रली। राजा मराठा आरू अंगरेज मन के टकोली देतो काजे आपलो रयत ले आगर मासुल धरे, जे देउक सकते रहोत हुनमन बले मन के मारून मासुल देवोत मांतर जे लोग नी देउक सकते रहोत हुनमन भूंय–बाड़ी के छांडून कमया बुता करूक धरला। भूंय चो मालिक कमिया होला, राजा चो लोग गांव ने ऐउन लोगमन के तियारा करावोत, मराठा, अंगरेज मन चो बेगारी करतो होये। हुनमन चो डोला के बोहून गोटोक गांव ले दूसर गांव नेवत। मान बिता हल्बा आरू दूसर जात चो लोग काजे लाज ने मरतो गोठ रहे। असने सपाय गोठ बस्तरिया रयत काजे मरन होउ रहे मांतर काहीं करूक नी होये।

अबूझमाड़ विद्रोह

बस्तर ने जेबे बले बायसा होली हुनचो पाछे रयतमन चो रीस रली, कोनी असन लोग जे रयत चो रीस के जानतो बिता होवत, हुनलोग रयत चो पूरे ठिया होउन राज संगे लड़ूक सपाय लोग के जुहावोत आरू बड़े–बड़े बायसा होली। बस्तर ने जेब बले लड़ई होली, आपलो हक काजे, नंगत जीवना काजे बायसा होली, बस्तर चो मांहग जिनिस के बाहिर नेतो काजे बायसा होली आरू सपाय चो पाछे पूरे हिंडतो लोग रहोत, बस्तर चो रयत हुनमन चो पाछे ले लड़ई लड़ला। ऐबे बले हल्बा जात चो लोग काजे बलसोत के हुनमन आपलो हक काजे झटके जुहसोत आरू बायसा करून, आपलो हक के नंगाउक जानसोत। ऐमन चो समाज बरकस आसे, कोहीं टुटाउक नी सकोत। हल्बा जात चो लोगमन बस्तर चो दूसर आदिवासी लोगमन संगे राजादांय ले ओहदा ने रहोत तेब बले नंगत नाता राखु रहोत। ये दांय बस्तर चो सपाय रयत गोटकी असन जीवना जीवते रहोत। सपाय चो दुखा गोटकी रहे, हुनमन के आगर मासुल देतो होये आरू अंगरेज, मराठामन चो डोला के बोहून गोटोक गांव ले दूसर गांव नेतो होये। ठेकेदार, बयपारी बले बस्तर के पोलपोला बनाते रहोत। सपाय चो मनने रीस रहे मांतर सपाय ओगाय रहोत। ये सपाय गोठ के परल कोटिया जिमीदार गेंदसिंह जानते रहोत। जिमीदार गेंदसिंह चो खुबे मान रहे सपाय हुनके राजा मानते रहोत। गेंदसिंह के भूमिया राजा बलुआत, ऐचो मायने होयसे के राजा पखना फुटाउन निकरलो रहे।

राजा गेंदसिंह गांव चो मुखियामन संगे विचार करलो के कसन करतो आय। सपाय सियानमन बलला के ये सपाय गोठ चो बायसा करूक लागेदे, तुमी आमचो पूरे ठिया होवा आमी संग देउदें। राजा आपलो संग देतो लोग चो गोठ के सुनुन विचार करलो के लड़ई काजे भाला, टंगिया, फरसा, तलवार संगे खावतो–पीवतो सपाय लोगेदे, असन विचार करून गोटोक उवाट बनालो। परलकोट महाराष्ट्र चो गढ़चिरोली लगले ओरी के ओर बीजापुर लगले अबूझमाड़ रहे आरू गांव–गांव ने घोटुल रहे। ये सपाय गोठ के विचार करून राजा गेंदसिंह घोटुल मन ने खबर पठालो। गोटोक आमा खांदी ने लाल मिरी के बांधुन घोटुल ने पठावत। घोटुल चो लोग जानोत के राजा चो संग देतो आय आरू सपाय लोग आपलो–आपलो कांड–धनउ, टंगिया, फरसा, भाला खावतो–पीवतो जमक धरून निकरोत। ये लोग चो लड़ई काचोय संग नी रहे, बयपारी आरू ठेकेदार मिरलेक हुनमन के मारोत। बंजारा जात चो लोग ले आदिवासी मन के डर रहे। अबूझमाड़ चो लोग के लागते रहे के ऐ लोग चो इलोने ने हुनमन चो चिनहारी सरेदे। मराठा आरू अंगरेजमन संग बले अई गोठ रहे, हुनमन बले ये लोग के खिजरावोत। ठेकेदार आरू बंजारामन के मारलेक मराठा अंगरेज काहीं नी करोत, ऐब ये लोग चो सुतूर ने मराठा आरू अंगरेज बले इला।

गोटोक अंगरेज साहब ऐग्न्यू सरकार के रिपोर्ट करलो के कितरोय चो गनती ने आदिवासी जुहलासोत आरू लोगमन के मारसोत। ये साहब ऐके अबूझमाड़ विद्रोह नाम दिला। रिपोर्ट के पढुन सरकार मराठामन चो फउद पठाली, ऐब लड़ई ये लोग संग होउक धरली। फउद के अबूझमाड़िया लुकुन–लुकुन मारोत। गोटोक गोठ नारायनपुर लगे होली। मराठामन चो फउद ऐते रहोत, खुबे दिन ले हिंडते रहोत, थाकु रहोत आरू भूक बले लागु रहे। हुनमन दखला के हाट बठली से आरू खावतो–पीवतो चो जिनिस बले आसे हुनमन हाट ले घेनुन खादला आरू सपाय मरला। गोटोक बिता बाचलो हुन गोटोक कहु रूख ने लिखलो के "आगे खतरा है"। ए ठान के मावली मोड़ बलसोत। सियानमन चो सांगतो गोठ आय के मावली माता आपलो गढ़ चो राखा करली। माता आपलो जस ने हाट बठाली आरू सपाय फउद के नसाली मांतर इतिहास ने लिखलो आसे के मराठा फउद तियार नी रहोत आरू अबूझमाड़िया मन हुनमन के मारून दिला। ऐचो पाछे अंगरेज मन, मराठा मन के बलला के ए बायसा के नसातो उवाट करा। मराठा फउद राजा गेंदसिंह के खोजुक मुरियाला आरू परलकोट चो राजमहल के चारो खुंट ने छेकला। राजा के बांधुन महल चो पूरे अमली रूख ने फांसी दिला, असन ने ये बायसा सरली।

अबूझमाड़ बायसा सरून बले आपलो पाटकुदिन कितरोय गोठ छांडली, जे मनुख के विचार करतो काजे बलेसे। गोटोक काकेय नानी बलतो नोहाय, जेबे असन लोग सकली होसोत तेब बड़े—बड़े लोग के पाछे गुचुक पड़ेसे। अबूझमाड़िया मन दखाउन दिला के हुनमन बले रीस होलेक कोनी फउद ले कमती नोहात। ये बायसा ने बायलेमन बले लड्डुक निकरला, एमन चो बुता रहे मराठा फउद चो गोठ के आपलो लोग के सांगतो। बायलेमन उपरे मराठा मन के भरोस रहे के ए लोग बायसा ने नीहात मांतर गाय—गोरू चराते, रान उपज सकलते ये लोग मराठामन चो ऐतो के सांगुआत आरू आपलो लोग के खबर देउआत। दूसर गोठ ये बायसा ने अबूझमाड़ चो सपाय जात चो लोग सकली होला। मुरिया माड़िया आरू हल्बा सपाय लोग गेंदसिंह चो बललो ने सपाय लड़ला। बायसा सपाय जात चो लोग के गोटकी बनाउन दिली। अबूझमाड़ ने कयेक जात चो लोग रसोत, सपाय चो दुखा गोटकी रहे। मराठा सरकार खूबे मासूल मांगे, नी दिलेक मारे आरू नंगाये। गोटोक दांय हल्बा मन के मासूल ने छूट मिरू रहे आरू मराठामन के मासूल देउक पड़े। हल्बा जात चो लोग ये लड़ई के मन ले लड़ला, कायकाजे के गेंदसिंह हल्बा रहे आरू हल्बामन चो दुखा के जानते रहे। हल्बा लोग राजा गेंदसिंह चो फांसी दिलो दिन 20 जनवरी सन् 1825 ई. के गेंदसिंह सहादत दिवस चो नाव देउन ऐबे बले मनावसोत।

बस्तर चो लोग आरू दुखा मीत आत, दुनो संगे—संग हिंडसत, तेबेय बलसोत के गोटोक सरे नाजुन दूसर तियार रहेसे। असन ऐचोय काजे बले आय के बस्तरचो लोग आपलो जीवना के आपलो असन जीवसोत। सन् 1856 ई. ने बस्तर अंगरेज मन चो हक ने होउ रहे आरू अंगरेज आरू बेपारीमन इथा चो लोहा, लकड़ी, उपज के उड़मुन नेवत। बस्तर चो लोग मन के मारून सपाय के दखत, काहीं करूक नी सकोत। अंगरेजमन बन कानून, पुलिस कानून आरू सरकार चो कानून बनाउन आपलो मन चो करूक धरला। पाइकमन गांवकारी मन के दुखा देवोत आरू आगर मासूल धरोत। बस्तर चो हल्बा लोग संगे सपाय जात चो लोग के दुखा रहे। धुरवाराव संगे मिसुन धुरवा लोग ऐदांय बायसा करते रहोत मांतर ते आगर दिन नी होली आरू बस्तर चो भाग ने दुखा होली। ऐदांय चो राजा नाव काजे रहे। राजा रूद्रप्रताप देव राजा रहोत मांतर राज अंगरेज चलाते रहोत। अंगरेजमन के देस ले खेदुकलाय बायसा होउक मुरियावली, तेब बस्तर चो लोग कसन पाछे रता, हुनमन बले 9 ठन लड़ई आपलो नंगत जीवना काजे लड्डु रहोत। जीवना के नंगत बनातो काजे बस्तर चो लोग लड़तो चो विचार करला।

सन् 1910 ई. चो भुमकाल

बस्तर चो आदिवासी आरू दूसर समाज चो लोगमन भारत भूंय के अंगरेजमन ले छंडाउक देस चो मुखियामन असन नी लड़ला मांतर बस्तर भूंय काजे, आपलो जीवना चो नंगत होतो काजे सपाय असन लड़ला। सन् 1910 ई. चो बायसा असन रहे जेमे सकल बस्तर चो लोग जुहला। मुरिया, हल्बा, भतरा, धुरवा, परजा, गदबा, संगे दूसर जात चो लोगमन बले अंगरेजमन चो राज ने बायसा करला। ये बायसा चो मुखिया गुंडाधूर धुरवा रहे मांतर हल्बा लोगमन बले संग दिला, कायकाज के हल्बा लोगमन के राजादांय जितरो दंड मिरू रहे, हुनचो सुरता मन ने रहे आरू बेरा बले मिरू रहे। ऐचोय काजे हल्बा लोगमन आपलो सकत भर ये बायसा ने संग दिला। ये पाहार लागली के बस्तर चो लोग कितरो बानी–बानी चो लोगमन रहोत मांतर बिपतिदांय सपाय मिसुन जासोत। ये बायसा के भुमकाल नाव संगाला। गोंडी ने बड़े बसका के भुमकाल बलसोत। बायसा चो मूर करतो चो पूरे बड़े असन बसका बनाला आरू हुन बसका ने सपाय के गोटोक–गोटोक गढ़ देउन मुखिया बनाला।

राजा लाल कालीन्द्र सिंह आरू राज माता सुबरन कुवंर (स्वर्ण कुमारी) मोटोर गाड़ी ने बसून रावघाट लगे गांव ताड़ोकी ने इला। इथा खुट–खुट ले आदिवासी आरू दूसर जात चो लोगमन जुहू रहोत। इथा राजा कालीन्द्र सिंह आरू रानी सुबरन कुवंर सपाय आदिवासी भाईमन के आपलो बस्तर भूंय के अंगरेज मन ले छंडातो काजे संग मांगला। आपलो गोठ ने राजा बललो के "अंगरेज मन बस्तर चो रयत के खुबे दुखा देसोत। राजा रूद्रप्रताप आमचो काजे काहीं करूक नी सकोत, असन ने आमचो कुलदेवी मांय दंतेसरी आमचो ले रीस होयदे आरू माता चो रीस आमके बियापेदे। आमके अंगरेज मन चो राज के नसातो आय आरू मुरिया राज मंडातो काजे लडुक लागेदे। आदिवासी भाईमन चेता आरू औजार धरा, बायसा करूक तियार होवा"। राजा चो गोठ के सुनुन कितरोय हजार जुहलो लोगमन, मांझी, मुखिया अंगरेज मन संग बायसा करतो काजे हव बलला। रानी सुबरन कुवंर बलली के "मय आरू राजा कालीन्द्रसिंह किरिया पाडुन बलुसें के ये बायसा ने आमी तुमके संग देउदें"। मुरिया आदिवासी मन ये बसका के भुमकाल बलला आरू बायसा चो मुखिया गुडांधूर के बनाला। ये भुमकाल ने हल्बा जात चो मुखिया मन बले रहोत, हुनमन ने हरचंद नाईक, अर्जुनसिंह, सोमनाथ बैध, बीरसिंह बहीदार, आरू नरायनपुर चो बहीदार रामधर कुपाल, धरमा पातर रहोत।

गुंडाधूर धुरवा जात चो आदिवासी रहे, हुन हिंडलो ने लागे के डगाउन–डगाउन हिडेंसे। बरमेस कांड–धनउ, टंगिया, फरसा घरून रतो बिता आय। लेंगटी आरू पागा पींदते रहे। देखले लागे के बरमेस लड़तो काजे तियार आसे। गोटोक गोठ आरू बलुआत के हुनके बांवस मदांग मिरू रहे, हुन कोहीं बले औजार ने नी मरूक सके। सांगतो गोठ आय के गुंडाधूर ताड़ोकी चो बसका ने उझडुन नरायनपुर चो चंडीबड़ ने दुय दिन थेबू रहे। इथा ले हुन छोटेडोंगर बाट ले मरदापाल बाट गेलो। भुमकाल ने कोन कहां ले लड़तो चो मुखिया बनाला, हुनमन ने कितरोय लोग हल्बा जात चो लोगमन रहोत। अंतागढ़, नारायणपुर ले आयतु महारा के मुखिया बनाला, हुसने कोंडगांब ले भागी, बीजापुर ले रामनाथसिंह, कोंटा ले धनीराम हल्बा, माड़पाल ले कोंदरिया, कयकागढ़ ले हरिचालकी आरू बुदू मांझी, बस्तर ले जोगी आरू जयसिंग, आरू बारसूर ले कोरिया मांझी के बनाला, ए लोग सपाय हल्बा जात चो लोगमन रहोत आरू सन् 1910 ई. चो भुमकाल ने अंगरेज मन संगे लड़ई लड़ला। ये लड़ई कोनी राजा काजे नी रहे, बस्तर चो लोगमन आपलो हक काजे आपलो नंगत जीवना काजे लड़ई लड़ला।

ये बायसा गोटकीदांय सपाय बस्तर ने मुरियावली, बस्तर चो लोगमन बाहिर ले इलो बेपारी, अंगरेज साहबमन के मारूक मुरियाला। ये लड़ई के आदिवासी बायसा करू लोगमन तीन महिना ले लड़ला। पाछे अंगरेज सरकार आपलो फउद के आदिवासी मन संगे लड़तो काजे पठावलो। इंदरावती नंदी धड़ी आदिवासी आरू अंगरेज फउद संगे खुबे लड़ई होली। गुंडाधूर के अंगरेज फउद चारो खुट ने छेकुन मारला मांतर हुन नी मरलो। घवल होलो आरू दुखा ने रहे, तेब आपलो संगीमन के बलली के मके बांवस ने मारा, तेब मंय मरेदें, हुनके बांवस खोबा के ठेचुन मारला। छोटेडोंगर बाटे आयतु महारा हल्बा आरू माड़िया मन, अंगरेज मन संग लड़ते रहोत। फउद संगे लड़ई ने आदिवासी मन, अंगरेज मन के बाट नी दिला। गोटोक मलोल मुदिया नाव चो लड़तो बिता रहोत, हुनके फउद चो गोली लागे, तेबल बले हुनके काहीं नी होये। हुनचो कांड सरली पाछे अंगरेज फउद हुनके गोटोक रूख ने बांधुन गोली मारला, हुन नी मरलो पाछे हुनके बले बांवस खोबा ठेचुन मारला। माड़िया मन माड़ ने पराला हल्बा लोगमन आमदई डोंगरी ने जाउन लुकला। सांगतो गोठ आय के आदिवासी मन आपलो औजार के गोटोक खोदरा ने लुकाउन रहोत, ते आज बले आसे।

सन् 1910 ई. चो बायसा बस्तर चो सरासरी लड़ई रहे। गुंडाधूर के मारला, डेबरी धुरवा के जगदलपुर चो गोलबजार चो अमली रूख ने फांसी दिला। राजा कालीन्द्र

सिंह के जेल ने डारला। रानी सुबरन कुवंर के देस निकारा दिला आरू बायसा करतो काजे बस्तर चो सपाय रयत के पांच कोडा मारतो दंड दिला। बस्तर ने रतो सपाय लोग मुरिया, माड़िया, हल्बा, भतरा, परजा, धुरवा, गदबा आरू दूसर जात चो मरार, कुमहार, कलार, धाकड़,माहरा, नाउ, धोबी, घड़वा, अंदकुरी बायसा करतो काजे सपाय के कोड़ा ने मारला। एईदांय गांव–गांव ने पटेल बनाला। हल्बा गांव ने हल्बा जात चो लोग पटेल रहोत आरू मुरिया गांव ने मुरिया जात चो लोगमन के पटेल बनाला। मालगुजार, मांझी, नाईक, चालकी, बहीदार सपाय नाव काजे होवत। लगानी भूंय चो नाप ले पटेलमन मासूल धरोत, हुनके नेउन तहसीलदार लगे जुहावोत। बस्तर चो लोग सरकार जसन राखे हुसने रहुक धरला, कोनी बाटे काहीं खबर नी रहे। उपरे लिखलो मालगुजार, मांझी, नाईक, चालकी, बहीदार सपाय राजा चो दिलो ओहदा रहे, हुन ओहदा के लोग मान काजे ओढू रहोत। बस्तर चो लोगमन राजा के ऐदांय बले खुबे मान देवोत।

हल्बा जात चो लोगमन गुनी लोग रहोत, जसन बेरा होये, हुसने आपलो जीवना के जीवोत। राजा चो राज सरतो बेरा रहे, राजा लगे ले गुचुन हल्बा लोग आपलो जीवना जीवतो काजे खेती–बाड़ी बाटे धियान धरला। पूरे राजादांय हल्बा जात चो लोगमन के राज चो मासूल माफी दिलो रहे मांतर ऐदांय सपाय ले पटेलमन मासूल धरोत। अंगरेज मन चो राज होउ रहे राज माता प्रफुल्ल कुमारी देवी के रूद्रप्रताप देव चो मरलो पाछे रानी बनाला मांतर राज अंगरेत आपलो मन ले करते रहोतं ऐदांय राज के बस्तर स्टेट राज बलते रहोत। इसटेट राज ने हरिक नाही दुख–दंड आगर मिरें नानी–नानी गलती चो दंड भूगतुक पड़े। सपाय जात चो लोग बस्तर ने गोटके सुतुर ने जीवोत मांतर सपाय चो मरना गोटके रहे। गांव ने ऐतो सरकार चो लोग, साहबमन काजे खावतो–पीवतो चो सकला करूक लागे, सपाय मिसुन खवावोत–पीयावोत। साहेबमन संग गोठियातो काजे हल्बा जात चो लोग के पूरे करोत, कायकाजे के पूरे ये लोग राजा संगे रहु लोग आत आरू गोठियाउक जानोत, ऐचोय काजे राजादांय बुता करतो लोग के पूरे करोंत। साहेबमन बले बस्तर ने हल्बा लोग के जीवना चो गढ़न ले चिनते रहोत के ये लोग राजा चा बेरा कोनी ओहदा ने रहोत। अई हल्बा जात चो लोगमन चा चिनहारी आय।

हल्बा जात चो बाना आरू चिनहा

हल्बा समाज के दखलेक लागेसे के ये लोगमन आरू बस्तर चो दूसर लोगमन ने फरक आसे। ये लोगमन बले आपलो चिनहारी राजा इलो चो पूरे बनालो 18 गढ़ के बनावलासोत। मावली माता के मानतो लोग आत आरू सांगसोत के मावली माता हल्बा लड़तो लोग के खांडा, ढाल देउ रहे हुनके आपलो बाना मानसोत मांतर सांगतो काजे आपलो के 18 गढ़िया हल्बा बलसोत। राजा इलो चो पूरे ले हल्बा राजामन हुदलदांय चो चितरकोट आरू ऐबे चो बस्तर के 18 गढ़ ने बाटुन, हुन गढ़मन ने हलबा गढ़पति बनाउन राज करते रहोत। ऐबेय हुनी 18 गढ़ हल्बा समाज चो चिनहारी बनलीसे। 18 गढ़ ए मन आत।

1. माथ गढ़ बड़े डोंगर—: बड़ेडोंगर के माथ गढ़ बलसोत, कायकाजे के अई ठान चो राजा होलो, तेब सिहावा नगरी बाट ले हल्बा लोगमन इला आरू इथा ठान—ठान ने गेला। कुमडा कोटिया राजा बले ये ठानमन ने गढ़ बनालो आरू आपलो जात—सगा के उथा चो गढ़पति बनालो। बड़ेडोंगर ले सपाय गढ़ राज करोत ऐचोय काजे ऐचो मान खुबे रहे आरू सपाय ऐके आपलो माथ गढ़ मानोत। राजवंस चो लोग बले पुरखतीदांय ले चलतो गोठ के हुसने बनाउन राखला। राजा अन्नमदेव बले आपलो राजा टीका अई ठान ने करलो, तेबले राज टीका बड़ेडोंगर ने करतो रूसुम बनली आरू ऐबेय चो राजा कमल चन्द्र भंजदेव बले इथाय आपलो राज टीका काजे इला। ऐबेय बले हल्बा समाज चो लोग बड़ेडोंगर के समाज चो माथ गढ़ बनालासोत आरू आपलो गड़ के 18 गढ़ हल्बा समाज बड़ेडोंगर बलसोत। इथाय ले सपाय समाज चो बुता होयसे।

2. छोटेडोंगर—: पुरखतीदांय ले छोटेडोंगर के दूसर गढ मानसोत, ये गढ़ बड़ेडोंगर ले उदिया बाटे 20 कोस ने आसे। बड़ेडोंगर ने काहीं बले होलेक हुनचो असर इथा पड़ेसे। असन कितरोयदाय होली के बड़ेडोंगर चो आपलो लोगमन के संग देउक छोटेडोंगर चो लोग अमरला। बड़ेडोंगर चो लोगमन बले काहीं बिपति इलेक इथा चो लोगमन के हांक देसोत। नियाव करतो काजे बले इथा चो लोगमन सहा होसोत। ऐके माथ गड़ चो नानी गढ़ बले मानसोत। इथा बले पुरखतीदांय राजा—रानी हल्बा जात चो रहोत।

3. अंतागढ़, नरायनपुर—: ये गढ़ माथ गढ़ बड़ेडोंगर ले बुड़ती बाट बसलीसे, ऐके तीसर गढ़ मानसोत आरू ऐबे बले ऐचो मान राजादांय असन आसे। नियाव करतो होलेक, उवाट निकरातो काजे नरायनपुर चो लोगमन के हांक देसोत। ये गढ़ पुरखतीदांय चो आय कायकाज के इथा बले हल्बा जात चो राजा राज करते रहे आरू ऐबे बले इथा हल्बा समाज चो लोग खुबे आसोत। राजादांय अंतागढ़ मुकासा रहे, पाछे हुनके तहसील बले बनाला। परलकोट राज आरू बड़ेडोंगर चो संद होलो ने ये गढ़ चो खुबे मान आसे। ऐबे चो हल्बा समाज बले ऐके मान देयसे। हल्बा समाज के गढ़तो काजे पहली बसका इथाय बनाला। लाला जगदलपुरी लिखलासोत सन 1962 से ने बड़ेडोंगर ने, 1970 ने नारायणपुर ने आरू 1972 ने छोटेडोंगर ने हल्बा समाज चो बसका होली।

4. परलकोट, सोनपुर—: नरायनपुर चो बुड़ती बाटे सोनपुर परलकोट गढ़ बसलीसे। ऐबे ये कंयकर जिला ने आसे मांतर राजादांय ले पूरे इथा हल्बा राजामन राज करोत, सोनपुर ऐचो संग रहे आरू सपाय गांव ले नंगत गांब रहे। इथाय ले राजा अबूझमाड़ चो लोग उपरे राज करते रहे। परलकोट राज चो संद महाराष्ट्र लगे ले रहे। पाछे इथाय चो राजा गेंदसिंह होला हुनके भूमिया राजा बलते रहोत, हुन अबूझमाड़ चो लोग संगे मिसुन अंगरेज आरू मराठा मन संगे लड़ई लड़लो, हुनके हुनचोय महल चो पूरे फांसी दिला। राजा चो नांव इतिहास ने अमर होली। हल्बा समाज बले आपलो पुरखा चो आपलो काजे जीव छांडतो के सुरता राखतो काजे हुनचो जीव देतो दिन 20 जनवरी के गेंदसिंह सहादत दिवस बलुन मानेसे। ये गढ़ चो मान आय।

5. परतापुर—: भूमिया राजा गेंदसिंह चो मरतो पाछे हल्बा जात चो लोग आधातिया परतापुर ने सकली होला मांतर ये हल्बा जात चो लोगमन चो पुरखतीदांय ले गढ़ रहे। सन् 1706 ने राजा रक्षपाल सिंह राजा रहोत हुनचो दुयझन रानी रहोत। रक्षपाल सिंह तरई चुंआ, बावली बनाउन रहोत हुन धरमाती राजा रहोत गोटोक रानी चो बेटा दखिन सिंह आरू दूसर रानी चो दुयझन बेटा होला। दखिनसिंह बीमारी ले सरग सिधारलो। राजा गोटोक बेटा के कोटपाड़ आरू दूसर बेटा के परतापुर चो राजा बनालो। राजा आपलो बेटा चो दुखा ने देवलोक होलो, हुनचो मठ ऐबे बले परतापुर ने आसे।

6. कांकेर –: राजा इलो चो पूरे कंयकर राज ने सोमबंस राजामन राज करते रहोत, ये राज ने बले हल्बा जात चो लोग राजा चो मान पाउन जीवना जीवते रहोत। राजा ऐ राज के बले जितुन आपलो राज ने मिसाउन रहोत। सोमबंस राजामन संगे चालकीबंस राजामन समधी बनला आरू दलपतदेव चो रानी कंयकर राज चो राजकुमारी रहे। पाछे हुनचो बेटा के बड़ेडोंगर चो राजा बनाउन पठाउन रहोत, हुन नंगत राज करलो आरू हल्बा जात चो लोगमन के आपलो सेवा ने आपन बनालो। हल्बा जात चो लोगमन बले आपलो राजा काजे लड़तो–मरतो काजे तियार रहोत। असन बले गोटोक सीलालेख ने लिखलो आसे के सन् 1778 ने दुनों राजा संगड़ी होउन आपलो रयत के नंगत पोसला। ये गढ़ बले पुरखतीदांय चो आय।

7. सिहावा नगरी–: राजा अन्नमदेव जेबे चितरकोट के जितला आरू दंतेवाड़ा ने माता दंतेसरी चो मंदिर बनाला, तेब माता हुनके राज चो संद के बढ़ाउक आसीस दिली। माता बलली तुमी पाटकुदीन बिन उलटुन दखे हिंडते जाहा, जितरो लाफी जाहासे उतरो ने तुमचो राज होयदे। राजा हिंडुक धरलो, हुनचो पाटकुदीन माता बले हिंडली। माता चो पंयड़ी बाजे राजा के लागे के माय बले पाटकुदिन अयसे। असन करते सिहावा नगरी लगे पंयरी नंदी चो कुदुर ढाप ने कुदुर ने माता चो पंयड़ी धंसली आरू बाजतो सुना नी दिलीं माता चो बललो के राजा भूलकुन रहे, हुन पाछे उलटुन दखलो। माता बलली "होली इथाय तुमचो राज चो संद होयदे आरू तुमी 21 पीढ़ी ले राज करासे मंय साहा होयदें" बलुन अलोप होली। ये ठान सीरंगी रीसी चो तप करतो भूंय आय, ऐबे धमतरी जिला ने आसे।

8. बिरनदा नवागढ़ –: राजा अन्नमदेव आपलो राज के सिहावा नगरी आरू बिरनदा नवागढ़ ले बिगराउ रहोत। ये गढ़ राजिम लघे आसे आरू पंयरी नंदी बले एई लघे ले बोहेसे। इथा बले पुरखतीदांय ले हल्बा जात चो लोग रसोत। दरियाव देव, अजमेर सिंह के मारून राजा बनलो पाछे आपलो जुवान बेटा महिपाल देव के बिरनदा नवा गढ़ चो राजा बनालो। महिपाल देव बले आपलो बुता करतो आरू राज करतो चो गढ़न ले नानी–नानी राजामन के आपलो राज ने मिसाला। ये बले पुरखती दांय चो गढ़ आय, ऐबे ये जिला रायपुर ने आसे।

9. भामरागढ़ —: भामरागढ़ चो नाव पुरखतीदांय ले आसे, जे मिटुक नी सके। इथा नागकाल ने राजा मधुरातंक राजा राज करते रहोत। राजा चो राज ने हल्बा रयत नंगत जीवना जीवते रहोत। सन् 1061 चो दंतेवाड़ा सीलालेख ने लिखलो आसे के माता सकती आरू दाता भयरमदेव नाग राजामन के बोरीगांव देउ रहोत। बलसोत के माता मानकेसरी (मणिक्येश्वरी) जेके चितरकोट चो लोग मावली माय मानसोत राजा प्रताप रूद्र देव के ढाल आरू खांडा सकत रूप ने सोंपू रहोत। अई ढाल आरू खांडा के हल्बा समाज आपलो चिनहारी बनावला। ऐबे बले ऐचो पूजा करसोत।

10. कोटपाड़ —: ये गढ़ सपाय ले पुरखतीदांय ले आसे बस्तर राज आरू ओड़िया राज चो संद ने बसलीसे। कोरापुट नागबंस काल ने जेब ऐके चितरकोट बलते रहोत, हुदलदांय ले बस्तर चो भाग रहे। कोरापुट के कितरोयदांय ओड़िया राजामन आरू कितरोयदांय चितरकोट आरू बस्तर चो राजामन जितला। ऐबे ये गढ़ जयपुर ने आसे मांतर नागकाल ले पूरे बले ये गढ़ रहे आरू इथा गोटोक नल राजा राज करते रहोत। इतिहास चो गोठ आय के हल्बा बायसा होली आरू हल्बा जात चो लोगमन ले राजा दरियाव देव हारलो, तेब हुन आपलो मामा जयपुर चो राजा ले संगड़ी करलो के मके लड़ई ने संग दिलेक पांचठन गढ़ तुमके देयदें। लड़ई जितलो पाछे ये गढ़ के जयपुर राजा के दिलो।

11. बडीलगढ़ (बयरागढ़) —: नलकाल आरू नागकाल चो गोठ आय के हुदलदांय चो बस्तर राज चो दुय भाग रहे गोटोक चकरकोट ऐमे राजा धारावरस राजा रहोत आरू दूसर भामराकोट ऐमे रजा मधुरानतक राज़ा रहोत। राजामन चो एक—दूसर ले बईर रहे। राजा धारावरस चो सरग गेलो पाछे हुनचो बेटा सोमेसर देव राजा बनलो। ये गोठ सन् 1068 चो आय कुरूसपाल चो सीलालेख ने आरू नारायनपाल चो सीलालेख़ ने लिखलो आसे के सामेसर देव मधुरानतक राजा के हरालो आरू उगती बाटे गोदावरी नंदी आरू किरीसना नंदी धड़ी लगे ले आपलो राज के बिगरावलो। असने बुड़ती बाटे चांदा आरू बयरागढ़ के आपलो राज चकरकोट ने मिसावलो। बयरागढ़ राजा इलो ले पूरे गोटोक पुरखतीदांय ले गढ़ रहे। ऐचोय काजे ये गढ़ चो मान हल्बा समाज ने आगर आसे।

12. बारसूर —: चकरकोट चो सपाय ले बड़े राजा बारसूर ने रहे। नागकाल ने ये राज खुबे नंगत रहे। ऐबेय बले बारसूर के दखलेक लागेसे के इथा चो राजा धरम—करम करतो लोग रहोत। इथा बतीस खमा मंदिर, मामा—भाचा मंदिर आरू कितरोय मंदिर आसे, जे ए राज

चो कहनी के ऐबेय बले सांगेसे। इथा पखना चो गनेस भगवान चो मूरत बले आसे, असन सांगसोत के संवसार ने असन मूरत तीनठन आसे, जेके दखतो काजे संवसार भर ने लोग ऐबेय बले ऐसोत। राजा अन्नमदेव ये राज के आखरी ने जितलो आरू इथाय चो मूरत, गरूड़ खमा के नेउन दंतेवाड़ा ने माता दंतेसरी चो मंदिर बनालो। पुरखतीदांय चो गढ़ होतो ने ये गढ़ ऐबेय बले मान पायेसे।

13. छिंदगढ़ —: हल्बा राजामन आपलो राज करतो काजे चकरकोट के गढ़ ने बाटुन रहोत, हुन गढ़ ने गोटोक गढ़ छिंदगढ़ बले रहे। हुदलोदांय गढ़पति हल्बा लोग रहोत। पाछे दलपतदेव आपलो समरथ ले कोटपाट, पोड़ागढ़, उमरकोट के जितलो, हुदलदांय छिंदगढ़ ने बले आपलो राज के मंडालो। राजा भेजी ने हक करलो तेब सुकमा चो जिमीदार छिंदगढ़ के आरू आपलो बेटी के दाईज ने दिलो असन बलसोत। पाछे छिंदगढ़ के फेर ले सुकमा जिमीदारी ने मिसाउन दिला। ऐबेय बले सुकमा जिमीदारी ने छिंदगढ़ के गढ़ बलुन मान देसोत।

14. मंधोता —: राजा अन्नमदेव चकरकोट के जितलो आरू दंतेवाड़ा के राजधानी बनाउन उथा ले राज करूक मुरियावला। राजा पुरूषोतम देव आपलो राज के मंधोता ने आनला। राजा के जगन्नाथ पुरी ने रथपति चो ओहदा मिरली आरू राजा दसहरा ने रथ चलातो मूर करला। मंधोता ने राजधानी खुबे बरख ले रली। पुरखती दांय चो राजधानी रहे, तेचोय काजे ऐबे बले ये गढ़ चो खुबे मान आसे। बस्तर दसहरा ने जोगी बठतो लोग मंधोता गांव लघे आमाबाल चो होसत। ये लोग हल्बा जात चो लोग आत मांतर आपलो जात नाव जोगी लिखसोत।

15. बस्तर (जुना बस्तर) —: मंधोता असन हुन गांव चो लघे बस्तर गांव बले आसे, इथा बले राजा आपलो राजधानी बनाउन रहे तेचोय काजे ये गांव बले गढ़ बलुन मान पायसे। जे–जे ठान ने राजा आपलो राज के आनलो हुन ठान हल्बा लोगमन चो बसतो ठान होली आरू सपाय आपलो लाग–लगवार संगे उथा जाउन बसना। ये गोठमन पुरखतीदांय चो होलो ने सपाय गढ़ ऐबे बले नाव पावसोत।

16. भयरमगढ़ —: राजा प्रतापरूद्रदेव जे अन्नमदेव चो इलोले पूरे नागवंसी राजामन आरू मुसलमान राजामन के हराउन कटेकलयान, कुंआकोंडा बारसूर के जितुन भयरमगढ़ के आपलो राजधानी बनाला। हुदलदांय ले ऐबेय बले भयरमगढ़ मान पायेसे। ये गढ़ बले नागकाल आरू पुरखतीदांय चो गढ़ आय।

17. जयतगिरी –: ये गढ़ बले ओड़ियान राज आरू जूना बस्तर राज चकरकोट चो संद ने आसे। इथा पुरखती दांय ले हल्बा जात चो लोगमन बसलासोत। ये गढ़ ने बले पूरे बेरा ने हल्बा गढ़पति रला, ऐचोय काजे इथा हल्बा लोगमन आगर बसलासोत। इतिहास चो गोठ आय के बड़ेडोंगर ने राजा अजमेर देव आरू हुनचो भाई दरियाव देव चो लड़ई होली, हुनके हल्बा बायसा बलसोत। लड़ई ने हल्बामन संगे राजा अजमेर देव जितलो। पाछे दरियाव देव आपलो मामा के लड़ई ने साहा होलेक पांचठन गढ़ देयदें बलुन कराड़ करून कपट ने अजमेर देव के मारलो आरू कराड़ करलो गढ़मन के आपलो मामा जयपुर चो राजा के दिलो। जयतगिरी गढ़ बले हुदलदांय जयपुर राजा लघे रहे मांतर दरियाव देव चो बेटा महिपाल देव के जयपुर चो राजा पाछे ये गढ़ के दिलो। पुरखती दांय ले ये गढ़ आसे, तेचोय काजे ऐचो मान होयसे।

18. जगदलपुर –: राजा अन्नमदेव चकरकोट के जितुन दंतेवाड़ा ले राज करोत। पुरूषोतम देव आपलो राज करतो के बड़ेडोंगर आनला, हुनी फेर राज के मंधोता आनला आरू राज करला। दलपत देव आपलो राज के बस्तर गांव ले करोत। ऐबे चो जगदलपुर के हुदलदांय जगतुगुड़ा बलते रहोत, हुन ठाने कोनी बाट ले ऐउन माहरा जात चो लोग बसला। खुबे रान रहे आरू रान चो जनावर चो डर बरमेस लगु रहे। जगतुगुड़ा चो सियान जेचो नाव ले हुन गांव चो नाव रहे। गोटोक दिन राजा दलपतदेव लग रान चो जीव ले आपलो लोगमन चो जीव बचातो काजे गोहार करलो। राजा हुनके भरोस दिला आरू गोटोक दिन पारद खेलुक हुनी गांव बाटे निकसला। राजा लघे दुयठन पारदी कुकुरमन रहोत हुनमन बाघ ले बले नी डरोत मांतर राजा दखुन अचरित होला के हुन कुकुरमन के गोटोक लमहा डराली आरू कुकुरमन पराउन फिरला। राजा ठान चो सत के जानलो के इथा काहीं ना काहीं सकत आसे आरू आपलो राज करतो के इथा आनुक विचार करलो। राजा इथा आपलो काजे राजमहल बनावलो, समुंद असन बांधा कोड़ावलो तेके आज बले समुंद बलसोत। ऐबेय बले ये गढ़ चो मान आसे बस्तर संभाग चो मुखिया आय। ऐचोय काजे ऐचो खुबे मान आसे।

पुरखती दांय ले बड़ेडोंगर बस्तर राज चो मुखिया रहे। चकरकोट ने बले ऐचो मान रहे आरू हल्बा राजामन आपलो राज के गढ़मन ने बाटुन इथा ले राज करतो हुकुम पावोत। राजा इलो पाछे एई गढ़मन ले राज करतो विचार करला आरू इथाय ले आपलो राज करला। हल्बा जात चो लोगमन बले आपलो हल्बा राज के सुरता राखतो काजे आरू आपलो

पुरखती दांय चो बेरा के गरब करतो काजे आपलो समाज चो नाव अई गढ़ के बनाला आरू बलला 18 गढ़ हल्बा समाज। ये 18 गढ़ हल्बा समाज चो चिनहारी आय। असने हल्बा समाज मानकेसरी देवी चो दिलो खांडा आरू ढाल के आपलो समाज चो बाना बनाला। हल्बा समाज चो लोगमन चो जीवना जीतो गढ़न ने हुनमन चो धनकुल बाजा चो बले खुबे मान आसे, ये बाजा बले हल्बा समाज चो चिनहारी आय। असने हल्बा जात चो बायलेमन आपलो जीवना काजे चिवड़ा कुटुन बेपार करोत, दुखा बेरा ने अई बेपार ने जीवना करोत आपलो दुखा दिन के सुरता राखतो काजे चिवड़ा कुटतो मूसर आरू बाहना के बले आपलो समाज चो बाना बनालासोत। हल्बा जात चो लोगमन आपलो पुरखती दांय चो सपाय गोठ के सुरता राखलासोत, ऐबेय चो गोठ होवो के पाछे चो गोठ सपाय चो हुनमन चो जीवना ने मान आसे।

इतिहास चो गोठ आय के हल्बा जात चो लोगमन के राज चो फउद ने रतो नंगत लागु आय मांतर सपाय लोगमन ये लड़तो बुता के नी करोत, आधा लोग खेती–बाड़ी बले करते रहोत। पूरे चो राजामन आपलो रयत चो पेट भरतो काजे राज चो आधा लोग के खेती करतो चो हुकुम देउ रहोत। हल्बा जात चो लोगमन के राजा आपलो बेड़ा ने खेती करून उपज चो सकला करतो बुता ने बले लगाउ रहोत। असने हल्बा जात चो लोगमन के राजा मासूल ने माफी देउ रहे आरू ये हक बले देउ रहे के हुनमन दूसर किरसानमन ले मासूल धरून आपलो लगे राखुक सकोत। असन गोठ ने जानी होयसे के राजा ये लोगमन चो उपरे कितरो भरोस करते रहोत आरू ये लोग बले राजा हुकुम के दूसर जात चो लोगमन ले आगर मानते रहोत। राजा ये लोगमन के काहीं बले बुता करतो काजे बले, ये लोग हुन बुता के आपलो जीव ले आगर जतन करून करते रहोत। हल्बा जात चो असने गोठ काजे राजा भरोस करून ये लोगमन के आपलो राखा करतो लोग (अंगरक्षक) बनाउन रहे। हल्बा जात चो लोग राजा चो राखा करतो लोग रहोत आरू बरमेस राजा चो संगे रहोत। असने राजा चो संगे रतो लोग चवंर डुलातो लोग बले हल्बा जात चो लोग रहोत, ये लोग बले बरमेस राजा चो संगे हुनचो छांव बनुन रहोत।

हल्बा जात चो लोगमन बले राजा चो भरोस के केबेय नी डिगाला आरू ऐचो ले आगर जेब असन लागे के राजा के राज करतो ने काहीं बले अड़चन होली से तेब हुनमन उवाट बले सांगोत। राजा चो दुआरे ये लोग के ठाड़े राखोत, राजा संगे भेट करतो लोग के ये लोग ले मिसुन राजा लघे पठावोत। असन लोग के द्वारपाल हिंदी ने प्रतिहारी बलसोत असन लोग आपलो जात नाव (सरनेम) प्रतिहारी चो बिगड़लो रूप परिहार लिखसोत। असन लिखतो लोग बीजापुर ने आगर आसोत। जसन राजा हल्बा जात चो लोगमन उपरे भरोस करे, हुसने ये लोग बले राजा चो दिलो ओहदा के आपलो जात नाव (सरनेम) बनाला। असन ऐ काजे बले होली होयदे के हल्बा लोग आपलो जात सगा चो नाव नी धरोत, तेब हुनमन राज चो ओहदा के बलुन आपलो लोगमन के हांक देते रहोत होयदे आरू असने–असने राज चो ओहदा ये लोगमन चो जात नाव बनली होयदे। राजा चो राज ने हल्बा जात चो लोग बड़े–बड़े ओहदा ने रला हुनमन चो जात नाव के सुनुन बले लागेसे।

हल्बा आदिवासी मन चो बरग

राजा आपलो गढ़ ने आपलो माता चो गुड़ी बनावलो, जे गढ़ ने चकरकोट राजदांय मावली माय चो गुड़ी रहे, हुन गुड़ी के माता दंतेसरी बलुन राजा आपने पूजा करलो आरू हुन दिन ले दूसर जात चो लोग तेके दंतेसरी माई मानला आरू जे गढ़ ने माता गुड़ी नी रहे उथा राजा बाट ले गुड़ी बनाउन दंतेसरी माता के मंडाला। सपाय माता गुड़ी ने पूजा करतो चो हक हल्बा जात चो लोगमन के दिला, फेर असन होली के जितरो बले बड़े देव–धामी बस्तर ने रहोत, जेके आदिवासी मन संगे दूसर जात चो लोगमन बले मानोत, सपाय चो पूजा करतो हक हल्बा जात चो लोगमन के मिरली। देव–धामी पूजा करतो लोगमन बले, राजा चो दिलो मान आय बलुन आपलो जात नाव देवहारी, पूजारी, देहारी, नाईक बैध, हिकमी, सिरहा, गौर, बेलसरिया, पातर, मांझी लिखसोत। हल्बा जात चो लोगमन राजादांय फउद ने बड़े–बड़े ओहदा ने रहोत। असन लोग आपलो जात नाव नाईक, परधान, गागड़, बाकड़ा, चूरपाल, राना, समरथ, बघेल, धनेलिया, भोंयर, कुपाल, बेसरा लिखुन गरब करसोत के आमी राजा चो फउद ने लड़तो लोगमन रलु आरू राजा आमके आपलो राज ने फउद ने ओहदा देउन मान देउ रहे। राजा चो राज ने दीवान चो ओहदा राजा चो पाछे सपाय ले बड़े रहे, हुनचो साहा करतो लोग बले हल्बा जात चो लोगमन रहोत हुनमन आपलो जात नाव भंडारी, नाईक, हिकमी, चालकी लिखसोत। असन बले हल्बा जात चो लोग आपलो जात नाव गांवर, अलमिया, असोरिया, बहढ़िया, बढ़ई, केसरा, बेलगैंया, बिसेन, बेलोदिया, बिसंदा, बुढ़ाकरिया, भोय, भाउ, चनाप, चुरपाल, चुरगिया, चोरिया, दिवान, धकरिया, धरत, गुरूवर, गुनागहिया, घुमरा, फुटान, जमदार, कोठेवार, कड़ियाम, कोरोटिया, कोसमा, कृषान, कोलियारा, कुवर, खवास, माहला, लेकाल, मकरिया,नड़वास, पुंगड़ा, राऊत, शिवनिया, सहारा, शांडिल्य, सहानी, सरफ सहारा, तिरसुनिया, तारम, सिकसोड़िया बले लिखसोत

छत्तीसगढ़ चो हलबा समाज चो जात नाव अमिला, अमरिया, अउरसा, अगोसिया, अंधिया, आलहा, ओड़मरिया, ओरइया, इरकुलिया, इसदा, धनगाय, इलमे, गाते, गदवार, कोठवार, कोकिला, किरसान कावोलिया, करवाल, कोरटिया, करात, करबगिया, कोसमा, कोया, कोमा, कपसिया, कुलहरिया, कोटपरिया, केराम, करपाल, कोलियारा, धंसले, खरगिया, खड़हा, खुरसुंगिया, जोसां, कोमबे, गंवरना, गड़िया, गोडरा, कुसना,कासरे, माहला, मलिया, मानकर, मोरगिया, मेरिहा, भूरकरिया, भलाकरिया, भूई, भोराना, भैसारा, लामकासे मसिया, यलमे, लरिया, लेड़िया, बाघमारे, करपाल, सहारा, सिवाना, बढ़ई, मोहमोरे, पुरिया, जामड़ा,जमदार,हनगिया, टापरे, पड़ाले, चनाप, चनाव, चउरका, चुरपाल, चूरगिया, चिराम, चौधरी, चूल, चोरिया, चिंडा, चवेर, बेलोधिया, देवरे, हरइले, धनबिया, धाकड़, धनगुन, घोड़ापटिया, पिदा, पुसरिया, पुजेरी, पोंगरा, फरदिया, फाफामार, जगारे, कवास बगोड़िया, बारला, गुनागहिया, बुररा बले होयेसे। छत्तीसगढ़ चो दुरग आरू बालोद संभाग चो हलबा लोगमन असने जात नाव लिखसोत।

हलबा समाज महाराष्ट्र चो हलबा लोग चो जात नाव आंधे, औसारे, आगे, अलोने, आमले, भोय, भोई, भेंयर, भंडारी, भूरकुड़े, भैंसारे, बोरघरे, भेगारे, भेंडे, चौड़ाये, परजे, चिराम, चनाप, चनने, चाकाटे, चुलवार, चिड़या, चवरे, चुरगाये, चौधरी, देवरे, देहारी, धनगाये, धनगुने, धनभात, इलमे, ईसवर, मानकर, गांवर, गाते, गढ़वार, गवराने ,घासले, धरत, हरदले, जोसी, जमदाड़, जगाड़े जिनदाकुरे, कोमबे, किरसान, कसयप, कुराड़े, एलमा, कुसना, कुथीर, कवास, करचाल, कोठार, कुरसुंगे, कुमड़े, कोसरे, कोरटिया, कोटवारे, कुपाल, कोसमे, कोसम, कलाम, धुरमोड़े, लाभकासे, मोहमोरे, लछये, मेढ़े (मेढ़िया) मेड़के, मलये, मड़िगापे, मसे, मासरे, मसुरकर, माकाड़े, मुरादे, माहला, नाईक, नरवास, फरदिया, फाफसवाड़े, पोचादे, पवार, परसगाने, पीसदे, पीजदे, पुंगड़ा, पुंगड़े, परधान, पेडाल, पिपरे, राना, राउत, सहारे, तारम, दायरे, दालदे, बरई, बाईगाह, बालापुरे, बादघरे, बादमरे, बड़गड़े, येलसरे, बेलसरे, बले होयेसे। हल्बा जात चो लोगमन ठान–ठान ने बसलासोत मांतर हुनमन चो जात नाव ने फरक नी होये।

बस्तर चो हल्बा समाज चा बरग के दखलेक लागेसे के हुनमन ने बले फरक नी होये। जसन गौर (गंवार), सोम (गुनागैहा), बिसेन (बिसीनदा), चनाप (चतुरवंसी), देव (भेड़िया), श्रीमाली (माहला), कसयप (भोंयर), कांसी (चिराम), कसयप (कुलहरिया), चौधरी (चौधरी), नाग (कोलियारा), नाग (कोरटिया), नाग (पिददा), सांडिल (पुजारी), भंडारी (कसयप),सूरवंसी (चोरिया), चनदरवंसी (चनाप), जोसी (भंडारी), भंडारी (भंडारी), राना (राना), नाग (धरत), नाग (कोठवार), नाग (भोंयर), कसयप (भोई), तारम (तारम), नायक (बकड़िया), नायक (नाईक), गागड़ा (गागड़ा), धनंजय (धनेलिया), एलमा (झांकर), करायत (नाग), समुंद (नाग), सिवरिया (सविरिया), गढ़िया (गड़िया), गोलड़िया (देहारी), सहारा (सहारा), मकरिया (मकरिया), अगरवानी (पुजेरी), चिंडा (चिंडा), नाग (राउत), ठाकुर (राउत),बघेल (बघेल),नाग (मांझी), समरत (समरत), परधान (परधान) लिखसोत।

बस्तर चो हल्बा मन चो जात नाव राजा चो दिलो ओहदा आय, जे ऐबे एमन चो जात नाव आय मांतर बस्तर ले बाहिर चो जात नाव हुनमन चो बरग नाव आय। ये लोग आपलो बरग के नाव संगे लिखसोत जसन रावटे, सोम, देव, झांखर, नागेस, नाग, अलनिया, चौरिया, पिसदा, कोमयार, भुंययार, मेड़िया, भेड़िया। ये सपाय लोग छत्तीसगढ़ चो हल्बा लोगमन आत, ये लोग बेरा–बेरा बस्तर ले जाउन छत्तीसगढ़ चो गांवमन ने बसला आरू पाछे उथाय चो रंग ने रंगला। छत्तीसगढ़ चो हल्बा जात चो लोगमन अबगो उथाय चो जीवना ने जीउक धरला आरू गोटोक दांय असन होली के, हुनमन बस्तर चो रीत–रूसुम, भासा–बोली, खावतो–पीवतो सपाय के भूलकला। इतरोय नाही इथा ले बेटी लेतो–देतो के बले छांडुन दिला। गोटोक दांय असन होली की ठान ने फरक होलो ने लोगमन चो विचार ने बले फरक होली आरू गोटोक जात चो दुयठन नाव बनली। ऐदांय बलला बस्तरिया

हल्बा आरू छत्तीसगढ़िया हल्बा। गोटोक जात चो लोग ने इतरो फरक होली के ऐबेय बले बेटी लेतो–देतो ऐ लोगमन चो मंजगत नी होये मांतर सिहावा नगरी चो हल्बा जात चो लोगमन संगे बस्तर चो हल्बा जात चो लोगमन बेटी देतो–लेतो करसोत। ऐ ऐचो काजे होयसे के सिहावा नगरी आधे दांय बस्तर राज चो भाग रहे, उथा चो लोग आरू इथा चो लोग आधे दांय ले बेटी लेतो–देतो करते रहोत, तेचोय काजे ऐबेय चो लोगमन बले आपलो पुरखादांय चो गोठ के बनाउन ठोवलासोत।

असन नोहोय के हल्बा जात चो लोगमन के राजा चो ओहदा नाव ले चिनहसोत, हुनमन के गढ़ चो नाव ले बले चिनहतो होयसे। जसन चारगंइया देहारी, अंतागढ़िया देहारी, चूंगा देहारी, बड़ेडोंगरिया पातर, नरायनपुरिया पातर, छोटेडोंगरिया मांझी असन बलतो चो माने आय के हल्बा जात चो लोगमन आपलो समाज के लोगमन के खुबे मान देसोत आरू मान देतो काजे दूसर लोग चो नाव नी धरोत। असन बलतो ने सुनतो लोग बले जानसोत के ऐ लोग कोन गढ़ ले इलो लोग आत आरू हुनमन बले उसने मान देसोत। सपाय के अठारागढ़िया हल्बा समाज बड़ेडोंगर बले बलसोत। आधे चो लोग आपलो बरग के सांगलेक हुनमन चो सगामन बरग नाव बले धरते रहोत मांतर ऐबेय बरग नाव कोनी बाटे दखा नी देये। बरग नाव बेलझरिया, गोडरिया, हरनगढ़िया आधे चो लोग सांगुआत मांतर ऐबे चो लोग असन बरग लिखतो के, सांगतो के, आरू बलतो के सुनुक नी होये। मरनहार बलदेव प्रसाद पात्र आपलो लिखलो आलेख "हल्बी और हल्बा संस्कृति" ने ये सपाय गोठ के लिखलासोत। हुनचो विचार ने ये गोठ हल्बा जात चो चिनहारी रहे। ऐबेय चो लोग असन गोठ के नी जानोत आरू कोनी असन गोठ के ऐबेय चो पीलामन के नी सांगोत।

पं. केदार नाथ ठाकुर लिखलासोत के हल्बा जात ने, बड़े–नानी हल्बा जात चो लोग बले समाज बाट ले फरक करलो आसे, तेमे जानुक होयसे के हल्बा समाज चो लोग काजे आपलो समाज काजे कितरो मान आसे। "पुरहित", "सुरहित, नाव ले आपलो समाज के बाटलासोत। पुरहित हल्बा समाज चो लोग आपलो समाज ने बेटी देतो–लेतो करसोत मांतर सुरहित ने बेटी देतो–लेतो नाजुन होये। खावतो–पीवतो चो फरक नीहोय मांतर कोनी बले सगा बुता ने फरक दखा देयसे। हल्बा जात चो लोगमन के दखले असन नी लागे के ये लोगमन ने काहीं फरक होयदे सपाय गोटोक सुतुर ने मिसुन रसोत मांतर समाज चो बुता होवो, बेटी लेतो–देतो होवो ये फरक जनायसे। असन फरक समाज के बाटेसे मांतर हल्बा समाज ने दूसर लोग ऐके दखुक नी सकोत कायकाज के जेब बले हल्बा समाज चो गोठ होयसे ये फरक दखा नी देये। हल्बा समाज बरकस समाज आय, ऐके आरू आगर बरकस बनाउकलाय समाज के सपाय परदेस के मिसाउन गोटोक "अखिल भारतीय हल्बा महासभा" बनालो आसे। पांचठन राज होलेक हुनके अखिल भारतीय बलसोत आरू हल्बा समाज बले पांचठन राज ने आसे। "अठारागढ़ महासभा" बड़ेडोंगर, "बतीसगढ़ महासभा", "छत्तीसगढ़ महासभा" बालोद, "लांजी महासभा" बालाघाट म.प्र. आरू "गोंदिया महासभा महाराष्ट्र"। सपाय महासभा के गोटोक सुतुर ने राखतो काजे अखिल भारतीय महासभा बनालासोत।

सुख चिवड़ा –

मरनहार बलदेव प्रसाद पात्र आपलो लिखलो आलेख "हल्बी और हल्बा संस्कृति" चो मूर सुख चिवड़ा ले करसोत। मरनहार पात्र लिखसोत के आमचो खातो दाना चो खिडिंक भाग बले गोटोक समाज चो चिनहारी होउक सके। आमी माटी चो बेटा लोग आपलो उपजालो उपज के परसाद आय बलुन खाउसें। असने समाज चो रस ने कोनी पुरखती दांय चो रूसुम मिसली बललेक, नाता चो डोरी बरकस होयसे के टुटाले ने नी टुटे। असने पुरखती दांय ले करतो रूसुम ने आमचो समाज चो नाता आरू बरकस होयसे। मनुख आपलो गोठ–बात ने, आपलो रीति–रूसुम ने आरू जेके पुरखादांय ले मानते, ऐबेय बले मानुसे, हुन आमचो जीवना ने मिसुन गेलिसे। जीवतो आरू मरतो ले रीत–रूसुम मनुख के नाता–गोता ने बांधुन रहेसे, जेके कोनी टुटाउक नी होये। पुरखती दांय ले आमचो समाज चो खावतो–पीवतो दूसर समाज चो खावतो–पीवतो ने फरक आसे आरू अई फरक आमचो समाज चो मान आय, अई आमचो समाज के दूसर समाज संग इतरो बरकस ले जोड़लीसे के ऐबेय बले सपाय लोग संगे आमचो समाज जोड़ी होलीसे, जेके कोनी टुटाउन नी सकोत।

मरनहार बलदेव पात्र लिखसोत के बस्तर ने "खाई खजना" काय आय?हुन खावतो–पीवतो जिनीस नोहाय, हुन आमचो दूसर जात चो लोग संगे नाता–गोता जोड़तो गोटोक डोरी आय, जे इतरो बरकस होलिसे के सपाय गोटोक धार ने बोहांउसे। "खाई–खजना" बले गोटोक असन जिनीस आय, तेचोय ले आमी आपलो घर–परिवार के परदेस ने बले सुरता राखुंसे के आमके घर चो पीलामन काजे "खाई–खजना" नेतो आय। असने घर चो लोगमन बले आसरा करू रसोत के बुबा के भाई परदेस ले आमचो खावतो काजे काहीं खाई–खजना आनेदे। ये आमचो समाज ने नोहाय कोनी बल समाज चो लोग कहांय बले जासोत, हुनमन आपलो घर काजे खाई–खजना आनुक नी भूलकोत। पुरखतीदांय चो खाई–खजना चाउर पिसान आरू गुर के मिसाउन टोरा तेल ने भुंजलो "आरसा रोटी" आरू गहुं पिसान आरू गुर के टोरा तेल ने भुंजलो "गुलगुला भजिया" रहे, ए के आनलेक सपाय बाटुन खाते रहुं कितरो नंगत लागु आय। ए के आमचो माय–बहिन हल्बीन बायलेमन बनाउआत आरू हाट ने बिकुक बले नेउआत। हुदलदांय बस्तर ने काचोय छिवलो के खावत नाजुन मांतर आदिवासी होतो ने बले आमचो बनालो के सपाय जात चो लोगमन खाते रहोत "बोबो रोटी", "बड़ी", "अथांन" के बले आमचो माय–बहिन हाट ने बिकुक नेसोत आरू सपाय घेनुन खावोत।

बस्तर ने काहीं बले नेगं होलो पाछे चिवड़ा गुर देसोत, हरिक नेंग ने चिवड़ा गुर इलो लोग चो मुंह के मीठ करूक लाय देसोत। घर ने हरिक बेरा सपाय कुटुम चो लोग के नेवता पठावसोत सपाय आपलो समरथ ले चाउर–दार घरून जुहसोत आरू नेंग सरलो पाछे घर चो लोग सपाय के चिवड़ा गुर मुंह मीठ काजे देसोत। बस्तर ने रतो सपाय समाज

चो लोग करसोत, ऐके सपाय समाज ने "सुख चिवड़ा" बलसोत। ये सुख चिवड़ा बले बस्तर चो सपाय समाज के गोटोक डोरी ने बांधलीसे। चिवड़ा कुटतो हल्बीन बायलेमन चो मूर धंदा आय, ऐबेय बले चिवड़ा कुटतो बाहना मूसर हल्बा कुटुम मन ने आसे। हल्बा समाज बले मूसर बाहना के आपलो बाना बनाउन दूसर बाना असन मान देयसे। दूसर समाज के हरिक दांय आघे दांय हल्बीन बायलेमन चिवड़ा पूरावोत, असन ने सपाय समाज ने गोटोक मया चो नाता अपने जोड़ी होये, अई हल्बा समाज चो बसतर चो सपाय समाज संगे नाता गोता आय। बस्तर चो कोनी समाज ने माहला होवो के बिहा होवो सपाय नेंग चो पाछे ऐबेय बले चिवड़ा गुर देसोत, पूरेदांय ऐके हल्बा परिवार चो लोग पुरावोत। ऐबेय खूबे बरन चो मीठई मन ईली मांतर चिवड़ा गुर देतो ऐबेय बले गोटोक नेंग बनलीसे। बस्तर ने सरई पान चो दोनी ने चिवड़ आरू गुर दिलेक हुन नेंग चो पूरा होतो चो चिनहारी होये। छत्तीसगढ़ चो कोनी–कानी समाज ने चिवड़ा गुर देतो चो रूसुम ऐबेय बले आसे। सुख चिवड़ा हल्बा जात चो लोगमन चो चिनहारी आय।

---00---

हल्बा जात चो लोग

पं. केदारनाथ ठाकुर आपलो किताब बस्तर भूषण ने हल्बा जात लोगमन चो गोठ के लिखलासोत के हल्बा जात के बस्तर ने सपाय जात चो लोगमन ले नंगत जात मानसोत। हल्बा जात चो लोगमन ने आरू बस्तर चो दूसर आदिवासी जात ने फरक दखा दयसे। खावतो–पीवतो, रतो, गोठ–बात सपाय ने फरक दखा देयसे। असन फरक पुरखती दांय ले आसे, तेबे बस्तर चो पहिली किताब लिखतो लोग के बले ऐ फरक दखा दिली, ऐबेय बले ये फरक दखा देयसे। हल्बा जात लोगमन आगर मोट ना आगर सपुर होसत, आगर डेंग न आगर नानी होवत, करिया न पंडरा होवत, मनुख काठी मनुख बाइग चो लोग होसोत ये लोग के छुकछुका रतो भायसे। घर के बले छुकछुका राखसोत, लिपलो, पोतलो, बरनलो घर आरू दुआर के बले नंगत बाहरू रसोत। घर–बाड़ी के बले छुकछुका राखसोत। खातो लाइक साग–भाजी आपलो घर चो बाड़ी ने उपजासोत। हल्बा जात चो मनुख मन बले सियान धारा चो लोगमन आत गुरूमुखी लोग बले ऐमन के बलसोत। बरमेस पवितर रतो लोग आत। छुकछुका कपड़ा पींदसोत आरू घर के बले छुकछुका रतो ऐ लोग के भायसे। पींधतो ने छुकछुका धोती, कुरता आरू बंडी पींदसोत। खांद ने बरमेस गांधी पटका राखु रसोत। कोनी–कोनी लोग हाते चांदी चो खाडू आरू काने सोन चो बारी पींदसोत। कहांय जातो खनी हात ने बेत बड़गी धरतो लोग हल्बा जात चो लोग आत। पुरखती दांय खुबे रान–बन रहे, ऐचो काजे ऐ लोग कांड–धनउ, फरसा, टंगिया, गुपती बले धरून जाते रहोत।

हल्बा जात चो मनुख मन गुरूमुखी कटाव चो लोगमन आत, दूसर जात, समाज ऐ लोग के नाइकहा बलसोत। नाइकहा चो मायने होयसे के ये लोग देव–धामी आरू दूसर बिपति के हात छिउन जानसोत। हल्बा जात चो लोग के बस्तर ने खुबे गुनी लोग आत असन मानसोत। देवी–धामी चो सिरहा ऐमन होसत चे आरू जे देव चो सिरहा होसत हुनचो संग देव परछट रहेसे, ऐचोय काजे जेब बले घर ले बाहिर जासोत, ये लोग सपाय गोठ के धियान ने राखसोत। हल्बा जात चो लोग गुनिया बले होसत, ऐ लोग काचोय बले हात के छिउन सपाय गोठ संगे उवाट बले सांगसोत। लोगमन बले ऐमन उपरे आगर भरोस करसोत। हात छिउन सांगसोत के कोनी पांगा–नासा करलासोत के, कोनी देव–धामी बनालासोत, के काहीं बीमारी धरलीसे। असन काहीं बले जनाली बललोने हुनचो काट चो उवाट बले सांगसोत। ये लोग पंजियार बले होसोत, पांजी–पतरा दखुन सगुन विचारसोत। केब चो जनम धरलो पीला पाछे आपलो जीवना ने काय करेदे। बिहा करतो पहार केब नंगत होयदे। ऐसू पानी कसन गिरेदे, पातर बरसा होयदे के खुबे पानी गिरेदे। हल्बा सियानमन ओड़िया भासा के बले जानतो लोग आत। ताड़ चो पाना ने लिखलो के पढ़ुन ओड़िया पुरान के सपाय लोग के सुनावसोत। पतरा के दखुन पूरे कसन दिन अयदे, काय विपति होयदे?सपाय के सांगसोत।

बसतर चो विदवान बले मानसोत आरू लिखलासोत के हल्बा जात चो लोग खुबे गुनी लोग आत। सिरहा, गुनिया, पंजियार, पुजारी अई लोग होसत। असन जितरो गुपत विदया होयेसे सपाय के हल्बा लोग जानसोत आरू ऐके आपलो कोहीं चेला के सीखावसोत। असन चेला अई लोग चो कुटुम चो लोग होसत। सिरहा के देव बनायसे मांतर गुनिया आरू पंजियार के जानतो लोग बनावसोत। असन ने ये विदया गोटोक पीढ़ी ले दूसर पीढ़ी अयसे। हल्बा जात चो लोग हात छिउन बीमारी के बले सांगतो लोग आत। बीमारी जान पड़ली जाले हुनचो दवई बले देसोत। जड़ी—बूटी चो जानतो लोग होसत, रान ने जड़ी खोजुन हुनचो दवई बले बनाउक जानसोत, ऐचो माने आय के हल्बा जात चो लोग बईध चो बुता बले करसोत। आघे दांय बस्तर ने अस्पताल नी रलोदांय अई लोग समाज ने बीमारी के उजरातो लोग रहोत। ऐबेय बले ये लोग जड़ी—बूटी चो दवई ने आगर भरोस करसोत। बईध बुता के बले ये लोग आपलो कुटुम चो सीखतो लोग के सीखवसोत। असन करते ये विदया बले गोटोक पीढ़ी ले दूसर पीढ़ी ने जायसे आरू ऐबेय बले जीवत आसे।

हल्बा समाज ने जसन मनुखमन गुनी लोग होसत, हुसने हल्बीन बायलेमन बले आगर गुनी होसत। सपाय समाज संगे चरफर रहुआत, चिवड़ा कुटुन आरू खाई—खजना भुंजुन सपाय समाज के जोड़सोत। असने काजे सपाय समाज चो लोग हल्बा समाज के मान देसोत। हल्बीन बायलेमन के सिंगार करतो नी भाये, सोजे—सोज रसोत। आगर पंडरी न आगर करिया मंजगत चो रंग होयसे, ऐमन के छुकछुका रहुक भायसे। घर—दुआर के बले दुनो पाहार बाहरसोत, लिपलो—पातलो घर के राखसोत। रांधा—गड़ा सारून आपलो बाड़ी ने बुता करसोत आरू बाड़ी के बले नंगत जतनसोत। ऐमन चो पींदा— ओढ़ा बल साजे आय, छुकछुका लुगा, साया, जमफर पींदसोत सपटाउन चूंदी कोरसोत। सोना—चांदी चो गाहना राखसोत मांतर पिदंतो मन नी करोत, अनी—अटक बेरा काजे राखु रसोत। खंगती होलेक बले घर समरातो जानसोत। घर चो मुखिया के बरमेस साहा होसोत आरू हुनमन संग घर के राखा—जाखा करसोत। आपलो बाट ले घर के समराउक नानी—नांनी हिला—बेपार करसोत आरू हाट ने घरे चो बनालो जिनीस के बिकुन पयसा कमाउन घर चलावसोत। घर के पकी समरासोत आरू आपलो मनुख के घर चो फिकर करूक नी देवोत, एई काजे हल्बा लोगमन लड़तो लोग आरू समाज ने साहा होउ लोग रसोत।

हल्बीन बायलेमन घरे होवो आरू बाहिर समाज ने रहो, खुबे मरजादा ने रसोत। कहांय बले गेलेक मुंड ले लुगा नी घसरे, बरमेस मुंड के ढाकुन रसोत। बिहा होलो बोहारी होवो के सियानिन आया होवो सपाय मुंड ढाकू रसोत आरू समाज चो मंजगत मरजादा के राखसोत। नवा बोहो के सियानिन आयामन सांगसोत के घर ने आरू बाहिर ने कसन रतो

आय, कोन लोग के मान देतो आय। जानतो लोग के नाजुन आरू नी चिनतो लोग के बले हल्बीन बायेमन मुंड ढाकुन मान देसात। समाज बले असन के खुबे धियाान दयसे। ए मन चो गोठ ने बले मरजादा दखा देयसे, काचोय संग गोठियाला जाले मान देउन गोठियावसोत। हल्बी भासा ने मान देउन गोठियाउक होयसे चे मांतर बायलेमन काचोय संगे बले गोठियावसोत, हुन नानी होवो के बड़े होवो सपाय के मान देउन गोठियावसोत। घर ने सतरा–सतरी, जेठ–जेठानी होलेक बोहो सपाय बुता के, भीतरे–बाहिर होतोदांय मुड के ढाकुन मान दयसे, ये सपाय दखातो काजे नी होये, मयके आरू सतरा घरे सपाय गोठ के सीखावसोत। सपाय लोग चो जीवतो चो गढ़न गोटके असन होयसे, कुवांरी बेटीमन आपलो भौजी, काकी के बले दखुन सीखुन रसोत।

हल्बीन बायलेमन काजे आपलो जेठ चो छांय पड़तो बले पाप आय, छिवतो नोहाय, गोठियातोदांय बले परदा चो आड़ होतो आय। असन होतो कोनी दखला जाले सपाय चो पूरे मुंहे बाखनुन देसोत हांसी नाता बितीमन डांड धरसोत। बोहोमन बले सपाय के धियान धरसोत। बाहिर नीकरला जाले आपलो सियानमन संगे जासोत, हुनमन ले गोठियालो पाछे पूछलेक गोठियावसोत। सियानिन मन संगे रलेक बरमेस मुंड ढाकु रसोत। केंबेय कोनी बुता ने गोटके बले बाहिर नीकरसोत तेब बले मुंडके ढाकू रसोत आरू आंइख के गाड़ू रसोत। इतरोय नाही घरे रलेक आपलो देवर–देवरानी, भतीजा–भतीजी, चो नाव नी घरोत, हुनमन काहीं बुता के नसाला जाले बल हुनमन के दागा नी देवोत आरू जोर ले नी गोठियावोत। बोहो आनलेक सतरी आरू जेठानी बाहिर चो बुता करसोत, नवाबोहो चो बाटा रांधा–गड़ा होयसे, आपलो ले बड़े आरू नानी सपाय के खवाउन ते खायसे। गोटोक बुबा चो जितरो पीला होसोत सपाय मिसुन गोटके सुतुर ने रसोत। रांधा–बाटा बले गोटके होयसे। बोहोमन बले सपाय मिसुन रसोत गारी–झगड़ा सुनुक नी होये। भाई बटवारा बले खुबे कमती होयसे। सियानिन मन आपलो कुलरीति ले आपलो कुटुम के जतनासोत।

——00——

हल्बा समाज चो जीवना

कोनी समाज होवो के कोनी जात चो लोग होवोत, सपाय चो जीवना जीवतो चो गढ़न ने फरक होयसे। पुरान ने सांगलो आसे के जीव नानाबरन रूप ने ये संवसार ने अयसे आरू आपलो असन, लोग असन कमायेसे–खायसे। मनुख ले दूसर जीव संवसार ने आसोत मांतर काचोय जीवना चो बाखना नी होये, सपाय आपलो असन जीवना के जीउन खपसोत। गोटोक मनुख आय जेचो जीवना के सपाय के जानुक भायसे। मनुख चो गोटोक कुटुम होयसे, नाता–गोता जोड्डुन कुटुम के आघे बड़ावसोत , कई ठन कुटुम मिसुन गोटोक समाज बनावसोत। समाज चो आपलो रीत–रूसुम होयसे, समाज चो मरजादा होयसे आरू सपाय मनुख समाज चो मरजादा ने जीवना जीवसोत। समाज चो पुरखामन बेरा–बेरा आपलो गियान ले आरू दूसर समाज के दखुन आपलो जीवना काजे रीत–रूसुम बनाला, हुनमन के लागली के दूसर समाज ने असन होयसे, ये नंगत गोठ आय, ऐके आमचो समाज ने बले होतो आय, असन के आपलो समाज चो रीत–रूसुम बनाला। असने दखला के दूसर समाज चो ये गोठ के नंगत नी मानोत असन रूसुम के छांडुन दिला, असन करते आज आमी दखुंसे के सपाय समाज चो रीत–रूसुम ने आगर फरक निहाय मांतर सपाय चो खावतो–पीवतो, पींदतो–ओढ़तो, विचार ने फरक होयसे।

गोटोक मनुख गोटोक ठान के छांडुन दूसर ठान ने जायसे, हुन आपलो ठान चो रीत–रूसुम के मानेसे मांतर हुन ठान ने जे दूसर समाज बसलीसे हुनमन चो समाज चो रीत–रूसुम ने फरक होयसे, एदांय हुन आपलो समाज चो रीत–रूसुम के दूसर समाज ले कटारे से, आगर–घाट करेसे आरू दखेसे के हुनचो आरू दूसर समाज ने काय फरक आसे। दूसर समाज चो नंगत गोठ के सीखेसे आरू आपलो समाज चो रीत के बले मानेसे। असन करते हुन चो कुटुम बाढ़ेसे, नाता–गोता होयसे, कुटुम बाढ़से आरू गोटोक समाज बनेसे, हुन दुय ठन समाज चो मिसरा रीत–रूसुम के हुनचो समाज धरेसे। असने समाज चो पुरखा लोग ऐबे के समाज के पलटुन नवा समाज बनावलासोत। आमी ऐबेय जे समाज के दंखुसे, हुन गोटोक दिन ने नी बनलीसे, हुनचो काजे कितरो जुग लागली होयदे। सपाय समाज चो पुरखामन आपलो समाज ने नवा–नवा गोठ के आपलो समाज ने आनला, नवा–नवा विचार के आपलो समाज ने ठान दिला आरू गोटोक नवा समाज के बनावला, जेके ऐबेय आमी जे समाज के दखुंसे हुन समाज सपाय ले नंगत समाज आय आरू सपाय लोग आपलो–आपलो समाज ने गरब करसोत।

बस्तर चो हल्बा जात चो लोगमन के बुलतो बितामन आत, असन माना जायसे, ये लोग चो उपजन बस्तर ने होली आरू इथाय ले ये लोग ऐ बाट, हुन बाट गेला। कोनी लोग

महाराष्ट्र चो झाड़ा फाफड़ा गेला, कोनी लोग सिहावा नगरी बाट गेला, कोनी लोग ओड़िसा चो जयपुर राज ने गेला। उथा जाउन ये लोग आपलो असन जीवना जीवला मांतर जे ठान गेला, उथा चो बोली–भासा के बले आपलो गोठ ने मिसाला, रतो–खावतो के धरला, पींदतो–ओड़तो के बले धरला असन ने ऐ लोग चो भासा हल्बी ने कितरोय असन टपी मिसड़ा होली, तेमे संसकिरीत, हिंदी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, अरबी, फारसी सपाय मिरेसे। हल्बा जात चो लोगमन चो जीवना ने जीवना जीवतो चो कितरोय रूप दखुक मिरेसे, ऐचोय काजे हल्बा लोगमन चो जीवना बस्तर चो दूसर आदिवासीमन चो जीवना ने फरक दखा दयसे। हल्बा जात चो लोग होतो ने आदिवासी चे आत मांतर बस्तर ने ऐ लोग आपलो जीवना के आपलो असन जीवसोत। बस्तर चो आदिवासीमन चो जीवना सोजे–सोज आय, खावतो–पीवतो, पींदतो–ओढ़तो बले सोजे चे आय मांतर हल्बा जात आदिवासी होले बले दूसर आदिवासी मन असन ज़ीवना के नी जीवोत।

बस्तर चो मूर ने मुरिया आत, असन सपाय मुरियामन आरू दूसर विदवान मन मानसोत मांतर हल्बा लोग बले बस्तर चो मूर ने आसोत। हल्बा लोग बले दूसर आदिवासी मन असने आपलो बरग लिखसोत, बस्तर चो सपाय देव–धामी के मानसोत, बस्तर चो माटी के पूजा करसोत, माने के हल्बा मन चो बले करम, बस्तर चो दूसर आदिवासी मन असन होयसे। रान चो उपज के सकलुन, हाट ने बिकुन आपलो जीवन के जीवसोत। खेती–बाड़ी करसोत आरू आपलो खातो पूरती धान, कोदो, कोसरा मंडिया उपजासोत। बाड़ी ने आपलो पुरती साग–भाजी बले उपजावसोत, असन दखलो ने हलबा लोग दूसर आदिवासी मन असन बस्तर ने जीवना जीवसोत। ये लोग बले रान भीतरे नंदी धड़ी ने आपलो गांव बसाउन रसोत, माने के हल्बा लोग आरू दूसर आदिवासी जे लोग बस्तर ने रसोत हुनमन चो जीवना गोटके होयसे। समाज चो बुता होवो के देव–धामी बुता जसन जातरा, मंडई, बिहा, सपाय लोग मिसुन सपाय आपलो–आपलो बुता के करसोत, दखलेक लागेसे के सपाय लोग गोटकी सुतुर चो लोग आत, ये लोग ने काहीं बले फरक दखा नी देये।

हल्बा जात चो आदिवासी आरू गोंड जात चो आदिवासी चो पूरखा मन पुरखती दांय गोटोक कुटुम के रला होयदे, तेबेय ये लोग चो सपाय करम गोटके असन होयसे मांतर गोटोक गोठ के विचार करलेक लागेसे के दुनो ने फरक आसे। दूनो जात चो आदिवासीमन ने रोटी–बेटी आरू खावतो–पीवतो नी होये। घर–दुआर आरू पींदा–ओढ़ा ने बले फरक होयसे। गोठ, बरततो ने बले ये लोग ने फरक आसे। राजा दांय गांव ने कोनी सरकारी लोग आरू पाईक इलो ने हल्बा लोग के पूरे पठावोत, हुनमन तेमन संगे गोठियावोत, रांधा–गड़ा करोत आरू गांव ले पठावोत। गांवकारी लोग हल्बा लोग के चरफर लोग आत असन मानते रहोत। ये लोग कितरोय बड़े बिपति होलेक खिडिंक ने उवाट निकरावोत। गांव ने काहीं बिपति इलेक राजा लघे जातो दांय हल्बा लोग के पूरे करून नेवोत, गांवकारी लोग ले मान पाउन असन ने ये लोग गांव आरू समाज चो बुता के धियान देउन करोत। हल्बा जात चो लोगमन गुनी लोग रहोत आरू गांव चो सियानी बले करते रहोत। गांव चो गारी–झगड़ा के बले एई लोग समराउआत। दुखा, बीमारी के बले उजरावतो लोग रहोत।

बस्तर चो हल्बा जात चो लोगमन आदिवासी असन जीवना के जीवसोत। बस्तर चो सपाय देव–धामी के मानसोत। आदिवासीमन असन आपलो बरग लिखसोत आरू सांगसोत मांतर ये लोग दूसर जात चो लोग असन हिंदू देवी–देवता के बले पूजा करसोत। हिंदू मन असन तिहार–बहार मानसोत। पुरान ने लिखलो तीज–तिहार आरू उपास–पियास बले करसोत। हल्बा जात चो सियान लोग गियानी मनुख रहोत, तेमन ताड़ पाना ने लिखलो ओड़िया पुरान के पढ़ुन हुनचो माने हल्बी ने आपलो लोग के सांगते रहोत। ओड़िया आरू हिंदू मन चो पुरान ने जितरो देवी–देवता चो बखान होयसे सपाय के ये लोग मानुक धरला। पुरान ने बखानलो देवी–देवता चो पूजा करतो दांय देव मन हरिक करतो दांय लाली, सुपारी, नड़ेर, धूप, उदबती ने पूजा कररूआत मांतर बस्तर चो देवधामी के हरिक करतो काजे चिंया, कुकड़ी, बोकड़ा चो पूजा बले देसोत। ये दुनो गोठ ने फरक होयसे मांतर हल्बा जात चो लोग आपलो असन दुनो बाटे मिसुन जासोत, असन बलुक सकुं के जेब बस्तर चो देवधामी चो जातरा, सेवा होयसे तेबे बस्तर चो असन पूजा देसोत आरू जेब पुरान चो देवी–देवता चो पूजा होलेक नड़ेर ने पूजा करसोत।

हल्बा जात चो लोगमन चो जीवना ने कितरोय असन बेरा अयसे के हुनमन विचार करूक नी सकोत के हुनमन पुरान चो देवी–देवता के मानदे के आपलो माने बस्तर चो देव–धामी के मानदे, तेब विचार करून हुनमन आपलो देव–धामी के मानसोत। असन दुय दांय होयसे, गोटोक दांय जेब नवा खानी होयसे। बस्तर ने नवा खानी भादों महेना ने होयसे, हुदलदांय दस दिन गनेस भगवान मंडाउन रसोत। दूसर आदिवासी मन असन हल्बामन चो बले नवा खानी सपाय ले बड़े तिहार होयसे। नवा खानी ने सपाय कुटुम चो लोग सकली होसोत आरू आपलो कुल देवता, गांव देवता, माटी, डूमा सपाय के मानुन नवा खावतो बनावसोत। कुकड़ा, बोकड़ा काटसोत, मंद मास खावसोत। गनेस भगवान रलेक कसन मंद मास खाथे, तेचोय काजे ये लोग हल्बा गांव ने गनेस नी मंडावोत, मंडाला बले तेके झटके बोहराउन देसोत। ऐचोय काजे बलतो होयसे के हल्बा लोग पुरान ने बखानलो देवी–देवता ले आगर आपलो माने बस्तर चो देव–धामी के मानसोत। दूसर पितर पाकदांय होयसे। हल्बा जात चो लोग चो राखा करतो देव दूसर आदिवासीमन असन डूमादेव माने पितर देव होसोत आरू आपलो सपाय तिहार ने बस्तर चो आदिवासी आपलो पितरदेव माने डूमादेव के पूजा करेसे मांतर जेब दूसर जात चो लोग भादों महिना ने पितर पाक मनावसोत हुदलदांय हिंदू लोगमन असन हल्बा जात चो लोगमन बले आपलो पितर चो पूजा करून मान देसोत। पितर पानी देसोत मांतर दूसर आदिवासी लोग पितर पानी नी देओत।

एई सपाय गोठ हल्बा आदिवासी मन के बस्तर चो दूसर आदिवासी मन ले फरक करून दूसर चिनहारी देयसे। कोनीदांय ऐ लोग चो जीवना आरू गोठ बरतती ने लागेसे के ये लोग आदिवासी नोहात मांतर ये लोग चो सपाय करम आदिवासी होवतो के जनायेसे। हल्बा जात चो जनम, बिहा, मरन सपाय जीवना बस्तर चो आदिवासी मन असन खिडिंक फरक ने हुसने होयसे जसन इथा चो आदिवासी मन मानसोत। जनम ने जचकी, छटी, बरोह, बिहा ने माहला, बिहा, गवन, मरलो ने दागी देतो, गाढ़तो, डूमा ने मिसातो सपाय बस्तर चो आदिवासी मन असन होयसे।

हल्बा लोग ने जनम रूसुम –

सपाय जात ने मनुख चो जीवना चो तीन बानी होयसे, जनम, बिहा आरू मरनी। ये तीनो के सपाय आपलो लोक रीति, कुलरीति आरू देस रीति ले मानसोत। सपाय समाज ने ए रीति मन ने फरक होयसे, अई रीति मन हुन समाज चो जेमे मनुख जीयेसे हुनचो चिनहारी आय। नवा जीव जनमलो ने सपाय जात चो लोग हरिक होसोत आरू आपलो हरिक के फटका फोडूंन, थारी पिटुन आरू दूसर उवाट करून सांगसोत। नवा लोग ऐतो के पड़घावसोत कुटुम बाढ़तो ने हरिक होसोत। दूसर जात चो लोग नवा इलो पीला, लेका होलेक आगर हरिक होसोत मांतर आदिवासी समाज हल्बा होवो के मुरिया होवो दुनों लेकी–लेका ने आगर फरक नी करोत, हुनमन काजे दुनों चो मान उतरोय होयसे। आदिवासी समाज चो विचार आय के लेका होलेक कुटुम बाढ़ेदे आरू सगामन संगे नाता बनेदे, हुसने लेकी काजे बले बनेदे मांतर दूसर जात चो लोग आपलो कुल चो बाढ़ती लेका होलेक दखसोत आरू लेकी होलेक हुनमन चो विचार होयसे के लेकी पर घर चो सोभा आय हुन दूसर घर के समरायेदे। असन आदिवासी समाज ने लेकीमन दूसर घर बिहा होउन जासोत, हुनमन चो बरग बले सगा घरो असन होयसे मांतर आदिवासी समाज ने बिन सगा चो काहीं बले समाज चो बुता नी होये। एई काजे लेकी होवो जाले लेका होवो आदिवासी समाज दुनों ने हरिक होयसे।

आदिवासी समाज हुन मुरिया होवो के हल्बा जात चो होवो ठूवा–टोटका के खुबे मानसोत, कायकाजे के सपाय चो घर ने आपलो कुल चो देव–धामी संगे डूमा देव बले रसोत तेचोय काजे ठूवा मानसोत आरू असन बायले जे महिना ने बसलीसे हुनके बंदेज करूक पड़ेसे। हल्बा जात चो लोग गुरूमुखी लोग रसोत, असन लोग चो उपरे असन

बायलेमन चो छांय बले नी पड़तो आय मांतर जेब सुहागिन बायले पेट ने अयसे तेब सपाय लोग हरिक होसत आरू हुन दिन ले हुनचो आगर देखा–रेखा करसोत, हुनचो खावतो–पीवतो के बुता सपाय के धियान धरसोत। दूसर जात ने पेटेहारी बायले के पेट ने रलोदांय गोद भराई करसोत मांतर आदिवासी समाज ने जनम चो पूरे काहीं बले नी करोत। छत्तीसगढ़ चो हल्बा जात चो लोगमन उथा चो रूसुम के सीखुन गोद भरतो चो रूसुम करसोत मांतर हल्बा जात चो ये रूसुम नोहाय। घर ने सियाानिन मन रलेक पेटेहारी के चरफर बुता करूक बलसोत, नाहलेक जनमतो दांय खुबे दुखा पावसे बलुन सांगसोत। पेटेहारी के गरन होली जाले बाहिर निकरूक नी देवोत नाहलेक जनमतो पीला गरन खंडिया होयदे असन मानसोत। मुंह, ओट खेबड़ा होयदे असन बलसोत।

हल्बा जात ने जचकी सतरा–सतरी घरो होयसे, ऐचो काजे मांय घरो जाउक नी पड़े मांतर जे सतरा–सतरी ने सियानिन मन नी होलेक आरू जचकी पाछे बुता करतो लोग, देखा–राखा करतो लोग नी रलेक असन पेटेहारी के मांय घरे बले पठावसोत। असन बले होउक सके के मांय घरे असपताल, नरस, नंगत होलेक आरू मयके ने सियानिन मन होलेक बले सपाय लोग चो विचार होलेक जचकी काजे मयके पठावसोत। पूरेदांय गांव–गांव ने सुइनमन रहुआत, ये नानी जात चो सियानिन बायलेमन आत, जे जचकी करातो बुता करू आत, असन बायले गांव ने होलो ने हुन गांव चो पेटेहारी के मयके नी पठावोत। सुइनमन बले जचकी बुता के नंगत करूआत, ये लोग के खबर मिरली जाले जचकी दिन ले पेटेहारी चो देखा–राखा करूक मुरियाउक धरसत। पेटेहारी के सांगसोत असन रतो आय, असन खावतो–पीवतो आय, सपाय सांगुआत। जचकीदांय ये मन के असन लागेसे के जचकी बेरा गुचेसे के पेटेहारी खुबे दुखा पायसे, खिंडिक बले काहीं नसली बललेक सुइनमन नरस, डाकटर बलाउक, नाहले असपताल नेउक बलुन देसोत। जचकी चो पाछे पीला के सकलतो बरनतो बुता बले सुइनमन करोत। सेकतो रगड़तो बुता बले सुइनमन करसोत। ये लोग के गांव चो लोग छटी दिन इलो गांव भर चो चाउर–दार संगे आपलो बाट ले लुगा पयसा देउन मान–दान करसोत। पूरेदांय गांवमन ने असन जचकी होते रहे।

जचकी होलो पाछे पीलाहारी के नंगत देखा–राखा करसोत, दुय, तीन दिन हुनके भूंय ने पांय मंडाउक नी देवोत। पीलाहारी बले आपलो नंगत सकला करेसे पानी बले कडरी ने कटारून पीयेसे। जनमलो पीला के मांय चो गोरस पीयावसोत। पीला हारी के जचकी दिन काहीं खाउक नी देवोत। जचकी पाछे पीलाहारी चो देह ने सकत नी रहे ऐचोय काजे हुनके दूसर दिन ले तिल, गुर आरू जड़ी–बूटी संग बनालो काकेपानी (ककईपानी, कसा पानी)

लाडू देसोत। आदिवासी समाज असन हल्बा समाज बले मानेसे के हुनचो कुल चो मरनहार हुनी कुल ने जनम धरेदे। जनमलो पीला चो गागतो, खेलतो ने सियान मन जानसोत के हुनी सियान पीला चो रूप ने आमचो कुल ने फेर जनम धरलोसे। जनमलो पीला आगर गागलो जाले घर चो मुखिया गांव चो सियान मन के सांगेसे, असन जानतो बिता सियान पीला के दखुन उवाट सांगसोते के हुन कसन करलो ने नी गागेदे। गोटोक जनमलो पीला खुबे गागते रहे, गांव चो सियान ऐउन सांगलो के आमी खावतो पीवतो लोग आव कुल चो कोनी सियान इलोसे जाले तेके तरपून दखू। मंद आनुन तरपला हुन पीला गागुक छांडलो। असन गोटोक आरू गोठ होली, गोटोक पीला आगर गागते रहे, सपाय उवाट करून थाकला तेबे पंजियार के हांक दिला, हुन ऐउन दखलो आरू उवाट सांगलो के कुल चो कोनी सियान आय, काहीं चिनहा देउक बला, घर चो मुखिया बललो के कुल चो सियान आस जाले गागुक छांड सोन चो बारी नाहलेक चांदी चो खाडू चिनहा देउदें। इतरो बलतो होली आरू पीला गागुक छांडलो। गागतो पीला काजे हल्बा समाज ने असन कटाव करसोत।

पीला चो छटी छय दिन ने नाहलेक बारा दिन ने मानावसोत। छटी पीला चो नार–बोमली झड़ली बललेक मनावसोत। छय दिन ने सपाय गांव चो सियान आरू नाता–गोता चो लोगमन के बलावसोत, हुन दिन सपाय दाड़ी बनावसोत। पीलाहारी आरू पीला के बले हुन दिन नहाउन सुध करसोत नवा कपड़ा पींदावसोत। छटी दिन चो पाछे पीलाहारिन घर चो भीतर–बाहिर होउक सके। बारा दिन पाछे गोटोक दांय गांव चो सपाय दाई–माई के नेवतसोत। नेवता देतो बिती फलाना घरो छटी आय नाहलेक तील–गुर आय नाहलेक काके–पानी आय बलुन नेवता देयसे। ये दिन गांव चो सपाय दाई–माई लोग तिल–गुर खाउक आपलो घर ले चाउर–दार धरून आरू समरथ लोग पयसा, नवा कपड़ा पीला काजे आरू पीलाहारी काजे आनसोत। इथा ऐउन पीला के आरू पीलाहारी के चाउर टीकसोत पयसा आनलो पयसा धरासोत, नवा कपड़ा आनलो लोग हुनके ओढ़ावसोत। घर चो लोग सपाय के बठासोत, सपाय के सरई पाना ने तील–गुर आरू काके पानी देसोत। काके पानी अबगो पानी मयदा छोला, रसना जड़ी के चूड़ाउन घीव लसुन ने बघारलो रहेसे, ऐके काके पानी बलुन देसोत। तिल–गुर आरू काके पानी गांवकारी मन हरिक बेरा ने मुंह के मीठ बनातो काजे देसोत। समरथ घरो भात बले खवावसोत, ऐके छटी भात बलसोत।

छटी दिन जनमलो पीला चो नाव बले ठोवसोत, ऐबेय चो लोग नाव राखतो काजे दूसर लोग के दखा–दखी बामन, बयरागी ले नाव चो मूर टपी पूछुंन नाव ठोवसोत मांतर पुरखती दांय असन नी होते रहे। नाव घर चो सियानमन ठोउआत। ऐबेय बले भीतरे गांव ने जे ठाने आउक–जाउक नी होय, बामन, बयरागी मिरतो नी होये असन गांव ने पुरखती दांय असन नाव ठोवसोत। पूरेदांय नाव ठोवतो काजे हुन दिन के दखत जे दिन पीला जनमु रहे, हुन दिन असन काय अचरज चो गोठ होली, कोन महिना आय, कोन दिन आय, सपाय के दखुन सियानमन नाव ठोउआत। असन हल्बा गांवमन ने पांजी–पंजियार होउ आत हुनमन पतरा दखुन पीला चो नाव सांगुआत आरू गांव चो लोग हुनी नाव के धरूआत। पतरा दखुन नाव ठोवतो के बामन चो नाव सांगतोय असन माना जायसे। पंजियार मन बले सपाय सगुन के विचारून पीला चो नाव ठोउआत। जसन गोटोक पीला भरदर घाम ने होउ रहे अचरित गोठ ये होली के हुन दिन खुबे बरखा होली, सपाय बाटे तर–बतर पानी–पानी होली। गोटोक सियान पतरा दखुन नाव विचारलो के ऐचो नाव जलदेव होयदे। दूसर सियान बले आपलो पांजी पतरा के दखुन विचार करून हुन पीला चो नाव दूसर सांगलो। दुनों नाव के लोग ऐबेय बले धरसोत।

हल्बा समाज चो लोग दूसर आदिवासीमन असन बले नाव ठोउआत, असन जानतो सियानमन मेड़गनतेया करून बले नाव ठोउआत मांतर मेड़ गनती कसन करूआत, जानुक नी होली असन सांगतो लोग ऐबेय नीहांत। इतरोय सांगला महेना चो गनती करून सगुन विचार करतो के मेड़ गनती करतो बलते रहोत। मेड़ गनती ने महेना चो नाव आरू कितरो दिन गेली हुन पीला चो जनमलो हुन दिन काय अचरित होली सपाय गोट के विचार करूआत। गांव ने असन लोग बले नी होलेक पीला चो नाव हुनचो कोनी पुरखा चो नाव ने ठोवत, जेक समाज काहीं गुन काजे जानते रहे। असन सियान चो नाव घर चो लोग सांगत तेके सपाय विचार करून नाव ठोते रला। सपाय ले पाछे दिन चो नाव असन बले नाव ठोवत। हल्बा जात चो लोगमन चो नाव दिन असन होयसे तचोय काजे लागेसे के असन बले नाव ठोवते रहोत। कोनी–कोनी कुटुम ने पीलामन जनमलो पाछे मरी होते रहोत, असन परिवार चो मुखिया मनता मानुआय के पीला चो झालर देव ठान ने करेंदें, असन पीला चो झालर माने चूंदी ठोउन हुनके गुड़ी ने झालर झोकनी करूआत। असने कोनी–कोनी परिवार ने पुरखती दांय ले काने छेदातो रूसुम आसे, कुपालमन चो परिवार ने ऐबेय बले असन होयसे, चार–पांच बरख होलो ने पीला चो कान छेदावसोत।

हल्बा जात चो लोगमन चो जीवना दूसर जात चो लोग असन आरू हिंदू लोग असन दखा दयसे मांतर ये लोगमन असन आपलो सपाय करम नी करोत, एई गोठ ले

जनायेसे के हल्बा लोग चो जीवना दूसर आदिवासी मन ले फरक खायसे मांतर सपाय गोठ आदिवासी मन असन करसोत। बाढ़लो पीला चो बरवा करतो सुनुक नी होये। बाढ़तो पीला आपलो कुटुम चो फेर आपलो कुटुम चो पाछे समाज चो मरजादा सीखेसे आरू हुनके आपलो जीवना ने घटायेसे। पीला आठ–दस बरख चो होलो ने आपलो घर चो बुता बले करूक लागेसे, खेती–बाड़ी ने धियान दयसे। सियानमन चो तियारलो सपाय बुता के करेसे। पंदरा–सोला साल होलेक हुनचो बिहा चो तियारी करसोत।

माहला (सगाई)

बलसोत के मनुख जीवना ने जमनतो, बिहा होतो आरू मरतो सपाय भगवान चो हात ने होयसे। मनुख मूरत गढ्ढुक सकस मांतर मनुख गढ़तो हुनचो हात ने नी रहे। बिहा काजे बले जनम धरलो मनुख चो जोड़ी पूरे ले बनु रहेसे बलसोत। मनुख चो मरतो के बले जानी नी होये। मरनी मास बाहना खोजेसे बलसोत, मनुख लिखड़ी ने मरून जायसे। ए सपाय गोठ मनुख के चेताते रसोत के तुय काहीं नोहास, तुचो सपाय करम चो बेरा गनती करेसे आरू आपलो हिसाब ले इथाय तुके तुचो करम चो फर मिरेदे। मनुख जनम धरलेक सपाय हरिक मनावसोत, हुसने बिहा करतोदांय बले सपाय हरिक होसत। जनम धरलेक बलसोत के कुटुम बाढ़ली, बंस चो नाव करतो बिता इलो, असन काजे हरिक होसोत। बिहा करतो दांय सपाय लोग के लागेसे के दुय ठन कुटुम जोडी होली, सगा–नाता बाढ़ला आरू समाज ने दुनों कुल चो नाव होयदे। कुटुम फेर नाता–गोता ले समाज गढ़ेसे। समाज चो आपलो–आपलो रीति–रूसुम होयसे सपाय लोग समाज चो मरजादा ने बंधु रसोत। मनुख चो जीवना असने सपाय कटाव ने होयसे आरू मया चो डोरी ने बंधु रहेसे। मनुख जीवत भर मचो, तुचो करेसे, जीवना भर सकलेसे, मरतो बेरा गोटकी पड़ेसे मांतर जीवना ने हरिक होतो बेरा के नी छांडे।

बिहा ने असने दुय ठन कुटुम नी जोड़ी होवोत, हुनचो काजे सगा–सील आरू नाता गोता चो लोग उवाट करसोत, तेब दुय ठन कुटुम जोड़ी होसोत। भगवान चो गढ़लो संवसार ने मनुख–बायले चो जोड़ी बनलो आसे, कोनी बले होवो गोटोक चो बिन दूसर चो बुता नी होये। बलसोत के मनुख–बायले चो जोड़ी जनम चो पूरे ले भगवान घर ले बनुन रहेसे। इथा सगामन हुनमन के मिसातो बुता करसोत। मनुख आपलो समाज ने बिहा करेसे, पुरखा दांय ले गढ़लो समाज ने बरनबानी सगा रसोत, सपाय चो बरग ने फरक होयसे, असने जे बरग ने हुन बरग चो लोग बिहा करूक सकसोत, हुन बरग ने बिहा होयसे। बस्तर

बस्तर चो हल्बा जात चो लोगमन ने बिहा दांय फरक देखुक होयसे। दुखा बेरा सपाय हल्बा जात चो लोग सकली होवसोत मांतर हरिक बेरा सपाय चो सिंग बाढ़ेसे, सपाय दांव खोजसत। हल्बा समाज के कितरोय भाग ने बाटलो आसे, जसन बस्तरिया हल्बा आरू छत्तीसगढ़िया हल्बा, ये दुनो चो मंजगत बिहा नी होये। बस्तरिया हल्बा जात चो लोगमन बले दुय भाग आसोत, अठारा गढ़ आरू बत्तीसगढ़, ये दुनो ने बले बिहा नी होये। अठारागढ़ ने बले पुरहित आरू सुरहित बनालो आसे ऐमन चो मंजगत बले बिहा नी होये। हल्बा जात ने लेका--लेकी खोजतो सोज नोहाय। खुबे पूछा--पछारा करूक लागेसे।

हल्बा समाज ने लेका काजे लेकी खोजसोत, इथा ये सांगतो नीक लागेसे के हल्बा समाज बले दूसर आदिवासी मन असन लेका--लेकी के गोटके मानसोत, ये बिहा दांय दखा दयसे। लेका काजे लेकी खोजसोत, ऐचो पूरे हुनमन खूबे पूछा--पछारा करसोत। लेका बिहा चो लाइक होलो ने सगामन के सुतरावसोत, सांगसोत के ऐसू बोहारी आनेदें, कोनी बाटे लेकी होलेक सांगा नाही जाले कोनी बाटे डगरावा। बिहा करतो गोठ के सपाय बाटे बिगराउन देसोत आरू आपलो बाट ले बले लेकी खोजसोत। खोजतो लोग के जान पड़ेसे के फलना गांव ने लेकी आसे, तेब हुनमन आपलो सगा के सांगसोत के तुमचो गांव ने लेकी आसे, पूछा--पछारून सांगा। जेबे सपाय गोठ पड़ेसे ते हुन गांव चो सगा के धरून हुनमन चो धरे जासोत आरू सांगसोत के "आमचो धरे गोटोक लेका बिहा करतो लाइक होलोसे ऐसू आमी बिहा करूदें। तुमचो धरे बले लेकी बिहा लाइक होलीसे तुमचो काय विचार आय"?लेकी धरो लोग बलसोत के "सते आय बिहा लाइक लेकी आसे मांतर लेकी मचो नाही सपाय गांव चो बेटी आय, सपाय के पूछलो नाहलो मय सांगुक नी सके। असने गोठ होलो पाछे लेकी चो घर चो लोग बलसोत फागुन धुरी बाहिर ऐहा, मय सपाय संग विचार करून सांगेदें। ऐचो पाछे हुन धुरी बाहिर गोटोक दिन खबर पठायेसे, हुन ने सपाय जुहसोत। ये माहला नोहाय ऐके सोरी--डोरी बलसोत। ऐचो माने होयसे पूछा--पछारा करतो।

पहेली माहला --: लेका घर चो लोग के पहेली माहला ऐतो काजे लेकी घर चो लोग गोटोक दिन ठोउन खबर पठावसोत। खबर पाउन लेका घरो लोग आपलो नाता--गोता चो लोग आरू सगा मन के सकलुन चिवड़ा--गुर चो जोड़ा धरून हुन दिन लेकी घरे जासोत। हल्बा लोग आदिवासी आत मांतर ये लोग चो माहला ने मंद--मास नी होये। इथा लेकी घरो लोग बले आपलो नाता गोता आरू सगामन के सकलुन रहेसे। अमरून हात--पांय धोउन सपाय बठसोत फेर गोठ होयसे। लेका बाट चो कोंही हांसी नता बिता बलेसे "सुनलो आसे तुमचो घर फूल फूटलीसे ऐके फलाना गांव चो फलाना बरग चो लोग आपलो घरो सोभा बनातो काजे विचार करेसोत"। लेकी बाट चो कोंही सियान बलेसे के "सते आय फूल आसे

जानु हुनके घर ने राखुक नी होये, दूसर घरे जातो बिती आय मांतर दुनों चो भाग ने होयदे जाले जोड़ी बनेदे जानु"। ऐचो पाछे दूसर गोठ होयसे। गोठ सरतो के सपाय लेकामन बाट ले आनलो चिवड़ा–गुर के मिसुन खावसोत। लेकी बितामन सगा मानसोत सपाय लोग के दार–भात खवावसोत। गांव भर ने ये गोठ बिगरेसे पूछतो लोग के सांगसोत के आमचो घरो नोनी काजे बर उतरलासोत, कांही गोठ नाजुन मांतर गोठ होयसे। सपाय जानसोत के माहला होउक मुरियावली। गोटोक दिन समराउ रसोत हुन दिन दूसर माहला ऐसोत।

दूसर माहला –: हल्बा समाज ने लेकी देखतो रूसुम नी होये, लेका–लेकी इक–दूसर के नी देखोत मांतर दुनों चो मन केब मांडु आय, लेका लुकुन भांती लेकी चो गांव अमरेसे आरू उथा आपलो मीत बनायेसे। लेका लुकुन लेकी के दखेसे आरू लेकी, लेका के दखसे। ये सपाय गोठ दूसर माहला चो पाछे होयसे। दूसर माहला ने बिहा चो नाता जोड़ी होयसे, हुनके दुनों बाट ले टुटाउक नी सकोत। कोंही बाट ले बल नाता टुटली बलले, हुन दूसर बाट के दांड देयदे। ऐचो माने आय के दूसर माहला ने बिहा चो गोठ बरकस होयसे। दूसर माहला ने लेका बाट चो लोग आरू लेकी बाट चो लोग जुहसोत, गोठ बात होयसे। बिहा कसन करतो आय सपाय लोग विचार करसोत। हल्बा समाज ने बिहा दुय गढ़न ले होयसे गोटोक के "चढ़ बरात" बलसोत आरू दूसर के "ठेंगा बरात" बलसोत। चढ़ बरात ने दुलहा के निकराउन सपाय गांव भर चो आरू नाता–गोता चो लोग दुलही घरे जाउन सपाय नेंग के करसोत आरू भांवर पाढ़ुन दुलही के आनसोत। ठेंगा बरात ने बरात धरून, लगीन मारून आनसोत। दूसर माहला ने बिहा चो सपाय गोठ के टुटावसोत। एई माहला ने दुनो कुटुम जोड़ी होसोत आरू कुर बांधतो दिन बिहा गोठ समरावसोत।

तीसर माहला –: हल्बा जात समाज ने बेटी देतो पूरे लेका बाट चो लोग लेका धर के आरू लेका के दखुक ऐसोत मांतर घरे नी ऐवोत। आपलो सगामन घरे ऐउन दखुन जासोत। लेका बाट चो लोग के बोहो नेतो गरज रहेसे। माहला काजे तीन दांय ऐतो होयसे। तीसर दांय के कुर बांधतो बलसोत। तीसर दांय ने बिहा मंडावसोत, केबेय मांडो होयदे, केबेय देव तेल केबेय लगीन आरू बिदा केबेय होयदे, तीसर माहला ने ऐ सपाय के विचार करसोत। लेकी बाट चो लोग खबर पठावसोत के कुर बांधुक ऐहा, तेब दुय तीन झन सगा के धरून लेका बाट चो लोग ऐसोत। तीसर माहला ने बिहा केब करवां ये गोठ होयसे। लेका बाट चो लोग दिन ठोउन ऐउ रसोत मांतर लेकी बाट चो लोग बलसोत के जोड़ा करतो काजे बेरा देहास। असन घटाते–बढ़ाते गोटोक दिन ने अमरसोत आरू बिहा करतो दिन

मंडासोत। मांडो केब होयदे, देव तेल केब करवां, लगीन आरू बिदा केब होयदे गोठियाउन सपाय के सांगसोत। ऐके कुर बांधतो बलसोत। मांडो, देव तेल, लगीन, दुनों बाट चो लोग के जानु रतो आय कायकाज के चढ़ बिहा ने बले लेकी–लेका दुनो के नेंग करतो होयसे आरू ठेंगा बरात ने बले सपाय नेंग दुनों बाट करसोत।

इतरो सपाय गोठ मांडली जाले पूरे दांय लेका बाट चो लोग तीसर माहला ने तियारी ले जाउ रहु आत आरू एई दिन "फलदान" चो नेंग करूआत। फलदान करतो काजे दुलहा बाट चो लोग दूलही काजे सपाय सिंगार चो जाक–जमक धरून जासोत, सगामन के सांगसोत के ऐबेय फलदान करूदें, सपाय बलसोत फलदान करतो आय ऐबे करा के केबेय करा, बिहा गोठ मांडलीसे। लेकी के घर चो सियानिन मन समाज चो पूरे निकरावसोत, आनलो सिंगार के दूलहा चो बुबा नाहले बड़े भाई लेकी चो ओंटी ने डारून दयसे, ऐचो माने होली के ऐब ले दूलही आमचो घर चो होली। लेकी सपाय जुहलो सियानमन चो पांय पड़से, सपाय ऐचो पाछे सुख चिवड़ा–गुर खावसोत आरू लेकी घरो लोग सगामन चो मान काजे दार–भात खवावसोत।

हल्बा समाज ने बर बिहा काजे लेका–लेकी चो बरख चो पूरेदांय खुबे मान रहे, सांगसोत के लेकी चो महेना होलो ने बिहा नी होते रहे। एई काजे पूरे चो लोग बर नी उतरलेक लेकी चो कांडा–बारा करून देवोत। कांडा–बारा हुसने आय जसने बामनमन आपलो लेकामन चो बरवा करसोत। बामनमन चो बरवा ने पयता (जनेउ) पींदासोत मांतर कांडा–बारा ने बले दूलहा आरू दाइज नी होये, बिहा चो सपाय नेंग लेकी के करून छांडुन देसोत, पाछे कोंही बले चांउर टीकून, चूड़ी–लूगा बनाउन तेके समाज चो पूरे नेउक सके। बेरा बाढ़ते गेली विचार ने बले फरक होली, समाज चो सियानमन विचारला नानी दांय बिहा चो गोठ नंगत नी लागे, एचोय काजे ऐबले 20–25 बरख पूरे हल्बा समाज ने बिहा पंदरा ले सतरा बरख ने करते रहोत मांतर समाज ने बले पढ़तो लिखतो बितामन बाढ़ला, लेकी के बले पढ़ाउक धरला, पढुन लेकीमन बले नवकरी करसोत आरू सरकार अठारा बरख ले बाहिर बिहा करतो चो कानून बले बनालीसे, ऐचोय काजे ऐबेय बिहा 22–24 बरख ने होयसे। हल्बा समाज ने ऐबेय ले 10–15 बरख पूरे चढ़ बरात के खुबे मनियावोत मांतर ऐबेय गोटकी दिन चो बिहा होयसे। बिहा करून इला बललेक सपाय जात चो लोग आरू समाज के खवासोत–पीयावसोत। हल्बा समाज ने कोनी रूसुम छांडलो निहाय मांतर बेरा ने फरक करलासोत। तीन दिन बिहा के गोटकी दिन बनाला आरू सपाय नेंग के ऐबेय बले करसोत।

हलबा समाज चो बिहा –

बस्तर चो हल्बा समाज ने बिहा दुय गढ़न चो होयसे गोटोक के चढ़ बरात बलसोत आरू दूसर के ठेंगा बरात बलसोत मांतर दुनों बरात ने लेका–लेकी बाट नेंग सजीम होयेसे। जितरो नेंग लेका बाट चो सुवासिन मन करसोत उतरोय नेंग लेकी बाट चो सुवासिन मन करसोत। असन ने गोटोक बाट चो नेंग के जानलो ने दूसर बाट चो नेंग जानी होयदे, काहीं फरक होलो ने सांगुक होयदे। पुरखती दांय बिहा थेबली जाले जोड़ा करतो काजे साल भर लागते रहे, हुदलदांय सपाय गोठ चो खंगती होये, घेनुकलाय मंड़ई चो बाट दखुक पड़े, तेचोय काजे जसन–जसन लेका–लेकी बाढ़ते जावोत आरू जोड़ा बले संगे–संग होते जाये। बरतन–भांडा, सोना–चांदी, कपड़ा–लता, दार–चांउर सपाय जोडुक लागु आय। गांडा बाजा बिन बिहा कसन होउआय, तचो बले पूरती करूक लागुआय। नाचलो–कुदलो नाहलो बिहा, बिहा असन नी लागे। सपाय जाक जुहली जाले फेर छापर डारा बले आनुक गांव चो लोग के गोहार करोत। मांडो काजे छापर, रांधा–बाटा काजे छापर, घाम दिन होलेक सोवतो काजे छापर सपाय बनाउक लागुआय। असन सपाय तियारी करून बिहा करतो होउ आय। बिहा ले महेना भर पूरे नाहले पंदरा दिन पूरे धर चो मुखिया आपलो कुलदेवी आरू दूसर देवमन के सुमरन करून पूजा करू आय आरू मानता बले मानु आय। ऐके "सीक धरतो" बलसोत।

बिहा चो पहेली नेंग दूलहा निकरातो होयसे,ये नेंग ने दूलहा के धोती–कुरता पींदाउ मुंड ने पागा बांधुन, घर चो मुखिया आपलो देव खोली ने नयसे। इथा सपाय पूजा करतो चो जोड़ा रहेसे। घर चो मुखिया आपलो कुल देव के पूजा करेसे। तेल–हरदी के आपलो देवके छिछेसे, फेर दूलहा उपरे बले तेल–हरदी चो टीका मांडुन छिछेसे। बिहा काजे आनलो कडरी के दूलहा चो खांद ने ओराउन देयसे आरू चांदी चो नवा सूता के पींधांउन दयसे। सूता ने गोटोक फूंदड़ी रहेसे। घर चो मुखिया संगे परिवार चो सपाय लोग आपलो कुल देव के पांय पडुन बिनति करसोत के "हे देव आमचो कुटुम ने हरिक बेरा इलिसे, तुमके गोहार करूसे, काहीं बले अनी–अटक इलोने तुय समरावसे, सपाय नंगत होलो ने तुचो मान करूदें"। असन बलुन सपाय पांय पड़सोत। ऐचो पाछे दूलहा के घर ले बाहिर निकवसोत आरू गोटोक लघे ठान देसोत, हुनी ठान ने बिहा सरत ले रहेसे। ये सपाय बुता के घर चो मुखिया नाहले घर ने सिरहा नाहले पुजारी रलोने हुनमन करसोत। असने सपाय बुता दूलही बाट चो लोगमन बले करसोत। आपलो घर चो बुता के आपलो देव के सुमरना करून मुरियावसोत। अई आदिवासीमन चो चिनहारी आय।

जतली धरतो नेंग — कोंही जात चो बिहा होवो सुवासिन बिन नी होये। सुवासिन बिहा होलो बायले मन के बलसोत। गांव चो बिहा होलो सातझन बोहा, बेटी के आपलो घरे चो बिहा होतो ले पूरे नाव टीपू रसोत हुनमन के जतली धरतो दिन नवा लुगा देसोत, हुनके पींदसोत फेर दूलहा चो मांय बिती सपाय चो ओटी भरेसे, सपाय चो ओटी ने खिंडिक–खिंडिक सात दांय चांउर के डारून देयसे, ऐके ओटी भरतो बलसोत हुनके हुनमन करहान ने खोचसोत, गोटोक कलसा बारू रसोत। सपाय सुहासिन मन चांउर पीसान घोरलो ने जता, मूसर–बाहना आरू भीति ने हात चो बाना देसोत, ऐके "हाता" देतो बलसोत। सुवासिन मन कलसा चो पूजा करसोत गौरी–गनेस चो बले पूजा करून जता ने उड़िद आरू मूसर–बाहना ने हरदी कूटसोत, अई हरदी के देव तेल काजे माता गुड़ी नेसोत आरू उड़िद चा बोबो मांय पूजा दिन बनावासोत। जतली धरतो दांय सपाय सुवासिन गीत गावसोत हांसी करसोत। दूला चो माय बिती सपाय के मुंह मीठ करूकलाय चिवड़ा गुर देयसे ये सपाय नेंग के "जतली धरतो नेंग" बलसोत। बिहा चो सपाय नेंग सातो सुवासिन मन करसोत।

चूलमाटी जातो नेंग — गांव चो खरका डांड चो माटी के खुबे पवितर मानसोत, इथा गांव भर चो गाय–गोरू चरून इलेक बठुन सुसतावसोत। गाय चो गोबर आरू मूत ने इथा चो माटी पवितर होउ रहेसे, ऐके सपाय मेहरार मन बाजा–गाजा संग जाउन पूजा करून आनसोत। चूलमाटी जातो दांय गोटोक घर चो बोहो के कलसा बोहाउन रसोत। गोटोक सुवासिन साबल धरेसे। हुन साबल के पूजा करून हुनने गोटोक नवा कपड़ा बांधू रसोत। गोटोक सुवासिन कोपरा ने पूजा करतो जाक–जमक धरू रहेसे, सपाय संगे दूलहा नाहले दूलही चो मांय बले चूलमाटी काजे जायसे। पूरे–पूरे बजनुया मन बाजा बजाते रसोत आरू मंजगत गांव चो धांगड़ी लेकी, सुवसिन मन ददरिया नाहले लेजा गीद गाते जासोत। खरका डांड ने अमरून गोटोक ठान के पानी ने लिपसोत आरू उथा कलसा के मंडाउन माटी, कलसा आरू साबल चो पूजा करसोत। पूजा करलो पाछे दुय ठान चो माटी कोड़सोत, गोटोक ठान चो माटी के मांय बिती आपलो ओटी ने धरेसे आरू गोटोक ठान चो माटी के कोपरा ने धरून, जसने गाते बजाते जाउ रसोत हुसने गावते–बजाते फिरसोत। फिरतो दांय बाट ने आमा चो गोटोक खांदी के बले आनसोत।

मांडो गाड़तो नेंग — बिहा चो सपाय ले पूरे चो नेंग मांडो गाड़तो होयसे, कायकाजे के अई मांडो चो खाले सपाय नेंग होयसे आरू धांगड़ा–धांगड़ीमन नाचसोत बले। मांडो गाड़तो के गांव चो माटी गांयता करेसे, हुनके पूरे सांगु रसोत के आज बिहा ने मांडो होतो आय ए बुता के तुके करतो आय। गांव चो माटी गांयता रान ने गोटोक महू रूख चो खांदी

आनेसे आरू घर ले लाफी बठु रहेसे, ऐके आनुक बाजा धरून सुवासिन मन जासोत आरू पड़घाउन आनसोत। घर अमरलेक पानी ओंयचून पड़घावसोत, गांयता माटी मांय चो सुमिरना करून पूजा करेसे आरू आपलो आनलो महू के मांडो चो मंजगत खुटा संगे गाड़ून देयसे। सपाय लोग आपलो गांव चो माटी गांयता चो पांय पड़सोत। घर चो लोग गांयता के नवा धोती आरू अंगोछा देउन मान करसोत। चूनमाटी ने आनलो माटी जेके आया ओंटी ने आनेसे, हुनके महू खांदी गाड़लो खेदरा ने डारसोत आरू दूसर आनलो माटी ने मांडो के बरनसोत, ऐके चिरचोली बलसोत।

चिरचोली नेंग — पं. केदार नाथ ठाकुर आपलो पुसतक बस्तर भूषण ने लिखलासोत के चिरचोली ने खरका डांड चो माटी ले मांडो के लिपून पवितर करसोत। खरका डांड गांव भर चो गाय–गोरू चो सुसतावतो ठान होयसे। इथा चो माटी ने बरनलो मांडो के हल्बा जात चो लोग खुबे पवितर मानसोत। सुवासिन मन सपाय मिसुन चिरचोली गीद गावते गुलाय मांडो के बरनसोत। कुमहार घर ले आनलो सात ठन टांडी के गोटोक उपरे गोटोक राखुन हुनके बांवस खपची ने बांधुन देसोत। लिपलो मांडो ने फर बाना भरसोत, ऐके चउक पूरतो बले बलसोत। मांडो चो चारो खुट दीया बले बारसोत, ऐचो पाछे दूलहीन नाहले दूलहा के आनसोत आरू सुवासिन अंगठी धरून हुनके गोटोक भांवर मांडो के किंजरायेसे।, फेर हुन बठुन मांडो ने गोबर चो बनालो गौरी गनेस आरू कलसा चो पूजा करेसे। चूनमाटी गेलो बेरा फिरतो दांय आनलो आमा खांदी के मांडो खुटा लघे खोचून देयसे। ऐचो पाछे सुवासिन मन मांडो आरू दूहला नाहलो दूलही के तेल–हरदी चेघावसोत। बिहा ने पहेली दिन इतरो नेंग होयेसे।

देव तेल — कोनी बले समाज होवो हरदी–तेल बिन बिहा नी होये। बलसोत के जांगर ने हरदी–तेल घसलो बिन हुनचो जीवना नी होये। जीवना ने तीन दांय हरदी–तेल घससोत। पहेली ने छटी दांय पीला चो जनमलो पहार हरदी–तेल घसुन मांय आरू पीला के नहावसोत। दूसर दांय बिहा होयेसे तेबे दूलहा–दुलहीन के हरदी–तैल चेगासोत आरू बाचलो के सपाय देह ने चुपड़ुन देसोत। तीसर दांय मनुख चो मरलो पहार, जेबे जीव निकरेसे काठी ने मंडातो चो पूरे तेल–हरदी मनुख चो देह ने घससेत। आदिवासी होवो के बस्तर चो दूसर समाज आपलो कांही बले बुता देव चो सुमरलो बिन नी होये। बिहा चो दूसर दिन सपाय माता गुड़ी ले तेल–हरदी आनुन दूलहा नाहले दूलही के चेगालो बिना बिहा नी होये। देव तेल जातो चो तियारी रात के करू रसोत। माजा गुड़ी चो पुजारी के खबर देसोत के काली देव तेल काजे ऐउदें। सात ठन रसोई बनाउन रसोत पंछा नाहले धोती पुजारी काजे जे चो जितरो सकत होयसे रोसोई संग जोड़सोत आरू हरदी तेल धरून माता गुड़ी जासोत।

देव तेल काजे घर चो लोग आरू सुवासिन मन बिहान ले नहाउन तियार होसोत आरू सपाय जाक के धरून बाजा बजाते माता गुड़ी देव तेल काजे जासोत। माता गुड़ी ने जाउन पुजारी के सपाय जिनीस के पुजारी के देसोत, हुन माता चो सुमरना करेसे आरू पूजा करेसे। देव तेल काजे आपलो दोनी मन ने राखलो तेल–हरदी के माता चो उपरे चेगायेसे आरू धोती रोसोई के राखुन हरदी–तेल चो दोनी के फिरायेसे। सपाय पांय पडुन बाजा बजाते फिरसोत। कोनी–कोनी गांव ने दुय ठन माता गुड़ी होयसे असन गांव ने दुनो गुड़ी ले देव तेल आनसोत। कोनी–कोनी गांव देव गुड़ी खुबे लाफी होयसे, असन गांव चो लोग माता चो पुजारी के पूरे ले सांगुन देउ रसोत के आमचो गांव ने देव तेल आय तुके आउक लागेदे। माता पुजारी देव चो बुता आय बलुन, हुन गांव ने ऐउ रहेसे। गांव चो सुवासिन मन हुन ठान ने जे ठान पुजारी रहेसे देव तेल काजे जासोत। इथा पुजारी भूंय ने पानी छिछुन रोसोई संगे आपलो पंछा के ओछायेसे आरू माता चो सुमरना करेसे, माता चो नाव ने आनलो हरदी–तेल के चेगायेसे, इथा बले धोती, पंछा आरू रसोई के पुजारी धरेसे हरदी–तेल के फिराउन देयसे, हुनके धरून सुवासिन मन बाजा बजावते फिरसोत।

देव तेल बिहा घर अमरलेक पानी ओंयचून हुनके पड़घाउन मांडो ने आनसोत। सुसतालो पाछे दूलहा नाहलो दूलहीन के आनुन मांडो ने बसावसोत। देव तेल चेगावतो दांय हुनमन के कोरा ने बसाउन रसोत। पूरे घर चो सपाय सियान, सपाय मनुख इलो सगामन देव तेल चेगावसोत। मांडो ने सात दांय चेगाउन फेर दूलहा–दूलहीन के तेल–हरदी चेगावसोत। मनुख मन चो सरलो ने सपाय बायलेमन तेल–हरदी चेगावसोत। इथा गोटोक गोठ सांगतो रहे के बिहा बाजा ने सपाय नेंग चो आपलो पाड़ होयसे, हुनके बजनेया मन नेंग–नेंग ने बजावसोत। तेल चेगावतो सरली जाले नाचतो पाड़ बाजेसे। कोनी दूलहा नाहले दूलही के पाउन नचायेसे आरू सपाय सुवासिन, धांगड़ी मन गीद गाउन–गाउन नाचसोत। देव तेल दिन सपाय लोग हरदी खेलसोत, हांसी लोग के छेकुन–छेकुन हरदी लगावसोत, ऐ दिन, दिन भर हरदी–तेल चेगावसोत आरू हरदी खेलसोत नाचसोत, गावसोत, दिन भर हरिक बोहते रहेसे। सांझ होत ले नाचसोत आरू फेर सपाय बाजा के धरून नाहाउक जासोत। दूलहा बाट चो होलेक दूसर दिन बरात जातो तियारी करसोत। दूलही बाट चो होलेक दूसर दिन बले मंझन पहार ले तेल चेगासोत। इथा ये गोठ सांगतो रहे के चढ़ बरात होलो ने ये सपाय नेंग दूलही घरो गोटके मांडो ने होयसे। दूलहा के निकराउन सपाय गांव आरू सगामन दूलही चो गांव जासोत उथाय सपाय नेंग करसोत मांतर ठेंगा बिहा ने तीसर दिन बरात धरून लगीन मारूक सपाय लोग जासोत।

लगीन — लगीन दिन दुनों बाट चो लोग बुता करतो ने मातु रसोत। दूहला बाट चो लोग बरात जातो चो तियारी ने रसोत। गाड़ी चो जोंग करसोत आरू बिहा जातो लोग के नेवतसोत। दूलही बाट चो लोग सपाय बुता के चांडे–चांडे करसोत। दूलही के तेल चेगासोत आरू मंझन पाहार तेल उतरावसोत, तेल उतराउन दूलही के नहावसोत। नहाउन दूलही के पररा ने बसावसोत आरू सातो सुवासिन हुनके पररा ने बसाउन मांडों के सात भांवर किंजरावसोत आरू हुनचो बसका ने नेउन देसोत। ऐ बाटे दूलहा के बरात जातो काजे तियार करसोत पागा बांधुन कडरी के ओरावसोत आरू दुआर निकराउन पड़घावसोत। घर चो सुवासिन कलसा बोहेसे आरू दूलहा चो गोटोक भांवर किजरून कलसा ने बरतो दिया ने सेकेसे, हुनचो सरलो पाछे घर चो सपाय लोग सेकसोत, फेर गांव भर चो बायले मन सेकसोत। दूलहा के गाड़ी ने बसावसोत, जातो बेरा दूलहा आपलो लगे चांउर धरून रहेसे गांव चां गुड़ी, बाट चो मिरलो देव गुड़ी, नंदी, डोंगरी सपाय बाट चांउर छिछुन पांय पड़से। सांझ होवतो ले बरात दूलही चो गांव अमरेसे, इथा गोटोक ठान ने सपाय थेबुन बरात निकरावतो चो तियारी करसोत।

"कुर बांधतो" माहला दांय फलदान नी करू रहोत ते बरात अमरलो पाछे सियान मन बाजा–गाजा संग जाउन फलदान करसोत। फलदान ने दूलही चो सिंगार जाक हुनचो ओटी ने डारून देसोत। घर चो लोग सपाय इलो लोग के चिवडा–गुर देउन मुंह मीठ करसोत आरू सपाय दूहला डेरा ने फिरून ऐसोत। बरात निकरावतो चो पूरे गोटोक मनुख संग सतरी लुगा पठावसोत, ये नेंग सतरी चो मान करतो काजे होयसे। दूलहा बाट चो लोग बरात निकराउन नाचते–कुदते दूलही घर चो दुआर ने अमरसोत आरू थेबून खबर पठावसोत के दूलहा मांडो छिउक एयसे। सुवासिन मन मांडो पूरे पररा धरून छेकुकलाय ठिया रसोत। दूलहा गोटोक बड़गी ने मांडो छियेसे तेब सुवासिन मन नेंग मांगसोत, तेके आगर–घाट करून दूलहा बाट चो लोग हांसी करते देसोत, दूलहा आपलो ठान ने फिरेसे। दूलही बाट चो सुवासिन मन दूलहा के पड़घाउक जासोत आरू पड़घाउन आनसोत। मांडो ने ओयलतो दांय दूलहा दुलही चो बड़े बहिन काजे सतरी लुगा पठायसे आरू दूलहा के आनून मांडो ने पाटकुदिन मुंह करून बसावसोत।

दूलही चो सिंगार करून, हुनके मांडो ने आनसोत, इदलदांय दूलहा बाट गोटोक चदर के आड़ करून देसोत, कायकाजे के हात लगीन चो पूरे दूलहा–दूलही देखा–देखी नी होउक सकोत। दूलही के आनुन गौरी–गनेस आरू कलसा चो पूजा करासोत। ऐचो पूरे दूलहा के बले गौरी–गनेस आरू कलसा चो पूजा कराउ रसोत। ऐचो

पाछे हात लगीन चो तियारी करसोत। आदिवासीमन चो बिहा ने बामन नी लागे, सपाय बुता समाज चो सियानमन करसोत। सपाय समाज ने गोटोक समाज चो मुखिया होयसे, हुन समाज चो सपाय बुता के करेसे। बिहा काजे समाज चो मुखिया के हांक देउ रसोत, हुन फेर गांव चो होवो के बाहिर गांव चो समाज बुता आय बलुन अयसे आरू गांव चो सियान मन संगे मिसुन हुन बुता के करेसे। गोटोक सियान दूलहा लघे गंहू पिसान चो लोंदी के धरून बसेसे आरू दूसर सियान सूत बटी धरून दूलही लघे बसेसे। दूलहा–दूलही चो पूरे मुंह करून बसुन रसोत, हुनमन चो मंजगत चदर चो आड़ बनाउ रसोत । हुनमन के आपलो आपलो बुबा कोरा ने बसाउ रहेसे। इतरो दांय ले हुनमन दखा– देखी नी होउ रहोत। बिहा काजे जुहलो सपाय मनुखमन चो मंजगत दुय–तीन झन सियान ठिया होसत। एदांय बाजा नी बाजे सपाय ओगाय रसोत।

सपाय चो मंजगत ठिया होलो सियान ने गोटोक सपाय के बलसे, दखा मचो गोठ के सुना "फलना घरो लेकी संगे फलना गांव चो लेका चो बिहा आय, बिहा ने तीन घड़ी होयदे सपाय धियान धरा" आरू फेर तीनो बलसोत "एक घड़ी दूय घड़ी सुभ घड़ी लगीन घड़ी बरातमान सावधान"। डंडिक थेबून तीनो सियान सपाय बाट दखसोत फेर गाटोक सियान बलेसे "दखा ना गोटोक घड़ी नाहकली ऐबे दूसर घड़ी आय जेक काहीं बले होलेक करू रहा पूरे पाछे काहीं करूक नी होयदे" सपाय ओगाय होउन हात लगीन होतो के दखतो काजे तियार रसोत, ठिया होलो सियानमन ने गोटोक सियान फेर बलेसे दखा दुय घड़ी नाहकली ऐदांय तीसर घड़ी आय जेके काहीं टोटका करतो आय जाले करू रहा छिका–पादा बले करू रहा पाछे बेरा नी मिरेदे, बजनेयामन बले चेतू रहा तीसर घड़ी आय फेर तीनो सियान बलसोत एक घड़ी दूय घड़ी सुभ घड़ी लगीन घड़ी बरातमान सावधान" इतरो बलतो पाछे बाजा जोर ने घमकेसे। दूलहा–दूलही लघे बसलो सियानमन दुनो चो हात के धरून मिसाउन देसोत आरू गंहू पिसान चो लोंदी के हात चो मंजगत डारून सूत ने सात भंवर बांधुन देसोत। एईदांय दूनो चो मंजगत ले आड़ दिलो चदर के गुचावसोत। ऐचो पाछे टीकान होयसे।

टीकान — सपाय ले पूरे दूलही चो आया–बुबा टीकान करसोत, इदलोदांय दूलहा–दूलही चो पांय चो अंडखा के जोड़ुन गोटोक माटी चो कठेली ने राखसोत। कठेली के कुमहार बिहा काजे बनाउ रहेसे, ए हांडी परई ले इतरी बड़े रहेसे। आया–बुबा दुनो चो अंडखा के धोवसोत, फेर चांउर टीकुन जे बले देतो होलेक हुनके धरावसोत आरू काहीं बड़े जाक होलेक हुनचो उपरे चांउर छिछुन देसोत। ऐचो पाछे बड़े आया–बुबा, काका–काकी, फेर भाई–भावजी टीकसोत। ऐमन चो पाछे मामा–मामी, बहिन–बेटी टीकान करसोत। ऐ लोग चो टीकलो पाछे दूलहा–दूलही के ए बाट, हुन बाट बठावसोत, फेर सपाय गांव भर चो लोग टीकान करसोत। टीकान सरलो पाछे भांवर होयसे।

भांवर — भांवर पाड़तो दांय दूलही के पूरे करसोत, हुनचो पाछे दूलहा रहेसे, हुन आपलो दुनो हात ने दूलही चो कोनी के धरू रहेसे। दूलही चो दूनो हात के अंजरा बनालो रहेसे हुन ने गोटोक बुची ने धान लाई भरून राखसोत। दूलहा–दूलहीन गुलाय मांडो ने भांवर काजे किंजरसोत। हल्बा समाज चो भांवर खुबे धीर ले होयसे असन लागेसे के दूलहा–दूलही हिंडत नाही, खाली हालसोत। भांवरदांय बाजा बाजते रहेसे, इथा सांगतो आय के सपाय नेंग चो पाड़ रहेसे, बजनेयामन नेंग संगे–संग दखुन पाड़ बजावसोत। सपाय समाज चमकनाय बठु रहेसे। भांवरदांय सपाय मनुख लोग चो खावतो–पीवतो होयसे। भांवर होतो ने केबेय–केबेय पहायेसे बले। भांवर सरलो पाछे दूलहा के दूलही चो घरे नेसोत।

विदा मांगतोर –

दूहला बाट चो सियान मन खाउन–पीउन दूलही चो बाप आरू गांव चो चो दूसर सियान मन लधे जाउन विदा मांगसोत। बलसोत "सपाय नेंग नंगत होली, आपन मन नंगत मान करलास ऐबे आमके विदा दिहास खुबे लाफी जातो आय"। दूलही बाट चो सियानमन "सते आय" बलसोत आरू झटके नेंग के सारूक बलसोत। ऐचो पाछे दूलहा चो बाप दूलही चो आरू दूलही चो बाप दूलहा चो बाप चो पांय धोयेसे। फेर दुनो समधी आरू दूलहा मिसुन सपाय जुहलो सगामन चो पांय के धोवसोत ऐके "गोड़ धोवनी" बलसोत। असने ऐ बाटे दूलही आपलो माय संगे मिसुन सपाय बायलेमन चो पांय के धोयेसे । हल्बा आदिवासी समाज ने गोड़ धोवनी करून ऐ सांगसोत के दुनो समधी गोटकी आत कोनी नानी–बड़े नोहात। गोड़ धोवनी सरली बललेक दूलहा–दूलही के आनुन मांडो खाले पतरी ने बठावसोत। बिहा चो सपाय नेंग ने दूलही, दूलहा चो उजा हात बाट बठेसे, ऐबे बले हुलके उजा हात बाट बठासोत। समाज दूलही चो बाप के बलेसे के अले पतरी उलटातो चो नेंग करा"। दूलही चो बाप के अपलो बेटी के विदा नी देउन राखतो विचार होलेक हुन बलेसे "ऐसू लेकी के नी देंय ऐबे नानी आसे" । गवनो राखतो आरू नी राखतो चो गोठ पूरे माहलादांय होउ रहेसे, अई गोठ के समाज चो पुरे बलसोत। बिदा देतो होलेक पतरी उलटासोत, ऐबे ले दूलही, दूलहा चो उजा हात बाट बठु रहेसे, हुनके दूलहा चो डेबरी हात बाट बठावसोत ऐके "पतरी अलटातो" बलसोत।

बिदा देतो दांय दूलहा–दूलही के मांडो ने ठिया करून सपाय सुवासिन आरू जुहलो बायलेमन कलसा ने सेकसोत। इतरो दांय दूलही आपलो नाता–गोता चो लोगमन के सुरता करून, हुनमन के पोटारून–पोटारून गागेसे। गागा–रोआ होलेक सपाय दूलही

के बिदा करूक जासोत। गांव चो दूलही चो संगी मन बाट छेकसोत। गोटोक डोरी के बाट चो दुनो बाटे धरून दूलही चो संगीमन ठिया रसोत, हुनमन के दूलहा बाट चो लोग हांसी करून नेंग देसोत, ऐके "संग टुटावनी" बलसोत। ऐचो पाछे सपाय लोग दूलही के धरून हरिक ले आपलो गांव ऐसोत। इथा गोटोक ठान ने सपाय थेबसोत, ऐ बाट दूलहा बाट चो सुवासिन मन धर चो सुहागिन के कलसा बोहाउन पड़घातो काजे ऐसोत। पडघाउन दूलहा–दूलही के बाजा बजावते, नाचते–कुदते घरे नेसोत। घर ने मांडो ने थेबाउन फेर भीतरे आपलो देव के पांय पड़ाउन नेसोत। इथा घर चो मुखिया आपलो कुल देवता के पांय पड़ायेसे आरू आपलो देव के बिनति करेसे "हे देव आमचो घरे तुमचो गोटोक सेउक आरू बाढ़ली, ये आमचो कुल के बले बढ़ायेदे नवा बोहो आरू बेटा के तुमी सहा होवा"। बिनति करलो पाछे दूलहा–दूलही डंडासरन पांय पड़सोत।

एचो पाछे आपलो देव चो पूरे घर चो मुखिया बठु रहेसे आरू घर चो सुवासिन दूलहा–दूलही चो मउड़ के हिटाउन मुखिया के देयसे, हुनके हुन फेर देव चो पूरे राखेसे। दूलहा–दूलही चांदी चो सूता बले पींदू रसोत, हुनके बले हिटाउन मुखिया के देसोत। दुनों के मुखिया देव खोली ने संगाउन देयसे। मउड़ आरू सूता के दूलही पहेली तीजा ने पींदून तीजा जगार ने आपलो कुल देवता चो पूजा करेसे आरू उपास रहुन तीजा जगार सुनेसे, नवा बाहो तीजा जगार सुनलो नाहलो तीजा उपास रहुक नी सके। असने नवा बोहो तीजा जगार सुनलो नाहलो मउड़ के नी बाहरावोत। घर चो मुखिया के मउड़ आरू सूता के देलो पाछे हुनी दिन पींवरी मनावसोत। पींवरी आपलो देव के बिहा पूरे मानता मानु रसोत, हुन मानता के आपलो कुल देव चो मान करतो काजे देसोत। ये मानता बोकड़ा देउदें बललो रहेसे तेक आपलो देव चो मान काजे पूजसोत। ये बोकड़ा चो मास के घर आरू कुटुम चो लोग खावसोत, सगा–सील के नी देवोत। समरथ लोग आरू बोकड़ पूजसोत हुनके सगा–सील के खवावसोत मांतर बोकड़ा गोटकी होलो ने बोकड़ा चो मूंड के देव के देसोत आरू बाचलो के सपाय मिसुन खावसोत। असन बिहा चो नेंग होयसे, फेर दूलहा–दूलही कमावसोत–खावसोत।

हलबा समाज ने मरलो पाछे रूसूम

हल्बा समाज बले दूसर समाज असन मरलो ने छूत मानेसे। आदिवासी समाज आरू दूसर जात चो लोग बले मरलो ने छूआ पड़ली मानसोत आरू सगामन बिछर छियाउन सुद करसोत। असने हल्बा समाज ने बले होयेसे। समाज चो मनुख मरलो ने घर चो बायले मन रोआ–गागा करसोत , तेमे जानी होयसे के कोनी नींहात सपाय गोटोक, गोटोक सकली होसोत मुनुख मन घर चो लोग चो कुटुम बाहिर रलो लोग के खबर पठावसोत, हुसने सगा–सील के बले खबर देतो होयसे। खबर मिरलेक सपाय लोग गोटोक पंछरी धोती धरून ऐसोत आरू सपाय ले पूरे मरनहार के ओढ़ावसोत, बायलेमन होलेक उथाय बसुन डंडिक गागुक लागसोत, मनुखमन बाहिर ऐउन तियारी करतो लोग संगे तियारा करूक लागसोत। सपाय गोटकी गोठ गोठियावसोत के नंगत रहे कसन औचट होली आरू आमचो मंजगत ले गेलो। गांव ले बाहिर चो लोगमन के बाट दखते गांव चो लोग काठी चो तियारी करते रसोत। घर बिता के पूछसोत के गाढुक होयदे के दागी देता होयदे। घर चो लोग चो विचार जसन होयसे, हुनके जानुन तियारी करसोत।

हल्बा समाज ने मरलो पाछे गाढ़सोत बले आरू जरासोत बले। मरलो पाछे गाढ़तो के माटी देतो बलसोत आरू जरातो के दागी देतो बलसोत। हल्बा समाज ने गुरूमुखी सियान होलेक तेके समाज बले जरातो काजे बलसोत। सिरहा, पुजारी, पंजियार, बईद असन सपाय गुनी लोग के दागी देसोत आरू गत–गंगा करसोत। असन लोग जेचो गत–गंगा करतो सकत नी रलेक, समरथ लोग साहा होसोत। असन कोनी घर चो लोग जेचो सकत नीहांय मांतर हुनचो मन आसे के मय आपलो लोग के दागी देउन गत–गंगा करेंदे असन लोग चो सांगलो ने सपाय गांव चो समाज मिसुन साहा होसोत। असन बले होयसे मनुख चो मरलो ने दागी दिलो आसे ते बायले मरलो ने हुनके बले दागी देसोत मांतर मनुख के गाढु रसोत ते बायले के बले माटी देसोत। मरलो पाछे गांव चो सियान मन घर चो लोग के पूछसोत के फलना के दागी दिलो रहे ऐके बले दागी देतो होयदे, तुचो लग तियारी आसे, हुनचो नाहीं बलला ने गांव चो लोग तियारी करसोत। असने ने जानी होयसे के हल्बा जात चो लोग मन चो समाज खुबे बरकस आसे आरू सकत नाहलो लोगमन के बरमेस साहा होसोत।

मरलो पाछे घर चो लोग के काहीं फिकर करूक नी लागे,हुनमन के इतरोय सांगुक लागेसे के दागी देतो आय के माटी देतो आय। सांगलो ने सपाय तियारी गांव चो लोग करसोत। कुटुम चो लोग के आरू सगा—सील के हुनीमन खबर पठावसोत। तियारी होत ले सपाय लोग जुहसोत, बुता ने गेलो लोग बले आपलो बुता के खबर मिरलेक छांडुन ऐसोत। गांव ने गुरूमुखी लोग रलेक मड़हा देंह के झटके नेतो चो गोहार होयसे, कायकाजे के गांव ने मड़हा देंह रलेक गुरूमुखी मन पानी बले नी पीवोत। सपाय लोग जुहला बललेक मरलो बिता मनुख होलेक मनुख मन , बायले होलो ने बायले मन तेके नाहावसोत, फेर हरदी चंदन घससोत आरू बाहिर बांवस चो तड़नी बनाउ रसोत हुनने सावावसोत। नवा धोती के चिरून डोरी बनावसोत आरू बांधसोत। गोबर छेना के जराउन तेके नानी हांडी ने राखसोत आरू काठी के नंदी घड़ी रलो मरहाभाटा ने नेसोत। इथा दागी देतो होलेक दागी देसोत नाहले गाढ़तो होलेक गाढ़सोत सपाय चो तियारी पूरे ले करलो रहेसे। ऐचो पाछे काठी ने जितरो लोग जाउ रसोत आपलो सपाय कपड़ा के फिजाउन नहावसोत आरू फिरसोत।

बस्तर चो दूसर आदिवासी मन असन हल्बा जात चो लोगमन मरलो पाछे फेर ले हुनी कुल ने जनम धरतो के नी मानत, हुनमन पुरान ने बखान करलो असन मानसोत के जीव मरलो पाछे संवसार चो चवरासी जोनी ने भूलकेसे आरू कोनी बले जोनी ने जाउक सके। दूसर आदिवासीमन मानसोत के जीव आमचो कुल ने जनम धरदे आरू आमी हुनके चिनहारी करदे मांतर हल्बा समाज असन नी मानत। असन बले मानसोत के कोनी मांय चो गोरस पीवतो पीला चो मरलो ने हुनके माटी देसोत आरू हुनचो संगे गोटोक तेंदू खोटला के राखसोत, कायकाजे के समाज चो मानता आय के हुन पीला आमचो कुल ने जनम धरलो मांतर करम नी करलो से तेचोय काजे ते फेर ले जनम धरेदे। जचकी होतो दांय पीला आरू मांय दुनो के मरलो ने समाज के दुखा होयसे, असन बलसोत के हुन बड़रहिन बनेसे तेचोय काजे जानतो लोग मन बंधन करसोत आरू मठ उपरे ले गोहड़ी हिंडासोत। असन मानसोत के मठ उपरे ले गाय—गोरू हिंडलेक हुनने जीव नी पड़े। बीमारी होलो लोग के, रूखले गिरलो हात—पांय टुटलो सूरत बिगडलो सपाय लोग के दागी देसोत।

हल्बा समाज ने मरलो के छूत मानसोत आरू दस दिन ले नाहनी करसोत, ऐके "घाट उतरतो" बलसोत। तीन दिन होलेक "तीज नहानी" करसोत, ये दिन सपाय सगा आरू पचपवनी (दूसर जात चो जान चिनहार लोग) दाड़ी बनावासोत। एई दिन दागी दिलो के हाड़ा के सकलसोत। पूरे मनुख चो देह चो दस भाग चो गोटोक—गोटोक हाड़ा के सकलसोत, हुन हाढ़ा के दही, गोरस, पानी ने नंगत मांजसोत आरू हुनके गोटोक नानी असन नवा टांडी

ने राखसोत। बाचलो हाड़ा आरू राख के सकलुन नंदी ने बोहराउन देसोत। दागी दिलो ठान के गोबर ने लिपसोत, चाउर पिसान, लाली, हरदी ने बाना भरसोत, फूल—पाना दीया, उदबती, धूप, दखाउन पूजा करसोत आरू धान, नोन के छिछुन देसोत। असन ऐचो काजे करसोत के गाय—गोरू ऐउन, हुन ठान के आपलो जीब ले चाटुन पबितर करून देवोत। दाड़ी बनाउन सपाय लोग आपलो पींदलो कपड़ा कें फिजाउन नहावसोत आरू सपाय फिरसोत। घरे सपाय बायले लोग हुन आनलो हांड़ा के मरनहार के आनलासोत असन पड़घावसोत। घरे ऐउन हुन नानी टांडी ने राखलो हाड़ा के तुलसी चंवरा लघे गाड़ुन देसोत आरू उपरे गोटोक इतरी आगर बड़े काना बिती टांडी के बांधसोत। उपरे बिती हांडी ने काना रहेसे हुनने पानी भरलो रहेसे, हुन पानी फेर थिपुन—थिपुन खाले गाड़लो हाड़ा राखलो नानी टांडी ने गिरते रहेसे। इथा बले पूजा करसोत आरू दीया बारसोत।

तीज नहानी चो पाछे बले सपाय दिन घरो चो लोग नहाउक जासोत, दस नहानी के बड़े नहानी नाहले बड़े काम बलसोत। ऐ दिन सपाय लोग के खबर पठावसोत। सगा—सील, पचपवनी सपाय जुहसोत। ये दिन नाउ सपाय चो दाड़ी बनायेसे आरू घर चो सपाय लोग चूंदी उतरावसोत। सगामन जेचो घर ले मरनहार घरो लेकी दिलो आसे आरू जेचो घरो ले लेकी आनलो आसे असन सपाय लोग, मरनहार घर चो लोग के बिछर छियावसोत। चून माटी के सपाय घर चो लोग चो मुंड ने डारसोत आरू घससोत, ऐचो पाछे हुनमन नाहाउन नवा कपड़ा पींदसोत आरू सपाय घर फिरसोत। घर ने जुवान लेका—लेकीमन मिसुन रांधा—बाटा करून रसोत, सपाय खावसोत। ऐचो पाछे पगबंदी होयसे। खाउन सपाय लोग घर चो दुआर ने नाहले बड़े ठान ने बससोत गोटोक बाटे माई लोग रसोत आरू दूसर बाटे मनुख लोग रसोत। समाज चो पूरे घर चो लोग ओरी ले बठु रसोत। सगामन आपलो संगे आनलो पटका, धोती के घर चो लोग चो मुंड ने पागा बांधसोत। असने बायलेमन बाट बले होयसे। सपाय चो सरलो पाछे समाज चो सियानमन बलसोत देखा मरनहार सपाय बाट चरफर रहे जात ने, समाज ने सपाय बाट रहे, घर के बले नंगत राखु रहे असने तुमी सपाय करासे समाज तुमचो उपरे भरोस करेसे। समाज चो बललो ने सपाय घर चो लोग समाज चो सपाय लोग चो पांय पड़सोत आरू ठिया होउन बलसोत " आमी सपाय बाट ले जुहलो समाज के सरन लागुंसे, आपनमन एउन आमचो बुता के करलास, सपाय के सरन—सरन"। असन सरेसे मरलो पाछे चो नेंग, ऐबेय सपाय नेंग के गोटकी दिन पांच दिन नाहलेक तीन दिन ने करसोत आरू आपलो सुबिसता दखुन गत—गंगा करसोत।

हल्बा समाज चो तीज–तिहार

मनुख चो जीवना ने हरिक बेरा कमती एयसे, हुन बरमेस हरिक उदिम बेरा खोजते रहेसे। बस्तर चो गांव ने रतो लोग चो हरिक बेरा भाग ने मिरेसे, तेचोय काजे हुन असन बेरा के आपलो जीवना ने खोजते रहेसे। बस्तर चो सपाय आदिवासी मन आपलो सपाय बुता के मिसुन करसोत, सपाय संगे करलो बुता, हांसी करते करलो बुता लिखड़ी ने होयसे। दखतो लोग के लागेसे के कोनी तिहार मनावसोत। आदिवासी लोग आपलो बुता के बले सपाय लोग संग करसोत आरू दखतो लोग के लागेसे के सपाय चो बुता आय। आपलो सपाय बुता के कोनी तिहार असन करसोत। एई काजे आदिवासी जीवना ने तिहार चो खुबे मान होयसे। बस्तर चो हल्बा समाज खुबे बरकस आसे, हुनचो समाज चो बुता के दखलेक लागेसे के सपाय गोटकी सूतुर ने सपाय बुता के करसोत। नानी लोग बड़े चो तियारा के करसोत आरू बड़े लोग नानी लोग के सांगसोत के आमचो पुरखा लोग ए बुता के कसन करते रहोत। हल्बा समाज बले बस्तर चो दूसर आदिवासीमन असन सपाय तिहार के मानेसे मांतर हुन पुरान ने बाखनलो तिहार के बले मानेसे।

सपाय तिहार दुय गढ़न चो होयसे, गोटोक के सपाय गांव चो लोग संगे मिसुन करसोत आरू दूसर के लोग आपलो कुटुम चो लोग संगे मनावसोत। गांव भर चो लोग संगे मनावलो तिहार दखनी होयसे, सपाय लोग जुहुन हुनके मनवसोत। असने परिवार चो संगे मनातो बिती तिहार के सपाय गांव गोटेकी दिन मनायेसे, तेबे बले लागेसे के के सपाय गांव हुन तिहार के मनायेसे आरू खुबे सोभा दयसे। साल भर ने असन तिहार होसोत के हुनचो दिन ठोवलो रहेसे, असने पुरान ने बखानलो तिहार बले गोटोकी दिन होयसे मांतर बस्तर चो कितरोय असन तिहार होसोत हुनचो दिन ठोवलो नी रहे। असन तिहार के मनातो दांय गांव ने गोटोक बसका करून दिन ठोवसोत आरू सपाय गांव भर चो लोग हुनी दिन हुन तिहार के मनावसोत। तिहार चो दिन ठोवतो चो पूरे सपाय के तियारी करतो बेरा राखसोत। जेमे सपाय तियारी करूक सकोत मांतर काचोय लगे तिहार मनातो जाक–जमक ने खंगती होयसे, तेब सपाय गांव मिसुन हुनचो साहा होसोत। असन गोठ बस्तर चो आदिवासी गांव के निको बनावसोत। इथा हल्बा समाज चो मनातो बिती साल भर चो तिहार के दखुदें।

1. अमउस तिहार– बस्तर ने पहेली तिहार अमुउस तिहार के मानसोत, सावन महेना चो अमउस ने ये तिहार मनावसोत। ये गांवकारी आरू किरसानी तिहार आय, तिहार ने कुटुम ने साल भर होतो ढुआ–टोटाका, आपलो उपज चो राखा काजे उवाट करसोत। सपाय

गोठ के तिहार चो रूप ने मनावसोत के दखनी होयेसे। हल्बी आरू छत्तीसगढ़ी ने ऐके हरेली तिहार बलसोत। बस्तर आरू छत्तीसगढ़ ने हरेली तिहार चो पूरे रात के खुबे अटपट मानसोत, बलसोत के एई रात ने बडरहिन निकरसोत आरू मनुख, पीलामन चो रकत के चुहकसोत। गांव ने असन कितरोय कहनी आसे, एई काजे असन गोठ के सपाय मानसोत। बलसोत के असन बायले जे ए बिदया के जानेसे हुन एई रात ने आपलो सकत के बढ़ाउक रकत चूहकूक निकरेसे। जे चो रकत चूहकेसे हुन सकत नाहलो होउन मरेसे। असन परेतनिन ले ये रात बाचतो उवाट करसोत। घर चो दुआर ने कपड़ा नाहलेक बेठ के जराउन डांड बनावसोत, जेमे के हुन घर ने ओलुक नी सको। घर ने ओलतो कपाट ने चौघड़ी चो जाल के बांधसोत, सोवतो ठान ने मंडेया नाहले सरसों छिछुन रसोत कोयला के मुंडेसा ने राखसोत, असन सपाय उवाट बडरहिन ले बाचतो काजे करसोत। जानतो लोग बंधन करसोत।

दूसर दिन घर चो सियान रान ले तेंदू डारा, भेलवां डारा, देव बाड़न (सतावरी) चो लाहा, रसना जड़ी, आनेसे आरू भात नाहले पिसान संगे आपलो पोसलो गाय–गोरू के खवायेसे। ऐके खवालेक गाय–गोरू के साल भर काहीं बीमारी नी धरे। भेलवां डारा आरू तेंदू डारा के आपलो बेड़ा ने गाड़ेसे, असन करलेक उपज ने बीमारी नी होये। एई दिन रान ले लकड़ी आनुन लेका मन घोड़ोंदी बनाउन चेघसोत। सियानमन आपलो बेडा चो सपाय औजार के घोवसोत आरू तेचो पूजा करसोत। घर ने भूंजलो बोबो (बड़ा) चेघावसोत। अमउस दिन बस्तर चो दसहरा चो मूर होयेसे, हुन दिन रान ने आनुन "ठुरलू खोटला" के दंतेसरी गुड़ी पूरे पूजा करून दसहरा चो मूर करसोत। जड़ी–बूटी जानतो लोग अई दिन ले नागपंचमी दिन ले आपलो चेलामन के दवई देतो सीखावसोत। अमउस दिन चो खनलो जड़ी बीमारी ने पका असर करेसे। झाड़ा–फूका करतो लोग बले आपलो चेलामन के एई दिन आपन बिदया के देसोत। बडरहिन बनतो बिदया के जानू बायले बले आपलो बिदया के एई दिन आपलो चेली के सीखायेसे। अई दिन सपाय गोव चो लोग मिसुन जिररा भाजी आरू धोबा भाजी के जोगावसोत। जोगानी चो माने आय के काहीं बले उपज के पूरे देव ने चढ़ाउन जोगानी करतो आये, फेर हुन उपज के खातो आय।

2. **तीजा** — ए पुरान ने बाखनलो तिहार आय ऐके बस्तर चो दूसर आदिवासी लोग नी मानोत मांतर हल्बा समाज ऐके मानायेसे। ए तिहार ने सुहागिन बायलेमन आपलो मुनिस चो आवरदा बाढ़ती काजे निरजला उपास राखसोत। आदिवासी मन ले दूरस जात चो लोग ए तिहार के खुबे मनावसोत आरू ऐके मयके ने मनावसोत मांतर हल्बा आदिवासी समाज ऐके आपलो गढ़न ले मनायेसे। कायकाजे के बिहा होलो चो पाछे जेबे घर चो सियान के आपलो

कुलदेव चो पूरे मउड़ के सोंपसोत हुनदांय आपलो कुलदेव चो पूरे किरिया खाउ रसोत के एई मउड़ के पींदुन तुमचो पूजा करूदें, फेर तीजा उपास राखुक मुरियाउदें। हल्बा समाज मानेसे के नवा बोहो बिहा होले पाछे आपलो कुलदेव चो पूजा नी करलीसे, ऐचो काजे हुन तीजा उपास करूक नी सके। तीजा जगार ने नवा बोहो बिहा दांय चो मउड़ के पींदुन आपलो कुल देव चा उपास रहुन पूजा करेसे। तीजा जगार के "धनकुल" मंडातो बले बलसोत। धनकुल गोटोक हल्बा आदिवासी मन चो बाजा चो नाव आय, ऐके हल्बा समाज आपलो चिनहारी बले बलेसे।

धनकुल बाजा — बस्तर चो गोटोक लोक बाजा के "धनकुल" बाजा बलसोत। धनकुल बाजा अचरित बाजा आय, जे घर ने बांवरतो जाक–जमक ने बनेसे। असन जाक सपाय घरो ने रहेसे, जसन हांडी, सूपा, बांस बाहरी, धनउ, बसतो नानी माची, सपाय के मिसाउन बस्तर चो बाजा धनकुल बनेसे। हल्बा समाज चो लोग मानसोत के असन जाक के मिसाउन सपाय ले पूरे आमचो पुरखामन धनकुल बाजा बनाला, जेके आज बले बजावसोत। एई काजे हल्बा समाज धनकुल बाजा के आपलो चिनहारी मानेसे। धनकुल के पूजा बाजा बले बलसोत, कायकाजे के ऐके बनातो चो पूरे ठान के छुकछुका लिपून पवितर करसोत आरू बाना भरून कलसा मंडावसोत। दुयठन बठतो काजे माची राखसोत, जेचो उपरे गुरूमायमन बठसोत। गोटोक गुरूमाय के जे बड़े होयसे तेके पाट गुरूमाय आरू गोटोक के चेली गुरूमाय बलसोत। माची चो पूरे दुयठन बेठ चो बरलो मेंढ़री राखसोत ऐके गुंडरी बले बलसोत। ऐखे उपरे दुयठन नवा हांडी के लोहाउन राखसोत। हांडीमन चो मुंह के सूपा ने ढाकसोत, सुपा चो उपरे धनउ के असन मंडावसोत के धनउ चो डोरी खाले रहो। धनउ चो उपरे भाग ने ककना–ककना बनाउ रसोत। गुरूमायमन आपलो डेबरी पांय ने धनउ के डाटसोत आरू उजा हात ने धरलो बांवस काड़ी के धनउ ने बनलो ककना ने घससोत। डेबरी हात ने धनउ चो डोरी के झिकुन छांडसोत। हांडी मंडातो मेंढ़री के आंयरा, हांडी के घूमरा हांडी, सूपा के ढाकनी सूपा धनउ के धनकुल डांडी, डोरी के झिकन डोरी बलसोत। झिकन डोरी के झिकलेक घमम, घमम आरू छिरनी काड़ी के धनउ ने घसलेक छरर, छरर चो आरो होयसे। धनकुल बाजा के बजाउन गुरूमाय मन रात भर गातो बिती कहनी के गावसोत आरू बजावसोत। धनकुल बाजा बजाउन तीजा जगार, लछनी जगार, आठे जगार आरू बाली जगार चो गीद गावसोत। इथा तीजा जगार चो नानी रूप के सांगलो आसे।

तीजा जगार – बाली–गौरा चो गीद कहानी तीजा जगार ने गावसोत, पारबती आपलो सउत बालीगौरा के खुबे दंड देउन खटायेसे तेके नानी–नानी जियाद मन सहा होसोत।

कहनी असन आय। राजा चो बेटी बाली गौरा नंदि धड़ी कुधुर ढाप ने घर बनाउन खेलत रहेसे, हुनी बाट ले आपलो बैला नंदी उपरे बसून संकर भगवान बुलुक निकरसोत। नंदी चो पांय ने बाली गौरा चो घर उझड़ुन जायसे। बाली गौरा खूबे रीस होयसे। संकर भगवान दखसोत, ऐबे जुवान होउक मुरयावलो बाली गौरा रीस ने आरू नंगत सुंदर दखा दयेसे। संकर भगवान हुनचो रूप के दखुन मोहावसोत। बाली गौरा बले संकर भगवान के दखुन मोहायेसे आरू भगवान के पावतो काजे तप करेसे। संकर भगवान हरिक होयसे आरू हुनचो संगे बिहा करेसे, ये बिहा के तरई ने रतो बिती कैना मन करावसोत। संकर भगवान बाली गौरा के आपलो जटा ने लुकाउन कयलास आनसोत। परबती जानुन जायसे हुन जटा के हिटाउक बलेसे, जटा हिटालेक बाली गौरा गिरेसे। पारबती गौरा चो रूप के दखुन जरून जायसे, तेके सउत आय बलुन दंड देउक मुरियायसे।

पारबती बाली गौरा के पयली भर धान देउन बलेसे ऐके कुटुन आन, सपाय धान सयगो होतो आय आरू पयली भर होतो आय। बाली गौरा धान के धरून जायेसे। रान ने जाउन गागते रहेसे के असन कसन होयेदे। तेब चटिया चिड़ई ऐउन पूछेसे काय होली, हुन सांगेसे। चटिया बले नी गाग आमी बनाउन देउंसे बलुन धान के फोलसोत आरू नंगत बनाउन देसोत। एके दखुन परबती खुबे अचरित होयसे। दूसर दांय भेलवां ने कपड़ा के बोरून छुकछुका पंडरा बनाउक बलेसे। बाली गौरा घाट ने जाउन गागेसे तेब कोकोड़ा पूछेसे, सांगलो पाछे नी गाग आमी बनाउन देंउदें बलुन, कपड़ा के छुकछुका पंडरा बनाउन देसोत। आनुन कपड़ा के पारबती के देयसे हुन अचरित होयसे। तीसर दांय हुनके काना होलो हांडी ने पानी आनुक देयसे, हुन पानी घाट ने गागेसे तेब मेंढका मन साहा होसोत आरू कानामन बससोत आरू बालीगौरा पानी आनेसे। असने बिन डोरी चो लकड़ी भारा आनुक बलेसे, रान ने जाउन खुबे गागेसे, तेब सांप साहा होसे हुन लकड़ी चो भारा ने बांधी होयसे, पारबती विचार करेसे ऐके कितरोय दंड दिले मांतर बाली गौरा काहीं नी बलली बलुन हुनके पोटारून मया करेसे। कलबडाहा होउन बाली गौरा कैलास ले कुदून पाताल जायेसे। इतरो कहानी के धनकुल बाजा ने तीन दिन, आठ दिन गावसोत। तीजा बोहरातो संगे–संग मउड़ के बले बोहरावसोत।

3. नवाखानी – बस्तर चो सपाय ले बड़े तिहार नवाखानी आय। बस्तर चो लोग चो मन ने ये तिहार काजे खुबे मान आसे। ऐके ये गोठ ले जानुक होयसे के घर चो लोग कहांय बले रहोत नवाखातो काजे आपलो कुटुम ने ऐसोत। हल्बा जात चो लोग किरसान आत,

आपलो उपज के पूरे आपलो देव ने चेगालो बिगर कसन खादे? ऐचोय काजे हल्बा जात चो लोगमन नवााखानी तिहार के आगर मान देसोत। जे दिन तीजा बोहरावसोत हुन दिन परगन चो मंडा देव ने नवा खानी बनावसोत। भादो महिना ने धान निकरू रहेसे मांतर पाकू नी रहे। नवा खातो काजे धान चो काचा केनस के आनुन हुनके जूना धान संगे कुटसोत, हुनचो भाग जूना चाउर ने मिसुन जायेसे, हुनचो बाल जेके आमी खीर बलुसे बनावसोत आरू मंडादेव ने चेगाउन सपाय टीका मांडसोत। दूसर दिन सपाय परगन चो लोग आपलो--आपलो गांव चो गुड़ी ने खीर चेघाउन आपलो माटी संगे नवा खावसोत। एई दिन सपाय गांव चो लोग चो नवा खातो दिन ठोवसोत आरू हुनी दिन सपाय कुटुम चो लोग सकली होसोत, आपलो कुल देव, डूमादेव के खीर चेगाउन सपाय हुनचो टीका मांडसोत आरू सपाय हुन दिन बनालो बोबो, रोटी खावसोत। नवाा खाउन सपाय बड़े लोग चो पांय पड़सोत।

4. **दसराहा** —: हल्बा समाज चो लोग बरमेस राजासाही संगे रहोत, तेचोय काजे राजा तिहार के बले खुबे मान करसोत आरू आपलो गांव चो देव–धामी संगे बस्तर दसराहा काजे जगदलपुर जासोत। दसराहा ने जोगी बले हल्बा समाज चो लोग बससोत। आपलो डेरा ने रहुन आपलो देव–धामी संगे दसराहा मनावसोत आरू मुरिया दरबार होलो चो पाछे फिरसोत।

5–बोहरानी –: बस्तर चो आदिवासी समाज साल ने तीन दांय बोहरानी बनायेसे गोटोक दांय भादों ने, दूसर दांय कुवांर ने, आरू तीसर दांय चईत ने। बोहरानी माने गांव ले बिदा करतो होयसे। आदिवासी समाज मानेसे गांव ने नी जानी होतो देवी–देवता ऐसोत, ऐ मन चो ठान नी रहे कांहाय बले बुलते रसोत। गांव ने ए देवमन चो इलो ने बीमारी होयसे। जानुक नी होये तेचोय काजे एमन चो मान बले करूक नी होये। ए देव मन रीस होउन बीमारी आनसोत। एमन के रीहड़ी–फोहड़ी बलसोत। एमन के मान करून बिदा करतो बोहरानी आय। गांव भर चो लोग रोसई (दार, चांउर, हरदी, तेल) धरून गोटोक ठान ने जुहसोत इथा गांव चो सिरहा के देव एयसे, हुनचो सांगलो असन रीहड़ी–फोहड़ी पूजा करून गांव चो संद ले बिदा करतो बोरानी आय। ऐके हल्बा समाज बले दूसर आदिवासी मन असन बनायेसे।

6. **दियारी** –: दीवाली के हल्बी ने दियारी बलसोत, दीवाली हिंदू मन चो तिहार आय जे पांच दिन ले होयसे धनतेरस उिन ले मूर धरून भाई दूज दिन सरेसे मांतर आदिवासी समाज दीवाली नी बनाये, हुन आपलो असन दियारी बनायेसे। हल्बा समाज बले दीवाली ने लछमी

माता चो पूजा नी करे, हुन दीवाली चो पूरे दिन ले देव गुड़ी, घर चो पूजा खोली ने, गाय कोठा ने, घर चो सपाय खोली ने दीया जरायेसे मांतर दूसर जात असन लछमी माता चो पूजा नी करे। दीवाली चो दूसर दिन आपलो पोसलो जियाद मन चो पूजा करून हुनमन के खिचड़ी खवायेसे। आदिवासी समाज मानेसे के उपज के उपजातो ने जियाद मन बले साहा होलासोत, ऐमे ऐमन चो बले हक आसे , असन बलुन जियादमन के नवा चांउर चो खिचड़ी खवावसोत। खिचड़ी ने कोचई, कुमड़ा, अमली, लाउ डारून ऐचो जोगानी बले करसोत।

7. देव उठनी –: बस्तर ने रतो सपाय जात ले आगर हल्बा समाज देव उठनी के मनायेसे। ऐके नानी दियारी बले बलसोत। ऐ दिन सपाय लोग निरजला उपास रसोत। सांझ बेरा सालीगराम आरू तुलसी चो पूजा करून दुनों चो बिहा करसोत। दूसर हिंदू जात चो लोग आपलो घर ने पूजा करसोत मांतर हल्बा गांवमन ने गोटकी ठान ने गांव भर चो सकली होउन तुलसी बिहा करसोत। नवा डांडा चो मांडो गाढ़सोत, पूजा करून तुलसी आरू सालीगराम के तेल–हरदी चेगासोत आरू सूत ने दूनो चो भांवर पाड़सोत। रात भर चेता रहुन ओड़िया पूरान सुनसोत। ए दिन सपाय कांदा, आंवरा, अमली, सपाय चेगाउन जोगानी बनावसोत।

8. लछमी जगार –: तीजा जगार असन लछमी जगार के हल्बा समाज चो बायले मन मनावसोत। गोटोक लखीमबार ले दूसर लखीमबार ले धनकुल बाजा ने नारायण्न भगवान आरू लछमी माता चो बिहा के गांव कारी मन असन गुरूमांय मन गावसोत। ये अन चो पूजा करतो तिहार आय। पुरान ने लिखलो कहनी के हल्बी ने आपलो गांव चो असन गावसोत। ये कहनी चो नानी रूप असन आय।

गुलाय बाटे पानी चे पानी रहेसे नारायण भगवान कमल फूल ने सोउ रसोत हुनचो बोमली ले बरमा भगवान आरू इतरी खाले ले संकर भगवान निकरसोत। तीनों संवसार गढ़तो विचार करसोत। काकड़ा आरू गोंयचड़ं के भूंय बनातो काजे साहा होउक बलसोत। गोंयचड़ां चो हगलो ने भूंय बनेसे मांतर गोटोक सूरमा राकस तेके खाउन देयसे। काकड़ा के कंकालिन के बलाउक बलसोत। कंकालिन माता भूंय के खातो बिता राकस के मारेसे, फेर भूंय बनेसे। संकर भगवान चो देह ले सपाय जीव चो उपजन होयसे। ऐचो पाछे तीनो लोक चो उपजन होयसे। देव लोक के उपरपुर, भूंय के मंजपुर आरू पताल लोक के खाले पुर बलसोत।

दूसर भाग ने लछमी रानी चो जनम मेघ राजा चो घर ने होयसे, मेघ राजा–रानी बिन पीला चो रसोत, गोटोक दांय हुनमन चो गांव ने दूकाल होयसे। मेघ राजा आपलो काका सतरा महादेव के साहा होउक बलसोत। महादेव गोटोक फर देउन राजा के बलसोत ऐके रोपुन पहिली फर के रानी के देलेक तुमचो भाग फिरेदे। राजा हुसने करसोत रानी चो पेट ने लछमी एयसे, तेब राज ने हरिक उदिम होयसे। जनम पाछे लछमी दूसर महल ने रहेसे। ऐ बाटे गोटोक दिन नारायन भगवान पारद खेलूक छछान के घरून ऐसोत। छछान के लछमी आपलो महल ने बांधुन देयसे। छछान के खोजते भगवान चो भेट माता संग होयसे आरू दुनो मोहावसोत। बिहा काजे नारायन राजा के घरजिंयां बनुक पड़से कायकाजे के हुनचो 21 ठन रानी आरू रसोत। लछमी आरू नारायन राजा चो बिहा होलो ने खंडपुर ने खूबे हरिक होयसे धन–धान बाढ़ेसे। नारायन राजा लछमी संगे हरिक ले रतो खुबे दिन होयेसे, हुनके आपलो रानीमन चो सुरता एयसे हुन लछमी के जांउ बलेसे रानी चो नाही बललेक हुन सपाय के दखुन एंयसे बलुन खंडपुर जायेसे। इथा नारायन राजा संगे लछमी चो बिहा गोठ सपाय जानसोत हुनमन लछमी के आनुक बलसोत नारायन राजा लछमी के मनाउन खंडपुर आनसोत।

खंडपुर ने डंडिक दिन हरिक ले कटेसे, फेर लछमी चो बड़े बहिन हुनके दंड देउक मुरियावसोत। तिल के छिछुन बलसोत सपाय दाना के बिनुन आन, अड़चन बिता बुता आय लछमी गागेसे तेके परेंवा सुनेसे आरू कायकाजे गागसित पूछेसे, लछमी सांगेसे, सुनुन बलेसे नी गाग आमी सकलुन देउदें बलुन सपाय दाना के सकलुन देसोत। नेउन बड़े बहिनमन के देयेसे सपाय अचरित होसोत। दूसर दांय धान के देउन बलसोत के सपाय धान के सयगो चांउर बनाव गोटोक बले चांउर टूटो नाही। लछमी फेर गागेसे तेक सुनुन चटिया चिड़ई बलेसे नी गाग आमी बनाउन देउंसे, बलुन चांउर बनावसोत। हुनके नेउन बहिनमन के देयसे। असने बड़े हांडी के काना हांडी ने पानी भरूक बलसोत, तेब मेंढ़का मन काना ने बसुन साहा होसोत। असने ओंगन पोतुन कपड़ा के छुकछुका धोउक बलसोत तेब कोकोड़ा साहा होयसे। बिन डोरी चो लकड़ी आनुक बलसोत तेब सांप डोरी बनुन लकड़ी ने बांधी होयसे। लछमी असन बुता ने खिजरही होउन घर के छांडुन जायसे। लछमी के जातो ने खंडपुर ने दुकाल पड़ेसे आरू नारायन राजा मुरूसनाउ रसोत।

नारायन राजा के सपाय रानी लछमी के खोजुन आनुक बलसोत , राजा पारबती संग लछमी के खोजसोत मांतर हुन नी मिरे कायकाजे के हुल आपलो बाप घर ले लाफी बिसकरमा चो बनालो महल ने रहेसे। फिरून महादेव लघे जासोत। महादेव नारायन राजा के

बलसोत तुमी गोटके जाहा आरू सपाय ले नानी जात चो लोग के मीत बनाउन रानी के खोजा। नारायन राजा हुसने करसोत। घड़वा जात चो मनुख राजा के लछमी के खोजतो ने साहा होयसे। बलेसे के रूप बदलुन जातो होयदे, तेब रानी मिरेदे। नारायन राजा कुमहार बनुन हांडी बिकुक जासोत रानी चो घर ने नाहीं बलसोत, फेर मरार बनसोत आरू साग–भाजी बिकुक नेसोत। तेब बले घेनुक नाही बलसोत। ऐदांय पठारी चो रूप धरून चूड़ी बिकुक जासोतै रानी चो सखीमन रानी के बलसोत के मुनिस छांडलोसे मांतर आसे चूड़ी के पींदा, रानी चो हव बललो ने रानी सात परदा चो आड़ ले चूड़ी पींदतो काजे हात के बाहिर करेसे नारायन राजा लछमी चो हात के दखुन चिनसोत। नारायन राजा आरू हुनचो मीत घड़वा रूप पलटुन लछमी चो घर लघे बडरूख ने रसोत। रानी चो हाती के चरातो काजे धोरई आनेसे, हुनके बुता काजे पठाउन हाती चो सुंड़ ने बेल फर के डारून देसोत। हाती कलबडाहा होयसे। रानी पंजियार के बलायेसे, हुन हाती के दखुन सपाय गोठ के जानेसे आरू बलेसे, बड़रूख ने गोओक बड़े सिरहा आसे ऐके नंगत करूक सके। तेके बलावसोत, हुन ऐउन बनेसे के रानी मचो संगे बिहा करलेक मय ऐके उजराउन देउदें। रानी के हव बललो पाछे हाती के उजरायसे, फेर लछमी आरू नारायन राजा मिरसोत। असन कहनी के गुरूमायमन नव दिन रात ने गावसोत।

9. जातरा –: हल्बा समाज बले आपलो देव–धामी चो मान ने गोटोक दांय जातरा बनायेसे। जे परगना ने हुनचो गांव होयसे, हुन परगन चो मंडादेव चो जातरा होलो पाछे, हुन परगन चो गांवमन ने जातरा होयसे। परगना चो जातरा ने हल्बा समाज बले पूजा देउन आपलो मंडा देव चो मान करेसे। गांव ने देवी गुड़ी होलेक उथा मंडई बठेसे, मंडई बले देवी जातरा आय, ऐके हल्बा समाज मानेसे। परगना होवो के आरू कोनी गांव चो जातरा हल्बा समाज चो लोग नरेड़ धरून जासोत आरू देव के मान करसोत। आपलो कुल देव होलेक साल ने गोटोकदांय बोकड़ा पूजुन मान करसोत।

10. अकतई –: हल्बा समाज अकतई ने दूसर समाज असन धान चो बीज निकरायेसे। बीज निकरातो माने ठोवलो ठान ले धान बीज के निकरावतो होयसे। बीज निकराउन नवा माटी चो कलसा आरू आमा, चार तेंदू, भेलवां चो फर धरून नंदी जासोत। उथा कुधुर चो पीलामन खेलतो घर बनावसोत हुन ने चिड़ई जाम चो डारा खोचसोत आरू

फरमन के चेगाउन पूजा करसोत आरू माटी चो कलसा ने पानी आनसोत। घरे हुन कलसा के चार ठन ढेला ने मंडावसोत। ये चार ठन ढेला चमास चो चार महिना आत। दुय–तीन दिन होलेक ढेला के फिजलो के दखुन पानी ऐतो चो सगुन विचारसोत। चारो ढेला फिजलो ने चारो महेना बरसा माने खुबे बरसा, असने तीन ठन ढेला फिजलो ने बले तीन महेना बरसा माने खुबे बरसा। दुय ठन ढेला फिजलेक बरोबर बरसा होयसे आरू गोटोक ढेला फिजलो ने कमती बरसा नाहले खंड बरसा होयदे बलसोत। आगर बरखा होलेक सियानमन किरसानमन के माई धान बुनुक बलसोत कायकाजे के माई धान नंगत उपज देयेसे आरू खुबे दिन ने पाकेसे। कमती आरू पातर बरसा होलो ने बारंगी धान नाहलेक कमती दिन ने पाकतो बिती धान बुनुक बलसोत। असन तिहार बले बनावसोत आरू पांजी बले विचार करसोत। असन गुनी लोग आज हल्बा जात चो लोगमन।

12. माटी तिहार –: बस्तर चो गुलाय बाट माटी आया के मान देसोत, बस्तर चो लोग के माटी चो बेटा आत असन बले बलसोत। बस्तर चो माटी के आया मानसोत , इतरो मान देसोत के काहीं बले पीवतो दांय पानी के छांडुन माटी के तरपून पीवसोत। माटी के गोंडी ने तलुर मुते माने खुबे पीला बिती आया बलसोत। बलतो होयसे के माटी बस्तर चो सपाय पीला चो आया आयै हल्बा समाज बले आपन के माटी चो पुजारी मानेसे, ये लोग बले माटी आयाा के उतरो मान देसोत जितरो के दूसर जात चो लोग देसोत आरू साल ने गोटोक दांय माटी तिहार मनावसोत। माटी तिहार ने बस्तर चो लोग बीज बुनतो मूर करसोत। किरसानी बुता पूरे माटी के पांय पडुन किरसानी चो मूर करतो काजे गोहार करसोत। अकतई मानुन सपाय गांव सुतूर करून गोटोक दिन ठोवसोत आरू हुन दिन माटी तिहार मानसोत। ठोवलो दिन गांव चो सपाय घर ने रोसोई संग चिंया, गार धरून जागा रानी ने जुहसोत। जागा रानी गांव चां मंजगत गोटोक ठान होयसे जे ठान ने गांव चो देव बुता होयसे। इथा रोसोई के आनुन माटी गांयता के देसोत, सपाय के जुहाउन, हुन माटी आया चो पूजा करेसे आरू गांव भर चो किरसान मन चो आनलो बीज धान के बले पूजा करेसे। गार, चिंया चो पूजा देउन बीज धान ने छिछेसे। जागा रानी चो गोटोक ठान ने चिखल मताउ रसोत उथा धान के बुनेसे। असन करून धान बुनतो चो मूर करेसे। ऐचो पाछे रांधसोत–खावसोत। माटी तिहार चो पाछे बेड़ा बुता चो मूर करसोत।

हल्बा समाज चो हल्बी भासा आरू साहित

बस्तर चो बाहिर चो लोग चो पूरे हल्बा जात बललो ने हुनमन जानसोत के बस्तर चो लोग आत, हुसने हल्बी बललो ने जानसोत के ये बस्तर चो हल्बा जात चो भासा आय। हल्बा आदिवासी जात चो लोग जे भासा के बलसोत हुनके हल्बी बलसोत। हल्बा जात चो भासा होतो ने बले हल्बी बस्तर चो गुलाय बाट बलसोत, सपाय लोग हल्बी के समझसोत। हल्बी बोली इतरो सोजे आय के ऐके हल्बी के नी समझतो लोग बले समझुन जासोत। पहेली हल्बी के हल्बा जात चो भासा आय, असन मानते रहोत मांतर असन दखा देयेसे के हल्बी के सपाय जात चो लोग बलुक धरलासोत। हल्बी ले बस्तर ने दूसर जात चो बोली बले बनली, जसन पनकी, पारदी, लोहारी, मिरगानी, चंडारी, घड़वी आरू फारसी गोठ। हल्बी ले निकरलो बोली बले आसोत जसन भतरी, पनारी, घड़वी, तिकड़ी, चंडारी, एबे असन होली के सपाय जात चो लोग आपलो जात चो बोली के लोग भुलकला आरू हल्बी बलुक धरला। ऐबे हल्बी के कोसटा, पनका, कलार, घड़वा, गांडा, सपाय जात चो लोग बलसोत, हुनमन आपलो जात चो बोली के छांडुन हल्बी भासा के बलुक मुरियाला। दुयझन लोग जे आपलो जात चो बोली बलसोत हुन लोग जेब गोठियावसोत तेब हुनमन गोठियावतो काजे हल्बी बलसोत। गोटोकदांय असन होली के बस्तर चो राजासाही दांय हल्बी के राज भासा बलुन मान देउ रहोत। राजा चो हूकुम होवो के राजा बाट ले दिलो खबर चो हांका होवो सपाय हल्बी भासा ने देउआत। ये गोठ ले जानुक होयसे हल्बी चो बस्तर संभाग ने कितरोय माने रहे। ऐबे बले हल्बी आपलो ठान हुसने जमालीसे। दूसर बोलीमन कांहाय दखा नी देवोत, ऐचोय काजे बलसोत के हल्बी आपलो सोजे होतो ने सपाय के भायेसे।

हल्बामन के बुलतो बिता लोग मानसोत, हुनमन बस्तर ले सपाय बाट कमाउक—खाउक गेला आरू सपाय बाट ले हल्बी ने हुन बाट चो टपीमन के आनला, असन हल्बी ने सपाय बाट चो भासा चो टपी मिरेसे। हल्बी ने संसकिरीत, हिंदी, अवधि, बघेली, अरबी, फारसी, मराठी, छत्तीसगढ़ी, ओड़िया चो टपी मिसलीसे आरू हल्बी बलतो लोग ऐ सपाय टपीमन के आपलो असन बलसोतत। जसन असुर, सुख, धनु, धन, धान, धारा, अरजी, असल, नकल, इनाम, खजना, खबर। संसकिरीत ने इरखा (ईर्ष्या) लोन (लवण) जतन (यत्न) आंग (अंग) सीत (शीत) मुंड (मुण्ड)। असन सपाय टपी हल्बी ले मिरेसे, तेमे जानुक होयसे के हल्बी ने सपाय बाट चो भासा चो टपी मिरेसे। असन नोहाय के हल्बी

सपाय भासा चो मिरलो रूप आय, हल्बी ने आपलो बले टपी चो भंडार आसे, जेके बललो ने खुबे नीक लागेसे जसन हल्बी बलतो लोग बलसोत कटकटा ऐचो माने हिंदी ने होयसे घनघोर (कटकटा रान आसे – घनघोर जंगल है) बिटबिटा खुबे करिया काजे ये टपी बलसोत (खुबे बिटबिटा आसे – बहुत काला है) टंगटंगा चातर भूंय काजे नाहले सरग काजे (बलसोत टंगटंगा भाटा आय – खुला मैदान है) असन कितरोय टपी आसे जे बलतो ने नीक लागेसे।

बस्तर चो साहितकार मरनहार लाला जगदलपुरी आरू नंगत साहितकार हरिहर वैष्णव लिखलासोत के हल्बी चो बियाकरण हिंदी चो बियाकरण आय मांतर हल्बी ने हिंदी टपी चो तीन ठन ऋ, अं, अः नी होये अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, 10 टपी होयेसे ऐके हिंदी ने स्वर बलसोत। असने हिंदी ने ब्यंजन बलसोत तेचो बले 28 टपी हल्बी ने होयसे क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, व, ल, व, आरू ह, 7 ठन टपी ण, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ नी होये। असन टपी के हल्बी ने दूसर टपी के मिसाउन बलसोत ये टपीमन चो हिजे नी होये। असन बलुक सकू के हल्बी ने 10 सवर आरू 28 बयंजन होयसे। हल्बी ने ढ़ चो हिजे ड़ ले होयसे जसन गढ़ के गड़, दाढ़ी के दाड़ी भैंरमगढ़ के भयरमगड़ बलुक होयसे। ष, श, के बले हिजे स करसोत जसन शंकर के संकर, शक्कर के सकर, ऋषि के रिसी बलतो होयसे। हल्बी ने क्ष चो हिजे छ करसोत जसन लक्ष्मण के लछमन, लक्ष्मी के लछमी, लक्षण के लछन। असने ज्ञ चो बले हिजे दुय टपी के मिसाउन करसोत जसन ज्ञान के गियान ज्ञानी के गियानी। गोटोक आरू गोठ हल्बी के बिचितर बनायेसे हुन गोठियातो ने सपाय काजे बायले गढ़न चो टपी (स्त्री लिंग) बलसोत, जसन हिंदी ने पानी गिरा के पानी गिरली नाहले पानी घसरली बलसोत। बाघ खा गया के बाघ खादली बलतो होयेसे। सूर्योदय हुआ के बेर निकरली बलसोत। असन गोठ गोटकी होलो ने हुन बायले गढ़न चो होयसे मांतर दुय झन आरू आगर काजे होलेक असन फरक नी होये जसन हिंदी ने गोटोक काजे मय गेले, तुय गेलिस, हुन गेली, ऐके खुबे लोग काजे बलतो ने आमी गेलूं, तुमी गेलास, हुनमन गेला बलतो होयेसे। हल्बी ने आधा टपी नी बलोत मांतर पूरे चो विदवान मन हल्बा आरू बस्तर के आधा टपी जोडून लिखलासोत।

बस्तर चो ठान–ठान ने हल्बी बलतो ने फरक होयसे, ओड़िसा आरू बस्तर चो संद ने हल्बी भासा ओड़िया संग मिसुन गोटोक बोली बनावली, ऐके भतरी बलसोत, ऐके साहितकार मन हल्बी ले निकरलो बोली बलसोत मांतर कोनी विदवानमन असन नी मानत हुनमन चो बलतो आय के भतरी चो आपलो रूप आसे। जगदलपुर लघे बलतो हल्बी ने भतरी चो टपी मिरेसे आरू गोठियावतो बले इतरी भतरी असन होयसे मांतर हुनमन बले अबगो हल्बी

बलसोत , असन हल्बी के समझुक होयसे। असने छत्तीसगढ़ आरू बस्तर चो संद ने बलतो हल्बी ने छत्तीसगढ़ी मिसुन गेली आरू गोटोक नवा बोली बनली, हुनके बस्तरी बलला। बस्तरी नाव इथा चो विदवानमन बलला, बस्तरी अबगो हल्बी नोहाय ना अबगो छत्तीसगढ़ी आय। हल्बी बलतो लोग बस्तरी बललो ने समझसोत मांतर बस्तरी बललो ने छत्तीसगढ़ी बलतो लोग के लागेसे के हुन बस्तरिया भासा बलेसे। बस्तर चो कांकेर, केसकाल, भानुप्रतापुर, अंतागढ़ ने हल्बी ने छत्तीसगढ़ी मिसुन गेलीसे, नारायनपुर ने हल्बी ने गोंडी बले दखुक मिरेसे। हल्बी के महाराष्ट्र ने बले बलसोत इथा हल्बी के मराठी ले निकरलो बोली मानसोत आरू बलसोत मांतर हल्बी आपलो रूप ने इथा बले आसे। बस्तर चो असन गांवमन जे दूसर राज चो संद ने नी मिरे असन ठान ने अबगो हल्बी बलसोत। कोंडगांव, छोटेडोंगर, चितरकोट, बीजापुर बाटे अबगो हल्बी बलसोत।

बस्तर ने बले ठान–ठान ने हल्बी चो दूसर–दूसर रूप दखुक मिरेसे, गोटोक ठान ने बलतो टपी के दूसर ठान ने दूसर बलसोत। जसन जगदलपुर, कोंडगांव बाटे हिंदी ने हम, हमको हमारा, के आमी, आमके आमचो बलसोत मांतर नारायणपुर बाटे ऐके हामी, हमके, हमचो बलसोत असने हिंदी चो उन्हें, उनको, वे, के जगदलपूर कोंडगांव बाटे हुन, हुनके, हुनमन बलसोत मांतर नारायणपुर बाटे तेके, तेमन, तेमनके बलसोत। असने हिंदी चो इधर, उधर काजे कोनी–कोनी बाटे इसु, हेंव बलसोत आरू कोनी–कोनी बाटे ऐ बाट, हुन बाट बलसोत, बीजापुर बाटे दीया चो बाती के तसाली बलसोत मांतर दूसर बाटे ऐके बाती चे बलुआत। असन नानी–नानी फरक दखा दयसे मांतर हल्बी बलतो ने फरक नी होये। मरनहार लाला जगदलपुरी बललासोत के हल्बी ने हिंदी टपी काजे टपी नीहाय हुनचो काजे साहित लिखतो ने अड़चन होयसे मांतर असन नोहाय के लिखुक नी होये। हल्बी ने बले लोग लिखा पढ़ी करलासोत। लाला जगदलपुरी बले इतरो साहित लिखला के सपाय हल्बी चो थाती आत।

हल्बी ने लिखलो साहित – साहित हुनके बलसोत जेमे मनुख आपलो मन चो विचार के बिगरायेसे। मनचो विचार के सांगतो काजे जे उवाट करेसे हुन साहित आय। जसन लिखुन, सांगुन, छापा बनाउन, मूरत गढ़ुन, गीद गाउन, नाचुन, कहनी–किसा सांगतो, सपाय के साहित बलतो होयसे। विदवानमन बललासोत के साहित दुय गढ़न चो होयसे, गोटोक के मुखागर साहित (मौखिक साहित्य) आरू दूसर के लिखलो साहित (लिखित साहित्य) बलसोत। मुखागर साहित के लोक साहित बले बलसोत कायकाजे के लोक साहित गांवकारीमन चो विचार होयसे तेक हुनमन गावसोत, कहनी ने सांगसोत, धंधा

बलुन बिगरावसोत, ये सपाय मुखागर होयसे। सांगतो लोग गोटकी होसोत मांतर सुनतो लोग आगर होसोत। असन गीद, कहनी, धंधा गोटोक पीढ़ी ले दूसर पीढ़ी जायसे आरू जुग–जुग ले सांगते रसोत। बस्तर चो हल्बी भासा ने मुखागर साहित खुबे आसे। गीत–गोविनद के तीज–तिहार ने गावतो बस्तर चो रूसुम आय, हुसने गीद गाउन मसागत चो थकलो के भुलकसोत।

बस्तर चो हल्बी भासा ने पुरान चो कहनीमन के आपलो गढ़न ले गावतो गीद 95 दिन गावतो बिती "बाली जगार", 1 महेना ले गातो "आठे जगार", 1 महेना ले गातो "लछमी जगार" आरू 8 दिन गातो "तीजा जगार" हल्बी चो मान आय। हल्बी चो गीद "लेजा", "मारीरसोना", "खेल गीद", "तारा गीद", लोगमन के खुबे भायसे। हल्बी ने कहनी किसा चो भंडार आसे। गोठ–गोठ ने धंधा पाड़सोत। बलतो चो माने आय के हल्बी ने मुखागर साहित चो खुबे भंडार आसे। बलतो गोठ आय के हल्बी चो लोग साहित मुखागर साहित ने मिसलो आसे मांतर असन नोहाय के हल्बी चो लिखित साहित नीहाय। बस्तर ने राजासाही दांय ले बस्तर ने साहित लिखतो मुरियाउ रहे। इतरोदांय लिखलो के उजागरी करतो बितामन आगर नी रहोत, तेबले बले हुदलदांय चो साहितकार मन खुबे लिखला आरू आपलो पयसा ने आपलो लिखलो के उजागर कराला।

बस्तर ने सन् 1928 ई. ने ठाकुर पुरन सिंह चो पहेली किताब "हल्बी भाषा बोध" उजागर होली। गोटोक अंगरेज विदवान के. एम. वेट्टी बले ठाकुर पुरन सिंह चो साहा होलो ने गोटोक किताब "ए हल्बी ग्रामर" लिखला। हल्बी साहित ने ठाकुर पुरण सिंह के पहेली हल्बी गीद लिखतो बिता माना जायेसे। पं. देवीरत्न अवस्थी "करिल" चो कबेय नी भुलकतो लिखलो गीद "बासतानारिन बाई इली, बासतानारिन बाई" सपाय लोग के मुखागर सुरता रहे। पं. देवी रत्न अवस्थी अंगरेजमन चो बायसा काजे बले गीद लिखला "बस्तर चो डेबरी धुरवा चेघलो फांसी लिखु रहोत। हुदलदांय चो साहितकार मन आपलो गीद के उजागर कराउन बस्तर दसराहा ने बांटते रहोत। पं. गणेश प्रसाद सांमत चो "दुर्गा बंदना" सपाय लोग के मुखागर रहे। रघुनाथ महापात्र चो "बिलई उपरे मुसा" चो हजारे कागद बाटला। पुरन सिंह ठाकुर चो "सुना हो गंवरिया मंद के छांडा तुमी" के सरकार उजागर करून बाटला। इतरोदांय चो लिखतो लोग पं. गणेश प्रसाद पानीग्राही आना आरू हांसी किताब "भंडार सारिया चो ठाव" आरू "किरसान मंडई चो मरम" लिखला। ऐमन चो लिखलो "लछमन गोटोक बाघ के मारेसे" पीलामन चो कहनी बले उजागर होली। ऐमन चो "व्यवहारिक हल्बी शब्दकोष" आरू "हल्बी व्याकरण" बले उजागर होली। इदलोदांय काशीनाथ सामंत चो "आया मचो दंतेसरी" गीद आरू पं. गणेश प्रसाद सामंत बले खुबे नीक हल्बी ने लिखला।

हल्बी चो लोक साहित जे मुखागर रहे हुन आपने आपलो बाट तपासली, ऐके बाट दखाला बस्तर साहित चो महामुनि मरनहार लाला जगदलपुरी, ऐमन चो लिखतो ने बस्तर चो मुखागर साहित ले लिखतो साहित चो भंडार भरते गेली। लाला जगदलपुरी बस्तर चो हल्बी चो मुखागर साहित के लिखुन हुनके लिखित साहित चो रूप दिला आरू जीवत रतो भर हल्बी साहित चो सेवा करते रला। ऐबेय देव लोक होला मांतर हल्बी काजे हुनमन चो बुता के हल्बी साहित केबेय नी भूलकेदे, हुनमन चो लिखलो किताब हल्बी साहित ने अमर आसे। ऐबे चो लिखतो लोग के हुन किताबमन बाट दखावसोत। लाला जगदलपुरी चो अमर किताबमन ने "लोक कथा संग्रह", "हल्बी लोक कथाएँ", "बस्तर की मौखिक कथाएँ", "पंचतंत्र का हल्बी अनुवाद", "प्रेमचन्द चो बारा कहनी", "बुआ चो चिठ्ठीमन" आरू हल्बी ने "राम कथा" ये सपाय किताब लाला जी चो लिखलो पूरे रतो किताब मन आत। ऐचो पाछे बले लाला जी "कहावत और मुहावरे आरू "बस्तर चो लोकोक्तियाँ" बले लिखलासोत। लाला जी चो देश भर ले निकरतो बिती पतरिकामन ने गीत, कहनी, कविता हिंदी अनुवाद संग उजागर होली। लाला जी हल्बी चो नाव के देस भर ने बिगरावला।

हल्बी चो लिखित साहित ने नारायणपुर चो विदवान साहितकार ठाकुर रामसिंह चो करलो बुता के भुलकुक नी होये। ठाकुर पुरन सिंह चो बेटा आपलो बाप चो पांय चिनहा ने हिंडुन हल्बी साहित के परिपुरन करला आरू बस्तर चो तुलसीदास नाव धराला। राम सिंह ठाकुर राम चरित मानस के हल्बी ने गावतो गीद ने "हल्बी रामायण" लिखला। ये बुता इतरो बड़े आय के ऐके मानस चतुर्दशी समारोह ले उजागर करला आरू उथा बलला के सपाय लोग काजे राम चरित मानस लिखलो आसे मांतर हल्बी रामायण गांवकारीमन काजे लिखलो आसे। राम सिंह ठाकुर श्रीमद् भगवत गीता चो बले हल्बी ने अनुवाद करलासोत। रामसिंह ठाकुर ऐबे 87 बरख चो होलासोत आरू आपलो बेटा बाहो संग हरिक ले जीवसोत।

बस्तर ने साहित चो सपाय ले बड़े नाव आरू हल्बी चो मुखागर साहित के आपलो टपी ने गुथंतो लोग श्री हरिहर वैष्णव कोंडागांव चो हल्बी काजे करलो बुता साहित चो थाती आय। हल्बी चो भुलकलो पुरान असन गावतो बिती महा गीदमन के आपलो टपी ने गुंथला आरू हल्बी चो मुखागर गीद के लिखुन, हिंदी ने उलटाला, इतरोय नाहीं हुनचो अंगरेती रूप बले बनाला। 95 दिन ले गातो बिती महापुरान "बाली जगार" होवो के 1–1 महिना ले गातो पुरान "लछमी जगार" आरू "आठे जगार" होवो, 8–8 ले गावतो पुरान "तीजा जगार" (धनकुल) के लिखित साहित चो रूप दिला आरू आपन बले आरू ये पुरानमन के जेके गांव चो लोग भुलकते रहोत हुनके अमर बनाला। इतरोय नाही हरिहर वैष्णव जी "बस्तर चो लोक कथाएँ", "बस्तर चो गीत कथाएँ", "राजा आरू बाल कन्या" असन किताब बले लिखला। बस्तर ने हल्बी साहित चो ये बेरा के आमी सोन महा बेरा बलुसे। बस्तर चो हल्बी साहित हरिहर वैष्णव चो करलो बुता के केबेय भुलकुक नी सकेदे। ऐबेय बले हल्बी चो लिखित साहित काजे सरकारी नवकरी के छांडुन आपलो सपाय जीवना के साहित काजे सोपलासोत आरू लिखतो बुता करसोत।

हल्बी चो उजागर लिखित साहित ने गोटोक नाव रूद्र नारायण पानी ग्राही चो बले आसे आरू हल्बी साहित हुनचो नाव के बले मान करेसे हुनचो लिखलो "ढ़ेला मारू" आरू "गदया" हल्बी चो साहित चो भंडार के भरसोत। ऐबेय बले ओगाय रहुन हल्बी साहित चो सेवा करसोत। असने सोनसिंह पुजारी बीजापुर चो लिखलो साहित अकादमी नई दिल्ली ले "अंधार चो देस" उजागर होलीसे, कोंडागांव चो बेटी आरू रायपुर ससुराल ने रतो बिती शकुनतला तरार चो "टेपारी" बले हल्बी साहित चो भंडार चो सोभा आय। ये बले हल्बी साहित चो बड़े नाव आत। असने हल्बी चो बयाकरन आरू लिपी बनालो लोग विक्रम सोनी बले हल्बी साहित काजे आपलो जीवना के खपावसोत। ऐमन चो लिखलो कहनी संग्रह आरू हल्बी साहित चो बड़े नाव सुभाष पाण्डेय चो किताब "हल्बी दोहा संग्रह" किताब उजागर होतो तियारी ने आसे, ऐ लोग बले हल्बी साहित काजे बुता करसोत। नरेन्द्र पाढ़ी बले गोटोक किताब लिखसोत मांतर हुनके उजागर होतो ने बेरा आसे। मचो लिखलो आपनमन चो हात ने आसे।

इथा बस्तर ने उजागर होतो हपता–हपता पतरिका "अंगारा" आरू समाचार पतर "दण्डकारण्य समाचार पत्र" चो नाव घरतो नीक होयदे। जितरोदांय इथा चो हल्बी साहितकार मन लघे आपलो लिखलो के उजागर करतो चो जाक नी रहे हुदलोदांय ये पतरिकामन आपलो पतर ने हुनमन चो लिखलो के उजागर करून अमर बनाला। इथा हल्बी ने पहेली पतरिका "घूमर" चो नाव धरतो नीक होयदे, जे हलबी ने उजागर होली। ऐचो संपादक लाला जगदलपुरी रहोत। ऐचो पाछे कोंडागांव ले हरिहर वैष्णव चो संपादन ने "ककसाड" पतरिका बले निकरली आरू हल्बी लिखतो लोग के चिनहा–बूंदा दिली। हल्बी चो अबगो साहित पतरिका "चिड़खा" हल्बी साहित काजे चिनहारी आय ऐके रूद्र नारायण पानीग्राही, नरेन्द्र पाढ़ी आरू विक्रम सोनी निकरावसोत, गोटोक आरू निकरावतो उवाट करसोत ये बले ऐबेय बेरा चो थाती आय। ऐबेय कोंडागांव ले "चेलिक" पतरिका समपादक राजा राम त्रिपाठी निकरेसे जे हल्बी चो लिखित साहित के हिंडायेसे। इथा "लोकाक्षर" संपादक नन्द किशोर तिवारी चो नाव धरतो नीक होयदे जे बिलासपुर ले "लोकाक्षर" ने सपाय हल्बी साहितकार चो लिखलो के हल्बी, हिंदी आरू छत्तीसगढ़ी ने उजागर करून बिगरावला। स्व जान वेलेजली चिराग आरू यशवंत गौतम चो हल्बी कविता दिल्ली चो "कादम्बरी" ने हिंदी संगे उजागर होली आरू सोनसिंह पुजारी चो लिखलो गीद "परिन्दे" पतरिका नई दिल्ली ने हरिहर वैष्णव चो लेख संग उजागर होली।

हल्बी ने पीलामन काजे गियान चो कहनी बले लिखलो आसे, असन किताब के पीलामन छापा दखुन मन ले पढ़सोत। पहेली असन किताब के भोपाल चो उजागर करतो लोग आत "न्यु संजय प्रकाशन भोपाल म.प्र". ये किताब आत "चटियामन चो संवसार", "जादू चो घोड़ा", "अलाउदीन चो जादू बिती चिमनी", "माय बाप चो भगत सरवन कुमार", "बांवसी बिता मूसा", "अली बाबा आरू चालिस चोर", इतरो किताब चो हलबी बनाला रूद्र नारायण पानीग्राही। विक्रम सोनी "सिंदबाद चो साहसिक बुलतोर" कहनी चो दुय भाग के हलबी ने लिखला। असने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली, जगदलपुर ने तीन दिन चो बसका करून पीलामन चो कहनी के हलबी ने लिखाउन उजागर कराला, ये किताब आत "परिमन चो खेल" रूद्र नारायण पानीग्राही, "बाहरी बाहरतो बिता राजा" नरेन्द्र पाढ़ी, "राजा जे बाटी खेलते रहे" आरू "जोन गनती भुलकलो" विक्रम सोनी, "मेंडका आरू सांप" यशवंत गौतम, "रान चो मितान" शिव कुमार पाण्डेय "लेंगड़ी चो पूछा–पछारा" सुभाष पाण्डेय, "नवठन नानी–नानी चिड़ई" शोभाराम नाग, "रूपा हाती" नरेन्द्र मंडल, "काय होली" वर्षा कुंवर। सपाय किताब उजागर होलो आसे आरू हल्बी साहित चो भंडार आय। गोटोकदांय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली फेर हल्बी साहित कारमन ले कहनी मांगला आरू कोंडागांव ने छापा बनाउन तेमन चो हल्बी ले हिंदी, गोंडी, भतरी ने लिखाउन उजागर कराला। ए किताब आत "टेंडका आरू मेंडका", डा. रूपेन्द्र कवि, "बाल मितर भंइस" सोनिका कवि, "अमुस तिहार" पिताम्बरदास वैष्णव, "सरगी रूख" यशवंत गौतम, "चेंदरू आरू बाघ पीला" शिव कुमार पाण्डेय, "बस्तर चो तिहार" महेश पाण्डेय।

हल्बी चो लिखित साहित ने खुबे बुता होलीसे मांतर लोग जे हल्बी ले मया करसोत हुनमन चो साहित ले आगर आपलो पेट काजे बुता करते दिन जायेसे। हल्बी साहित चो उजागर देस चो कटाव ने होलीसे, तेबेय बलतो होयसे के हल्बी चो चिनहारी देस–परदेस ने आसे। हल्बी ने बरमेश साहित लिखतो होयसे। ऐबेय बले "हरिहर वैष्णव", "सोन सिंह पुजारी", "यशवंत गौतम", "रूद्र नारायण पानीग्राही", "विक्रम सोनी", "अर्जुन नाग", "शकुनतला तरार", "सुभाष पाण्डेय", "शिव कुमार पाण्डेय", "महेश पाण्डेय", "जोगेन्द्र महापात्र जोगी", "घनश्याम नाग", "दादा जोकाल (सिकन्दर खान), "बलबीर कच्छ", "नारायण मरकाम", "गिरजा नन्द सिंह ठाकुर", "कुशल पानीग्राही", "तुलसी राम पानीग्राही", "बाल किशोर पाण्डेय" जसन हल्बी ने लिखतो लोग हल्बी ने लिखसोत आरू बस्तर माटी चो करजा के छूटसोत।

शिव कुमार पाण्डेय

मरनहार बाबा सत्यनारायण पाण्डेय आया मरनहार यशोदा देवी पाण्डेय चो घरे 20 अप्रेल 1959 ने नारायणपुर ने जनम। पहली ले इग्यारवीं चो पढ़ई नारायणपुर ने आरू, बी.ए. आरू वकील पढ़ई जगदलपुर ने होली ।साहित पढ़तो लिखतो चो मन खुबे रहे ।

पीलामन चो किताब "रानचो मितान" आरू "चेन्दरू आरू बाग पीला (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली ले छपली

पहली छपलो किताब "अबुझमाड़ : इतिहास व संस्कृति"
(जिला प्रशासन नारायणपुर, छ.ग.)
"बस्तर के लोकोत्सव" (यश पब्लिकेशन नई दिल्ली ले),

हल्बी चो किताब तुमचो हात ने आसे ।

Email- shivkumarpandey69@gmail.com
पता- शिव कुमार पाण्डेय मेन रोड नारायणपुर
मोबाईल नं.9425260997

Noble Offset